





\* नम श्रीपूज्यपादाय  
सनातनजैनग्रंथमाला ।

१२

काव्यतीर्थ व्याकरणशास्त्रि-श्रीश्रीलालजैनकृत

संस्कृतप्रवेशिनी

प्रथमभाग ।

जिसको

गांधीहरिभाईदेवकरण एंड सन्स द्वारा सरक्षित

भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्थाके महामंत्री

श्रीपन्नालाल बाकलीवालने

आकलजनिवासी स्वर्गीय श्रेष्ठिवर्य-

नाथारंगजी गांधीके स्मरणार्थ

कलिकाताके

९, विश्वकोप लेन यागघाजार विश्वकोप प्रेसमें,  
धीराखालचंद्र मित्रके प्रयत्नसे छपाकर प्रकाशित किया ।

वीर नियोग सबद २४४२

प्रथमावृत्ति

ईशवीय सन् १९१६

{ मूल्य १) रुपया ।

## वक्तव्य ।

महाशय ।

इस पुस्तकके निर्णय जानमें दो प्रधान कारण है एक तो याचकन अपेजी स्त्रुनोंमें जो मन्त्रुत सिपानिवानो पुस्तकके पटारें आतो है उनमें अधिक परिचय करीपर भी फल काम होता है विद्यार्थी रात्रि दिव रूप रटते २ एक जाती है पर रूपका ज्ञान नहीं होता यदि किमो अपरिवित शब्दके रूप बनाने जानें है तो पहिने कठ किये हुये शब्दके रूप बनाने है और फिर उस शब्दके । इस तरह एकता अनुवाद करनेमें अधिक समय लगता है और दूसरे कठ किये हुये शब्दके रूपमें भ्रम होनेसे उसके समान अर्थ शब्दके रूपमें भी भ्रान्ति जो जाती है इत्यादि कठिनाइयोंके वशीभूत हो हमारे नय युवक मन्त्रुतको अतिक्लिष्ट और अगम्य समझकर पटना छोड़ बैठते है जिससे कि इस पवित्र विद्याका प्रतिदिन ज्ञान होता बना जाता है । दूसरा कारण यह है कि हमारे पुरातन पद्धतिसे पठने जाने महाशय ध्याकरणादि विषयोंमें तो अति निष्ठात हो जाते है परतु उनको अनुवाद करना विलकुल नहीं आता यदि कभी मन्त्रुतमें यार्तान्पादि करनेका काम पड जाता है तो दो चार शब्द भी नहीं बोल सके । जिससे कि परोक्षाओंमें अनुशीर्ण हो लक्षाह होन हो जाते है और पटना छोड़ बैठते है । वस इन्हीं दो कारणोंके वशीभूत हो हम इस पुस्तकके निर्माण और प्रकाशनमें बाध्य हुये हैं । इस पुस्तकके दो भाग है जिसमेंसे प्रथम भागमें शब्दोंके प्रथमा, द्वितीया तथा सवोधन विभक्तिके, धातुओंमें भ्वादि और तुदादि गणीय धातुओंके वर्तमान, भूत भविष्यत और आप्ता अर्थके रूप बतलाये गये है अन्य पुस्तकोंमें इट्, अनिट्,

धातु प्रत्यय आदि सुगम रीतिसे नहीं बतलाये हैं जिससे कि लिट्, लुङ्, आदि लकारोंके रूप समझमें नहीं आते सो इसमें वह कठनाई नहीं है उसके जाननेके लिये धातुमें एक अनुबन्ध लगा दिया है जिससे विद्यार्थीको पढ़नेमें अति सुगमता होती है छोटेसे लेकर बड़े बूटे सब लोग इसको पढ़ सकते हैं। दूसरे भागमें शेष कुल विभक्ती और धातुओंके रूप प्रयोग सहित बतलाये गये हैं। इसलिये इन दोनों भागोंके पढ़ लेनेसे संस्कृतमें अनुवाद, पत्र, लेख आदिका लिखना, वार्तालापका करना, संस्कृत अर्थोंका समझना भली भाँति आसकता है।

कलकत्ता।  
२५ माघ सन् १९१६।

}

वशवट  
श्रीश्रीनाथ जैन।

## विद्यार्थियोंकी सूचना

पढ़ते समय पाठके ऊपर दिये गये इंडिंग ( शिरनाम ) के अनुसार शब्दोंके रूपोंको विचारना चाहिये कि इसमें द्विदोसे क्या विशेषता है। अर्थात् जैसे कि पहिला पाठ पढ़ना है उसके ऊपर इंडिंगमें ' भ्वादि और तुदादि गण्य धातुओंके वर्तमान कालके रूप और उनका पुलिग अकारांत शब्दोंके कर्ता तथा कर्मके रूपोंके साथ प्रयोग" ऐसा लिखा है तो समझना चाहिये कि—इस पाठमें जिन शब्दोंके आखिरमें 'अ' है उस शब्दके कर्ता तथा कर्मके रूप बतलाये हैं इसलिये जिसके ऊपर कर्ता लिखा है वह कर्त्ताका और जिसके

ऊपर कर्म लिखा है यह कर्मका रूप है और जिसके बाईं तरफ १ लिखा है वहासे चागे एक वचन २ लिखा है वहासे चागे द्विवचन और ३ लिखा है वहासे चागे बहुवचनके कर्ता, कर्म और क्रियाके रूप समझाये गये हैं। संस्कृतमें उदाहरण "कैन जिनं पश्चति" है और हिंदीमें "कैन जिनको पूजता है" ऐसा है। हिंदीसे संस्कृतमें कौन इतनी ही विशेषता है कि कर्ताके एकवचनमें विभक्ति (:) और कर्मके एकवचनमें अनुस्वार ( ) लग गया है क्रियाका रूप विलकुल दूसरा है इसी तरह जितने उदाहरण दिये हैं उन सबमें और अपने मनसे विचारे हुये अन्यशब्दोंमें भी यही बात घटा लेनी चाहिये। इस प्रकार करनेसे शब्दोंके रूप भली भाँति ध्यानमें आजायेंगे और कालांतरमें भी विस्मृत न होंगे जब इस तरह रूप पके हो जाय तब पाठमें दिये गये अशुद्ध शुद्ध भागको विचारे। वादको "नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ" के नीचे लिखे हुये शब्दोंमें यदि कर्ताका रूप है तो कर्म, क्रिया, कर्मका रूप है तो कर्ता, क्रिया और क्रियाका रूप है तो कर्ता कर्म किसी न किसी शब्दका जिसका कि अर्थ ठीक बैठता हो बना २ कर लिखे और फिर संस्कृत हिंदीका अनुवाद करना प्रारंभ करे। अनुवादमें कर्ताके अनुसार क्रियाका विशेष ध्यान रखना चाहिये अर्थात् कर्ता एक वचन हो तो क्रिया भी एक वचनकी, कर्ता द्विवचन हो तो क्रिया भी द्विवचनकी और कर्ता बहुवचनका हो तो क्रिया भी बहु वचनको रखनी चाहिये। कर्मके लिये कोई नियम नहीं है। कर्म चाहे एक वचन हो चाहे द्विवचन हो और चाहे बहुवचन हो उसके कारणसे कर्ता अथवा क्रियामें कोई विकार नहीं होगा।



नम श्रोपूज्यपादाय ।

सनातनजैनग्रंथमाला ।

१२

# संस्कृत-प्रवेशिनी ।

( प्रथमभाग )

स गलापरण ।

नत्वाऽखिलञ्च खिलभूयमात्  
खुलाखलानामखिलक्रियाणां ।  
रक्षामि रक्ष्यान्नविवोधनाय  
प्रवेशिनीं संस्कृतसंस्कृतस्य ॥१॥

( भ्वादि और तुदादिगणकी धातुओंके वर्तमानकालके रूप  
और उनका अकारांत पुलिग शब्दोंके कर्ता  
तथा कर्मके रूपके साथ प्रयोग )

( सूचना—विद्यार्थियोंको चाहिये कि शब्दोंके कर्ता कर्मके रूपोंकी भली भाँति  
जानने रखें तथा जितने शब्द उनके समान मिले उनको उसीतरह कर्ता और कर्म में बना  
बना कर प्रयोग करें । तन्पश्चात् रूपोंके दृढ़ हो जानेपर पाठमें दिष्टरूपी अक्षरमालाकी पढ़-  
करे । इसतरह करनेसे रूपोंके दृढ़ करनेको आवश्यकता न होगी । )

## प्रथम पाठ ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता (१)	कर्म (१)	क्रिया (१)
१। जैन	जिन	अर्चति ।	ज नो	जिन भगवानको	पूजता है ।
बालक	बंध	पठति ।	बा लक	ब ब	पढ़ता है ।
छात्र	ग्रथ	निखति ।	विद्यार्थी	ब र	लिखता है ।
जन	अर्थ	इच्छति ।	मनुष्य	धन	चाहता है ।
घत्रिय	ग्राम	रचति ।	घत्रिय	ग्रामको	रचाकरता है ।
दहन	हृद्य	दहति ।	अग्नि	हृद्य	जलाती है ।
शिष्य	आश्रम	गच्छति ।	शिष्य	आश्रमको	जाता है ।
अग्नि	घास	खादति ।	घोडा	घास	खाता है ।
पाठक	छात्र	पृच्छति ।	अध्यापक	विद्यार्थीको	पूछता है ।



२। पुरुषो	जिनो	अर्चत ।	दो पुरुष	दो जिन भगवानको	पूजते हैं ।
बालकौ	बंधो	पठत ।	दो बालक	दो बंध	पढ़ते हैं ।
छात्री	ग्रथी	निखत ।	दो विद्यार्थी	दो रच	लिखते हैं ।
बालो	मोदको	इच्छत ।	दो बालक	दो मजद	चाहते हैं ।
घत्रियी	ग्रामो	रचत ।	दो घत्रिय	दो ग्रामको	रचा करते हैं ।
अनलो	हृद्यो	दहत ।	दो अग्नि	दो हृद्योको	जलाती हैं ।
शिष्यो	आश्रमो	गच्छत ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमोको	जाते हैं ।
सिंहो	मानुषो	खादत ।	दो सिंह	दो मनुष्योको	खाते हैं ।
पाठकौ	प्रश्नो	पृच्छत ।	दो अध्यापक	दो प्रश्न	पूछते हैं ।

१। जो क्रियाको करे उसे कर्ता कहते हैं । २। कर्ता अपनी क्रियाही जिसको करे उसे कर्म कहते हैं । ३। कर्ताके इत्थनवत्तमानादिप व्यापारको क्रिया कहते हैं । अथवा वाक्यके अर्थको पूरा कर दे जो क्रिया है ।

३ । बालका	ग्रथान्	पठति ।	अनेक बालक	अनेक ग्रथ	पठते हैं ।
छात्रा	ग्रथान्	लिखति ।	अनेक विद्यार्थी	अनेक ग्रथ	लिखते हैं ।
बाला	मोदकान्	इच्छति ।	अनेक बालक	अनेक मोदक	चाहते हैं ।
चत्रिया	ग्रामान्	रक्षति ।	अनेक चविध	अनेक ग्रामोंकी रक्षा	करते हैं ।
पाषका	वृक्षान्	दहति ।	अनेक वृक्ष	अनेक वृक्षोंको	जलाती है ।
सज्जना	आश्रमान्	गच्छति ।	अनेक सज्जन	अनेक आश्रमोंको	जाते हैं ।
सिंहा	मानुषान्	खादति ।	अनेक सिंह	अनेक मनुष्योंको	खाने हैं ।
पाठका	ग्रन्थान्	पृच्छति ।	अनेक अध्यापक	अनेक ग्रन्थ	पूछते हैं ।

### धात्वर्थ(१)

धातु	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पठना ( पठ् + अ + तिश् )	पठति	पठत	पठन्ति ।
लिख	लिखना ( लिख् + अ + ति )	लिखति	लिखत	लिखन्ति ।
इष्टु	चाहना ( इच्छ् + अ + ति )	इच्छति	इच्छत	इच्छन्ति ।
रक्ष	रक्षाकरना ( रक्ष् + अ + ति )	रक्षति	रक्षत	रक्षन्ति ।
दहौ	जलाना ( दह् + अ + ति )	दहति	दहत	दहन्ति ।
गच्छ्	जाना ( गच्छ् + अ + ति )	गच्छति	गच्छत	गच्छन्ति ।
खाद्	खाना ( खाद् + अ + ति )	खादति	खादत	खादन्ति ।
पृच्छो	पूछना ( पृच्छ् + अ + ति )	पृच्छति	पृच्छत	पृच्छन्ति ।

१ । धातु जिस तरहकी लिखी है वैसीही यान् करना चाहिये । २ । धातु हीन प्रकारकी होती है परस्मैपत्नी, आत्मनेपत्नी और लभ्यपत्नी । जिस धातुमें ज सदा हो वह लभ्यपत्नी, जिसमें ऐ अथवा क सदा हो वह आत्मनेपत्नी और जिसमें अ ए क् ये न कने इति एव परस्मैपत्नी है । ३ । परस्मैपत्नी धातुके अन्त पुनरुक्ते एकवचनमें ति, द्विवचनमें त और बहुवचनमें ंति प्रत्यय लगता है ।



## प्रथम पाठ ।

कर्ता	काम	क्रिया	कर्ता (१)	काम (२)	क्रिया (३)
१। जैन	जिन	अर्चति ।	जैनो	जिन भगवान्को	पूजता है ।
बालक	ग्रथ	पठति ।	बालक	ग्रथ	पढ़ता है ।
छात्र	ग्रथ	निखति ।	विद्यार्थी	ग्रथ	लिखता है ।
जन	अर्थ	इच्छति ।	मनुष्य	धन	चाहता है ।
अत्रिय	धाम	रचति ।	अत्रिय	धामकी	रचाकरता है ।
दहन	हृद्य	दहति ।	अग्नि	हृद्य	जलाती है ।
शिष्य	आश्रम	गच्छति ।	शिष्य	आश्रमकी	जाता है ।
अस्र	घास	खादति ।	घोड़ा	घास	खाता है ।
पाठक	छात्र	पृच्छति ।	अध्यापक	विद्यार्थीकी	पूछता है ।

२। पुरुषो	जिनो	अर्चत ।	दो पुरुष	दो जिन भगवान्को	पूजते हैं ।
बालकौ	ग्रथौ	पठत ।	दो बालक	दो ग्रथ	पढ़ते हैं ।
छात्रौ	ग्रथौ	निखत ।	दो विद्यार्थी	दो ग्रथ	लिखते हैं ।
बालौ	मोदकौ	इच्छत ।	दो बालक	दो लज्ज	चाहते हैं ।
अत्रियौ	धामौ	रचत ।	दो अत्रिय	दो धामकी	रचा करते हैं ।
अनलौ	हृद्यौ	दहत ।	दो अग्नि	दो हृद्यकी	जलाती हैं ।
शिष्यौ	आश्रमौ	गच्छत ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमकी	जाते हैं ।
सिंहौ	मानुषो	खादत ।	दो सिंह	दो मनुष्यकी	खाते हैं ।
पाठकौ	ग्रथौ	पृच्छत ।	दो अध्यापक	दो ग्रथ	पूछते हैं ।

१। जो क्रियाकी कर छरी कर्ता कहने है । २। कर्ता अपनी क्रियासे जिसको करे छरी काम कहते है । ३। कर्ताके समनचलनादिब्य व्यापारको क्रिया कहने है । अथवा वाक्यके अर्थको पूछ कर दे ही क्रिया है ।

३ । बालका	अथान्	पठति ।	अनेक बालक	अनेक यद्य	पठते है ।
छात्रा'	अथान्	लिखति ।	अनेक विद्यार्थी	अनेक यद्य	लिखते है ।
बाला	मोदकान्	इच्छति ।	अनेक बालक	अनेक मोदक	चाहते है ।
क्षत्रिया.	ग्रामान्	रक्षति ।	अनेक क्षत्रिय	अनेक ग्रामोंकी रक्षा	करते है ।
पावका	वृक्षान्	दहति ।	अनेक अग्नि	अनेक वृक्षोंको	जलाती है ।
सज्जना	आश्रमान्	गच्छति ।	अनेक सज्ज	अनेक आश्रमोंको	जाते है ।
सिंहा	मानुषान्	खादति ।	अनेक सिंह	अनेक मनुष्योंको	खाने है ।
पाठका	प्रश्नान्	पृच्छति ।	अनेक अध्यापक	अनेक प्रश्न	पूछते है ।

### धात्वर्थ(१)

धातु	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पठना ( पठ् + अ + तिश् )	पठति	पठत	पठति ।
लिख	लिखना ( लिख् + अ + ति )	लिखति	लिखत	लिखति ।
इष्टु	चाहना ( इच्छ् + अ + ति )	इच्छति	इच्छत,	इच्छति ।
रक्ष	रक्षाकरना ( रक्ष् + अ + ति )	रक्षति	रक्षत	रक्षति ।
दहौ	जलाना ( दह् + अ + ति )	दहति	दहत	दहति ।
गम्	जाना ( गच्छ् + अ + ति )	गच्छति	गच्छत	गच्छति ।
खाद्	खाना ( खाद् + अ + ति )	खादति	खादत	खादति ।
पृच्छी	पूछना ( पृच्छ् + अ + ति )	पृच्छति	पृच्छत	पृच्छति ।

१ । धातु जिस तरहकी लिखी है वैसेही धातु करना चाहिये । २ । धातु तीन प्रकारकी होती है परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी । जिस धातुमें अ लगा हो वह उभयपदी, जिसमें ऐ अथवा ऊ लगा हो वह आत्मनेपदी और जिसमें अ् ए ङ् ये अ लगे होंवे सब परस्मैपदी है । ३ । परस्मैपदी धातुके अन्व पुरुषके एकवचनमें ति, द्विवचनमें त और बहुवचनमें ंति प्रत्यय लगता है ।

## प्रथम पाठ ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता (१)	कर्म (२)	क्रिया (३)
१। जैन	जिन	अर्चति ।	जैनो	जिन भगवानको	पूजता है ।
बालक	ग्रथ	पठति ।	बालक	ग्रथ	पढ़ता है ।
छात्र	ग्रथ	लिखति ।	विद्यार्थी	ग्रथ	लिखता है ।
जन	अग्रथ	इच्छति ।	मनुष्य	धर्म	चाहता है ।
अत्रिय	ग्राम	रक्षति ।	अत्रिय	ग्रामको	रक्षाकरता है ।
दहन	वृक्ष	दहति ।	अग्नि	वृक्ष	जलाती है ।
शिष्य	आश्रम	गच्छति ।	शिष्य	आश्रमको	जाता है ।
धर्म	घास	खादति ।	घोड़ा	घास	खाता है ।
पाठक	छात्र	पृच्छति ।	अध्यापक	विद्यार्थीको	पूछता है ।

२। पुरुषो	जिनो	अर्चत ।	दो पुरुष	दो जिन भगवानको	पूजते हैं ।
बालकौ	ग्रथो	पठत ।	दो बालक	दो ग्रथ	पढ़ते हैं ।
छात्रौ	ग्रथौ	लिखतः ।	दो विद्यार्थी	दो ग्रथ	लिखते हैं ।
बालौ	मोदकौ	इच्छत ।	दो बालक	दो मण्ड	चाहते हैं ।
अत्रियो	ग्रामौ	रक्षत ।	दो अत्रिय	दो ग्रामको	रक्षा करते हैं ।
अनलौ	वृक्षौ	दहत ।	दो अग्नि	दो वृक्षको	जलाती हैं ।
शिष्यौ	आश्रमौ	गच्छत ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमोंको	जाते हैं ।
सिंही	मानुषौ	खादत ।	दो सिंह	दो मनुष्योंको	खाते हैं ।
पाठकौ	प्रश्नौ	पृच्छत ।	दो अध्यापक	दो प्रश्न	पूछते हैं ।

१। जो क्रियाको कर उसे कर्ता कहते हैं । २। कर्ता अपनी क्रियासे जिसको करे उसे कर्म कहते हैं । ३। कर्ताके कर्मनशानादिद्वय व्यापारको क्रिया कहते हैं । अथवा वाक्यके अर्थको पूरा कर देने की क्रिया है ।

३ । बालका	ग्रथान्	पठति ।	अनेक बालक	अनेक ग्रथ	पठते हैं ।
छात्रा*	ग्रथान्	लिखति ।	अनेक विद्यार्थी	अनेक ग्रथ	लिखते हैं ।
बाला	भोदकान्	इच्छति ।	अनेक बालक	अनेक भोदक	चाहते हैं ।
क्षत्रिया*	ग्रामान्	रक्षति ।	अनेक क्षत्रिय	अनेक ग्रामोंकी रक्षा	करते हैं ।
पावका	वृक्षान्	दहति ।	अनेक अग्नि	अनेक वृक्षोंको	जलाती है ।
सज्जना	आश्रमान्	गच्छति ।	अनेक सज्ज	अनेक आश्रमोंको	जाते हैं ।
सिद्धा	मानुषान्	खादति ।	अनेक सिद्ध	अनेक मनुष्योंको	खाने हैं ।
पाठका	ग्रथान्	पृच्छति ।	अनेक अध्यापक	अनेक ग्रथ	पूछते हैं ।

### धात्वर्थ(१)

धातु	प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पठना ( पठ् + अ + तिश् )	पठति	पठत,	पठति ।
लिख	लिखना ( लिख् + अ + ति )	लिखति	लिखत	लिखति ।
इष्टु	चाहना ( इच्छ् + अ + ति )	इच्छति	इच्छत	इच्छति ।
रक्ष	रक्षाकरना ( रक्ष् + अ + ति )	रक्षति	रक्षत	रक्षति ।
दहौ	जलाना ( दह् + अ + ति )	दहति	दहत	दहति ।
गच्छ्	जाना ( गच्छ् + अ + ति )	गच्छति	गच्छत	गच्छति ।
खाद्	खाना ( खाद् + अ + ति )	खादति	खादत	खादति ।
पृच्छो	पूछना ( पृच्छ् + अ + ति )	पृच्छति	पृच्छत	पृच्छति ।

१ । धातु जिस तरहकी लिखी है वैसीही यात् करना चाहिये । २ । धातु तीन प्रकारकी होती है परस्मैपत्नी, आत्मनेपत्नी और लमयपत्नी । जिस धातुमें अ् लगा हो वह लमयपत्नी, जिसमें ऐ अथवा इ् लगा हो वह आत्मनेपत्नी और जिसमें अ् ए इ अ लगे होते हव परस्मैपत्नी है । ३ । परस्मैपत्नी धातुके अन्य पुरुषके एकवचनमें ति, द्विवचनमें त और बहुवचनमें अति प्रथमत्वगता है ।

	पठति ।		पठति ।		
जिनाः ।	धर्मं	दिशति ।	जिना	धर्मं	दिशति ।
बालकाः ।	पठति ।		बालका	पठति ।	
क्रोधः ।	पुरुषं	दृष्टवति ।	क्रोध	पुरुषं	दृष्टवति ।
सारथी ।	तडागं	गच्छति ।	सारथी	तडागं	गच्छति ।
पंडितान् ।	प्रधानं	पठति ।	पंडिता	प्रधानं	पठति ।
धनं ।	धाम	दृष्टवति ।	धनं	धाम	दृष्टवति ।
धार्मिकौ ।	शिव	इच्छति ।	धार्मिक	शिव	इच्छति ।
बालक	लाजा	खादति ।	बालक	लाजान्	खादति ।
धर्मो	धाम	खादति ।	धर्मो	धाम	खादति ।

शेषे विधि शब्दोक्तौ धर्मशब्दं लाकर कथा बनायो—

मूर्खो, कोटपाल, दृष्टवति, रचति, गच्छति, नमति, धाम, पाचार्या प्रधानं, इच्छति खादति, सेवकान्, क्रीडति, पठति ।

द्वितीया बनायो—

जेना जिनं धर्मं । गज तडागं गच्छति । जनं स्वर्गं इच्छति । सुपकारं भोदा पचति (पकाता है) । बुधा धर्मं इच्छति । पंडिता न खिन्ति । कण्ठधार ( मसाला ) नर्दं तरति । भय्या 'समात्तरति ।

संज्ञित बनायो—

विद्यार्थी इच्छति है । धर्म ( धर्म ) सुख देता है ( इच्छति ) । लडका कान्तिजको ( विद्यालय ) जाता है । किसान ( लक्ष्मीवत् ) अमाज बोता ( पति ) है । ' मेघ समुद्रको जाती है ।

	पठ०	दि०	पठ
कर्ता ( प्र० वि० )	धर्म	धर्मो	धर्मा
कर्म ( द्वि० वि० )	धर्म	”	धर्मान्

इसी प्रकार कुल ( सर्वान् भिन्न ) अकारण शब्दोंके रूप होते हैं ।

द्वितीय पाठ ।

इकारांत पु लिंग ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	या
१ । सुनि	गिरि	गच्छति ।	सुनि	पर्वतको	जाता है ।
ऋषि	नृपति	वदति ।	ऋषि	राजाको	कहता है ।
अहो	कपी	दशति ।	सांप	ब दरको	काटता है ।

२ । सुनी	गिरो	गच्छत ।	दो सुनि	दो पर्वतोंको	जाते है ।
ऋषी	नृपती	वदत ।	दो ऋषि	दो राजाओंको	कहते है ।
अहो	कपी	दशत ।	दो सांप	दो ब दरोंको	काटते है ।

३ । सुनय	गिरीन्	गच्छति ।	सुनिसंग	पर्वतोंको	जाते है ।
ऋषय	नृपतीन्	वदति ।	ऋषि	राजाओंको	कहते है ।
अहय	कपीन्	दशति ।	सांप	ब दरोंको	काटते है ।

धात्वर्थ

वद	बोलना	( वद + अ + ति )	वदति	वदत	वदति
दशौ	काटना	( दश + अ + ति )	दशति	दशत	दशति

	अपदान		पद		
कपय	गिरि	गच्छति ।	कपय	गिरि	गच्छति ।
सुनि	यति	पृच्छत ।	सुनि,	यति	पृच्छति ।
अहो	भेकान्	खादति ।	अहो	भेकान्	खादत ।
ऋषि	अथ्यान्	रचन्ति ।	ऋषय	अथ्यान्	रचति ।
ऋषय	शिश्यान्	उपदिशति ।	ऋषि	शिश्यान्	उपदिशति ।
अग्नेय	वृक्षान्	दहति ।	अग्नी	वृक्षान्	दहति ।
नृपति	सुनय	वदति ।	नृपति,	सुनान्	वदति ।
अहय	ऋषि	दशति ।	अहय,	ऋषान्	दशति ।

पठ करी—

शिय यतय अनुगच्छति । अग्निं धूमं पचति । जन मोक्षं  
इच्छति । सुती गच्छति । यति ली० रचति । अतिथि धानय  
पागच्छति । यावक अभक्ष्य न स्वात्तः । द्वात्र मन्मर्ति पचति ।

नीचे निचे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर भास बनाओ—

अरय, यतोन् मुनि विधि, रवि, गच्छति पठति, दग्धत,  
सिषति, पृच्छति, निदति ।

स सजत बनाओ—

विद्यार्थी गुरुको पीछे पीछे चलता है । यावक सुमियाको  
पूजते हैं । मुनिमोग धर्मका उपदेश देते हैं (उपदिशति) । द्वायो  
तलायको जाता है । रामदास दुश्मनको निंदा करता है (निदति) ।  
नीकर मोभा टोता (पचति) है । विद्यार्थी गुरुको पूजता है ।

एक एक शब्द रखकर इन शब्दोंको पूरा करी—

कमठ पार्श्वनाथ ———, रवि कर ———, यावक  
गुणगुण ———, यति धम ——— ———निपतति, गर  
———इच्छति ———सज्जन निदति ।

प्रथमा—मुनि मुनो मुनाय । १

द्वितीया—मुनि ,, मुनोन् ।

## तृतीय पाठ ।

सकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ गुरु	शिय	पृच्छति ।	गुरु	लङ्केको	पूजता है ।
साधु	मेरु	गच्छति ।	साधु	सुने बरवतकी	जाता है ।
मानु	अथ	विकिरति ।	दूरज	निरपको	देलाता है ।
प्रभु	तरु	छ तति ।	सामो	इचको	पचता है ।

२ गुरु	गिशू	वदत ।	दो गुरु	दो लड़कोंको	कहते हैं ।
साधू	मेरू	गच्छत ।	दो साधु	दो सुनी रूपवर्तोंको	जाते हैं ।
भानू	अशू	विकिरत ।	दो सूरज	किरणोंको	फँसते हैं ।
प्रभू	तरू	कृतत ।	दो मालिक	दो बच्चोंको	काटते हैं ।
३ गुरव	गिशून्	पचति ।	गुरु	विद्यार्थियोंकी	बुझते हैं ।
साधव	मेरून्	गच्छति ।	साधु	मोक्षार्थोंको	जाते हैं ।
भानव	अशून्	विकिरति ।	सूरज	किरणोंको	फँसते हैं ।
प्रभव	तरून्	कृतति ।	मालिक	बच्चोंको	काटते हैं ।

अपठ

पठ

गुरव	छात्रान्	उपदिशति ।	गुरव	छात्रान्	उपदिशति ।
इदु	अशून्	विकिरति ।	इदु	अशून्	विकिरति ।
दैद्य	बाह्व	कृतति ।	दैद्य	बाह्वन्	कृतति ।
विष्णु	पर्वत	व्रजत ।	विष्णु	पर्वत	व्रजति ।
परशु	वृक्षान्	कृतति ।	परशु	वृक्षान्	कृतति ।
विभावसु	तरव	दहति ।	विभावसु	तरून्	दहति ।

नीचे विभिन्न शब्दोंकी व्यवहाराग्नी लाकर वाक्य बनाओ—

बधु, प्रभु, परशु, अर्चति, अर्दति, व्रजति, तरु, विभावसु  
शत्रु, साधु, पचति, कारु, तक्षति ।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	पठ	ति	पठ०
क्रदि	रोना	( क्रद् + अ + ति )	क्रंदति	क्रदत	क्रदति ।
खेल्	खेलना	( खेल् + अ + ति )	खेलति	खेलत	खेलति ।
अर्द	पीडादेना	( अर्द + अ + ति )	अर्दति	अर्दत	अर्दति ।
अर्च	पूजाकरना	( अर्च् + अ + ति )	अर्चति	अर्चत	अर्चति ।
दिग्	आज्ञादेना	( दिग् + अ + ति )	दिशति	दिशत	दिशति ।



प्रज	जन्मना	( प्रज् + घ + ति ) प्रजति	प्रजत	प्रजति ।
कृती	कृदना	( कृत् + घ + ति ) कृति	कृतत	कृति ।
शुचि	शुचना	( शुच् + घ + ति ) शुचति	शुचत	शुचति ।
इष्टु	( इच्छ् ) इच्छाकरणा	( इच्छ् + घ + ति ) इच्छति	इच्छत	इच्छति ।

न कृत वदन्ते—

मदका रोता है। दुर्जन मज्जनको दु प देता है। धरज धमता है। बटई ( काक ) वनको लाता है। मनुष्य साधुपक्षीको पुण्ते है। वधु दधेको धूमते है।

एक एक शब्द परस्पर साथ पूरे करें—

—इदु इच्छति काश् — कृतति, व घव —  
शु वति । — भानु चर्चति, — इष्ट चर्चति ।

उकारात्त पुलिग मियु शब्दके रूप ।

एव०	ति०	वा०
प्रथमा—मियु	मियु	मियव
द्वितीया—मियु	"	मियुन्

### चतुर्थपाठ ।

वता	वर्ग	प्रथ० ।	वर्ग	वर्ण	मिया ।
१ कृतीता	दातार	चर्चति ।	मिनेवता	दाताको	पूजता है ।
वह्ता	श्रोतार	वदति ।	वह्ता	श्रोताको	कहता है ।
भर्ता	कर्तार	पृच्छति ।	भर्ता	कर्ताको	पूछता है ।
जीता	योद्धार	वदति ।	जीतनेवाला	योद्धाको	कहता है ।
२ कृतीतारी	दातारी	चर्चत ।	दी यहीना	दी दाताकी	पूजते है ।
वह्तारी	श्रोतारी	वदत ।	दी वना	दी श्रोताकी	कहते है ।
भर्तारी	कर्तारी	पृच्छत ।	दी मन्नी	दी कर्ताकी	पूछते है ।
जीतारी	योद्धारी	वदत ।	दी जीतनेवाले	दी योद्धाकी	कहते है ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
३ गृहीतार	दातृन्	अर्चति ।	अनेक गृहीता	अनेक दाताओंको	पूजते हैं ।
वक्तार	श्रोतृन्	वदति ।	अनेक वक्ता	अनेक श्रोताओंको	कहते हैं ।
भर्तार	कर्तृन्	पृच्छति ।	अनेक स्वामी	अनेक कर्ताओंको	पूजते हैं ।
जीतार	योद्धृन्	गदति ।	अनेक जीतनेवाले	अनेक योद्धाओंको	कहते हैं ।

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वद	कहना	( वद् + अ + ति )	वदति	वदत	वदति ।
गद	”	( गद् + अ + ति )	गदति	गदत	गदति ।
हृ	हरना	( हृ + अ + ति )	हरति	हरत	हरति ।
सृश्रौ	छुना	( सृश् + अ + ति )	सृश्रति	सृश्रत	सृश्रति ।
अर्ह	पूजना	( अर्ह + अ + ति )	अर्हति	अर्हत	अर्हति ।
रक्ष	रक्षा करना	( रक्ष + अ + ति )	रक्षति	रक्षत	रक्षति ।
(उप)दिश्रौञ्	उपदेशदेना	( दिश् + अ + ति )	दिशति	दिशत	दिशति ।
कृत्	छेदना (काटना)	( कृत् + अ + ति )	कृत्ति	कृत	कृत्ति ।
अर्द	पीडादेना	( अर्द् + अ + ति )	अर्दति	अर्दत	अर्दति ।

अपह ।

पह ।

जीतार	योद्धृन्	गदति ।	जीतार	योद्धृन्	गदति ।
श्रोता	वक्तार	वदति ।	श्रोता	वक्तार	वदति ।
भर्तारी	भृत्य	आदिशति ।	भर्तारी	भृत्य	आदिशत ।
गृहीता	दाता	अर्चति ।	गृहीता	दातार	अर्चति ।
दोग्धा	कर्तार	पृच्छति ।	दोग्धा	कर्तार	पृच्छति ।
भर्तार	हर्ता	गदति ।	भर्तार	हर्तार	गदति ।
उपदेशार	श्रोतार	गदति ।	उपदेशार	श्रोतार	गदति ।

५५६।

५५।

कर्तार धयान् हरति । कर्ता धयान् हरति ।  
भर्ता धृत्यान् रक्षति । भर्तार धृत्यान् रक्षति ।

निर्दिष्ट कर्ताको धयान् हरति । भर्तार धृत्यान् रक्षति ।

चर्ति, जितार, कर्ता, कर्तागी, नाभ्यन् चर्ति, चर्ति, भर्तार,  
चर्तार चर्ति, जितान्, गदत, चर्ति ।

५६ शरी—

भेत्ता घट सृजति । बोद्धार दावान् पृच्छति । माधु श्रेष्ठम्  
उपदिशति । मविता (स्य) गिरि सृजति । प्रभु कर्ता चर्ति । शो  
तार गुरु अर्चत । जितारी वाडा पृच्छति । पश्यु तदन् कर्ति ।

संज्ञित कर्ताकी—

दाता गरीषको पूजता है । गरीष दाताको पूजा करता है ।  
मालिक धीर ( चर्त ) की पिहारी करता है । पृष्ठनेवामा ( घट्ट )  
गुरुको पूजता है । विद्यार्थी गुरुको पूजा करता है । तीना  
( माळ ) बाजार ( हाट ) की लाता है ।

५६०

दि

५६०

प्रथमा — दाता दातागी दातार  
द्वितीया — दातार , दातान्

### पंचम पाठ ।

व्यजनांत पुंलिंग ।

चकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ जन्मसुख	गिरि	सृजति ।	मेष	पशुको	दूता है ।
वास्तव,	जलसुख	पश्यति ।	नामक	मेषकी	दिखता है ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
पवन	जलमुच	विकिरति ।	इवा	मेघको	फैलाती है ।
पयोमुक्	घातक	अवति ।	मेघ	घातकको	सतुष्ट कर्ता है ।
घातक	पयोमुच	काँक्षति ।	घातक	मेघको	षाहता है ।
२ जलमुचो	गिरी	स्पृशत ।	दो मेघ	दो पर्वतोंको	छूते हैं ।
वात	जलमुचौ	विकिरत ।	इवा	दो मेघोंको	विखेती है ।
जलमुचौ	घातक	अवत ।	दो मेघ	घातकको	सतुष्ट करत है ।
३ वारिमुच	गिरि	स्पृशति ।	अनेकमेघ	पर्वतको	छूते हैं ।
घातका	वारिमुच	काँक्षति ।	अनेक घातक	अनेक मेघोंको	षाहते हैं ।
पवन	पयोमुच	विकिरति ।	(इवा )	अनेक मेघोंको	वर्षाती है ।

गौघे विभिन्न शब्दोंको व्यवहारमें लाकर भास बनायो—

पयोमुक, वारिमुच, पर्वत, अवत, काँक्षति, पश्यति, जलमुच, अचत, विकिरति, स्पृशत ।

यह करो—

घातका वारिमुच काँक्षति । जलमुच घातकान् अवति । पयो मुचो पर्वत स्पृशति । वायु पयोमुक् अर्दति ।

एक एक शब्द रखकर भास पूरे करो—

— पयोमुच पश्यति । पयोमुक् — अवति । —

जलमुच — । — जल विकिरति ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	— जलमुक् ( ग् )	जलमुचौ	जलमुच
द्वितीया	— जलमुच	”	”

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक	द्वि०	बहु
काक्षि	चाहना ( काच् + अ + ति )	काक्षति	काक्षत	काँक्षति ।	
अव	सतुष्टकरना ( अव + अ + ति )	अवति	अवत	अवति ।	

दृशिरो (पश्य) देखना ( पश्य + अ + ति ) पश्यति पश्यत पश्यति ।  
 कृ विखेरना ( किर् + अ + ति ) किरति किरत किरति ।

## षष्ठ पाठ ।

### जकारांत ।

कता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ सम्राट	परिव्राज	अचति ।	सयाट	स न्यासीको	पूजा करना है ।
नृप	सम्मान	अचति ।	राजा	समाट को	स तुष्ट करता है ।
महीप	रज्जुसृज	वदति ।	राजा	रज्जुनिर्माताको	बुझता है ।
२ सम्राजौ	हृत्तार	अदत ।	दो सयाट	हृत्ताका	पीड़ा दते है ।
सम्राट	परिव्राजौ	अचति ।	सयाट्	दो स न्यासियोंको	पूजना है ।
३ सम्राज	परिव्राज	अर्चति ।	बनेक सम्राट	स न्यासीको	पूजते है ।
नृपा	देवराज	अर्चति ।	बनेक राजा	बनेक इद्रोंको	पूजते है ।
भूपा	सम्राज	अर्चति ।	राजालोक	सम्राजोंको	स तुष्ट करते है ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सम्राट, परिव्राज, देवराजौ, नृप, रज्जुसृज, अचति, कांचति,  
 पश्यत राजराट, गच्छति अचति ।

नीचे लिखे वाक्योंकी श्रुति करो—

रज्जुसृट् रज्जु सृजति । कसपरिसृजौ मगर गच्छति । देवेजौ  
 देवान् अर्चति । विभ्राट् कर्तार वदत ।

एक एक शब्द रखकर वाक्य बनाओ—

—रज्जु सृजति । जना देवेज ——— । राजराट्—  
 गच्छति । मनुष्या ——— अर्चति । ———वर्म उपदिशत ।

स कृत्य बनाओ—

जीव कर्मको ( देव ) बनाता है । दो सन्यासो ग्रामको जाते हैं ।  
चक्रवर्ती ( सम्राट् ) राज्यको रक्षा करता है । देव इन्द्रको पूजते हैं ।

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक	द्वि०	बहु०
सृज	बनाना	( सृज् + अ + ति )	सृजति	सृजत	सृजति ।
अच	जाना, पूजना	( अच् + अ + ति )	अचति	अचत	अचति ।
अव	रक्षा करना, सतुष्टकरना	( अय् + अ + ति )	अवति	अवत	अवति ।
व्रज	जाना	( व्रज् + अ + ति )	व्रजति	व्रजत	व्रजति ।
रिप्	हिंसा करना	( रिप् + अ + ति )	रिपति	रिपत	रिपति ।
		एक०	द्वि०	बहु०	
प्रथमा	— सम्राट् ( २ )		सम्राजौ		सम्राज
द्वितीया	— सम्राज		”		”

### सप्तम पाठ ।

#### तकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ भूभृत्	प्रयोमुच	पश्यति ।	राजा	भेषको	देखता है ।
पापकृत्	पुण्यकृत	निदति ।	पापी	पुण्यात्माकी	निंदा करता है ।
विपश्चित्	तीर्थकृत	अर्चति ।	विशान्	जिने द्रको	पूजता है ।
२ वारिमुक्	भूभृतौ	कुवति	भेष	दो प तोंका	ढकता है ।
विपश्चितौ	वन	व्रजत ।	दो, विशान्	वनकी	जाते हैं ।
पुण्यकृती	स्वर्ग	गच्छत ।	दो पुण्यात्मा	स्वर्गकी	जाते हैं ।
३ विपश्चित्	बालकाङ्ग	पृच्छति ।	विशान् भोग	बाशकोंकी	पूछते हैं ।
जनमुच	भूभृत	कुवति ।	भेष	पर्वतोंकी आहादन	करते हैं ।
पापकृत	नरका	गच्छति ।	पापी	नरक	जाते हैं ।

	अपठ			अपठ	
अनसुच	भूयते	दुपति ।	दममुक्	भूयत	कुपति ।
भूयत्	गमान्	रथति ।	भूयत	अमान्	रथति ।
अना	विपद्यित्	पृच्छति ।	अना	विपद्यित	पृच्छति ।
विपद्यित्	भूयत्	अनुगच्छति ।	विपद्यित्	भूयत	अनुगच्छति ।
गोत्रमित्	पठेत्	अपठ ।	गोत्रमित्	पठेत्	अपठति ।
भूय	विपद्यित्	रिपति ।	भूय	विपद्यित	रिपति ।

एव एव २० एव एव २० एव एव २०

—आकाश, दुपति । अपठ—विकिरति । —पुणं कापति ।

अनय भूयत — । अट्टीता—अपति । विपद्यित्—गच्छति ।

अपठ—रिपति । भूयत्—अपति । देवेद् —अपति ।

अपठ अनाप —

अपठ अनापको अपठटन करते हैं । विद्वान् लोग धर्मका अपठटन करते हैं । अनापको अपठटते हैं । अनापक अपठटको मारते हैं । पुण्य करनेवाले धर्मको अपठटते हैं । राजा अपठटको मारता है । अपठट अनापको अपठट करते हैं ।

	अपठ		अपठ		अपठ
अपठ	—	भूयत् ( ६ )	भूयतौ		भूयत
द्वितीया	—	भूयत	"		"

### अपठ पाठः ।

अ ( ४ ) तु भागात् ।

अपठ	अपठ	अपठ	अपठ	अपठ	अपठ
१ अपठान्	अपठत	अपठति ।	अपठान्	अपठान्	अपठति ।
विद्यावान्	अपठत	अपठति ।	विद्यावान्	अपठान्	अपठति ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
नेत्रवान्(१)	कटकं	पश्यति ।	नेत्रवाला	कटिको	देखता है ।
तडित्वान्	घ्योतिष्मंतं	कुवति ।	रेघ	स्यको	रुकता है ।
धनवान्	बुद्धिमत्	वदति ।	धनाब्ध	बुद्धिमानकी	बड़प्पता है ।
भास्वान्	प्रकाश	यच्छति ।	सूरज	प्रकाशको	देता है ।
२ धीमती	यशस्वती	पश्यति ।	दी बुद्धिमान	यशस्वीकी	देखते है ।
महीप	तडित्वती	पश्यति ।	राजा	दो मंघोंकी	देखता है ।
बलवती	ग्राम	गच्छति ।	दी बलवान्	गांवकी	जाते है ।
चक्षुष्मती	ग्रंथ	पश्यति ।	दी चक्षुष्मान्	पुस्तकको	देखते है ।
३ धीमत	गुणवत्	अर्चति ।	बुद्धिमान् (अनेक)	गुणवानोंको	पूजते है ।
धनवत्	विद्यावत्	गच्छति ।	धनवासी	विद्यावानोंके पास	जाते है ।
नेत्रवत्	कटकान्	पश्यति ।	नेत्रवासी	काटोंकी	देखते है ।
ज्ञानवत्	छात्रान्	उपदिशति ।	ज्ञानवासी	छात्रोंको	उपदेश देते है ।

अथ

अथ

बुद्धिमान्	भास्वान्	पश्यति ।	बुद्धिमान्	भास्वत्	पश्यति ।
धनवान्	गुणवत्	अर्चति ।	धनवत्	गुणवत्	अर्चति ।
दयावान्	स्वर्ग	गच्छति ।	दयावन्तौ	स्वर्ग	गच्छति ।
धीमत	ग्रथान्	पठति ।	धीमत	ग्रथान्	पठति ।
लुब्धका	धनवत्	अर्चति ।	लुब्धका	धनवत्	अर्चति ।

१ शब्दोंके अन्तमें मन् लगा देनेसे इस प्रत्ययके रूप बनते है और उसका (वाला) अर्थ होता है । जैसे गी शब्दके अन्तमें मन् लगाया तो गीमन् हुआ । जिसका कि अर्थ—गाय वाला होता है । लेकिन जिन शब्दोंके अन्तमें अथवा अन्तके अक्षरसे पहले 'अ' अथवा 'म्' हीमा तो मन्की सकारके स्थानमें यकार हो जायगा । जैसे—विद्या+मन्=विद्यावत् आम+मन्=



नोचं निधि शर्णीको व्यपद्गामे लाकर वारा बनायो—

धनवत, अशुमत, (चरज) यपुषान् छपावतौ भास्वान्  
ज्योतिष्मतौ, धरत पशन्ति, ज्ञानवान्, श्मश्रुमत (डाढ़ीवामे)  
तद्विर्वत । (१)

सकृत बनायो—

धनार्थीको मसार पूजता है । चरनको उखू (धुक) नहीं देखते  
हैं । ज्योतिष देव चनते हैं । ज्ञानी पुस्तक पढ़ता है । डाढ़ीवामे  
(श्मश्रुमत) जाते हैं । मीघ पर्वतोंको टाकते हैं ।

नत् प्रत्ययान् धीमान् शब्दके धर :

एह०	रि०	११०
प्रथमा—धीमान्	धीमती	धीमत
द्वितीया—धीमती	„	धोमत'

## नवम पाठ ।

धत् ( श्ल ) प्रत्ययात् । (२)

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ गायन्	वदत	वदति ।	गानेवाला	रोतिपुत्रको	कहता है ।
वृष	गायत	वदति ।	राजा	गाने पुत्र (जन)को	प्रशंसा करता है ।

१ जिस शब्दके अन्तमें वीका पहिला दूसरा तोहरा और चौथा अक्षर वा अन्त  
शब्दके गानके मत्के मकारकी भी बकार ही लगता है ।

२ भूदिगण और गुणान्दिगणकी धातुओंके प्रथमपुरुष को ( वदति वात् ) क्रियाके एक  
वचनमें ति के स्थानमें न् कर देनेसे इस प्रत्ययके रूप बनते है । जैसे कि—पठ धातुका  
पठति रूप बनता है अन्तके ति क स्थानमें त् कर देनेसे मत् रूप बनता है । अन्त वदने

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
गच्छन्	आश्रम	पश्यति ।	जाता इषा ( पादमी )	आश्रमकी देखता है ।	
ध्यायन्	ईश्वरं	स्मरति ।	ध्यान करता हुआ (जन)	ईश्वरकी चिताराता है ।	
पठन्	पुस्तक	पश्यति ।	पढता हुआ (पादमी)	पुस्तकको देखता है ।	
२ गायती	रुदती	वदत ।	दोगानेवासी (पादमी) दीजने रोते हुएोंको कहते है ।		
महोपति	गायती	अचलः ।	राजा गाते हुये दो जनोंका सन्कार करता है ।		
गच्छती	दृष्ट	स्मृशत ।	चलते हुये दो जने दृष्टकी छूते है ।		
ध्यायती	जिन	स्मरत ।	ध्यान करते हुये दोगाने जिनको याद करते है		
पठती	अध्यान्	पश्यत ।	पढते हुये दोगाने सबोंको देखते है ।		
३ गायत	रुदत	वदति ।	गाते हुये बहुतसे जन रोते हुएोंको कहते है ।		
नराधिप	गायत	पश्यति ।	राजा गाते हुये बहुत जनोंकी देखता है ।		
अदत	कथां	गदति ।	खाते हुये ( बहुत जने ) कथा कहते है ।		
ध्यायत	जिन	स्मरति ।	ध्यान करत हुये बहुतजन जिनकी याद करत है		

अपठ ।

पठ ।

नृप	गायत	पृच्छति ।	नृप	गायत	पृच्छति ।
तिष्ठत	कथां	गदति ।	तिष्ठत	कथां	गदति ।
चलन्	वृक्षान्	स्मृशति ।	चलत	वृक्षान्	स्मृशति ।
जानती	अशुद्धि	वदति ।	जानन्	अशुद्धि	वदति ।
अदन्	सुधा	हसत ।	अदती	सुधा (व्यर्थ)	हसत ।

नोचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

गच्छत, इच्छन्, स्मरती, अचति, किरत, पृच्छत, वदन्,  
ध्यायन्, गायत ।

य कृत बनाओ—

सहकी गाते गाते जाते हैं । भूर्खें खाते खाते हसते हैं । पार्श्वदास कहते कहते हसता है । राम पढते पढते पूछता है । शृगाल जाते हुये शृगकी देखता है । नारद (नापित) रोता हुआ पैसे मांगता है ।

वाक्य पूरे करो—

— विनपत गदति । देयदत्त\* — पृच्छति  
गुह पठत — । सेवक — वाञ्छति ।

चतु ( गद ) प्रथयांत तापन् इत्यर्थे रूप ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गायन्	गायतौ	गायन्त
द्वितीया—	गायते	,	गायत

### धात्वर्थ

धातु	अथ	प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लप	कहना	( लप् + अ + ति )	लपति	लपत	लपति ।
वाञ्छि	चाहना	( वाञ्छ + अ + ति )	वाञ्छति	वाञ्छत	वाञ्छति ।
गद	कहना	( गद् + अ + ति )	गदति	गदत	गदति ।
जे	गाना	( गाय् + अ + ति )	गायति	गायत	गायति ।
ध्वा	ध्यानकरना	( ध्याय् + अ + ति )	ध्यायति	ध्यायत	ध्यायति ।
छर्	यादकरना	( छर् + अ + ति )	छरति	छरत	छरति ।
अर्ह	पूजाकरना	( अर्ह + अ + ति )	अर्हति	अर्हत	अर्हति ।
पश्यि	देखना	( पश्य् + अ + ति )	पश्यति	पश्यत	पश्यति ।
अच	जाना पूजना	( अच् + अ + ति )	अचति	अचत	अचति ।
सृग्	कूना	( सृग् + अ + ति )	सृगति	सृगत	सृगति ।

दशमपाठ ।

दृ कारांत ।

वृत्ता	वचनं	क्रिया	वर्ता	कर्म	क्रिया
१ दुर्द्धद	उद्दिद	पश्यति ।	यत्	उद्दिदको	दिश्यता है ।
मानव	दिविषद	अचति ।	मनुष्य	देवको	पूजता है ।
दिविषत्	जनान्	आदिशति ।	दत्त	मनुष्योंको	आज्ञा देता है ।
सभासत्(दृ)	सभासद	गदति ।	सभासद	सभासदको	कहता है ।
२ उद्दिदौ	वृष्टि	कांचति ।	दो उद्दिद	वृष्टिको	चाहते है ।
मानव	दिविषदौ	अचति ।	मनुष्य	दो देवोंको	पूजता है ।
सभासदौ	सभासदौ	पृच्छति ।	दो सभासद	दो सभासदोंको	पूछते है ।
सुहृदौ	सुहृदौ	रक्षति ।	दो मित्र	दो मित्रको	रक्षा करते है ।
३ उद्दिद	वृष्टि	कार्चति ।	बहत्तसे उद्दिद	वर्षाको	चाहते है ।
मानवा	दिविषद	अचति ।	मनुष्य	देवोंको	पूजा करते है ।
सभासद	सभासद	पृच्छति ।	सभासद	सभासदोंको	पूछते है ।
सुहृद	सुहृद.	पश्यन्ति ।	मित्र	मित्रोंको	दिखते है ।
	अपद ।			पद ।	
सुहृद	पर्यंत	गच्छति ।	सुहृद	पर्यंत	गच्छति ।
उद्दिदौ	वायु	कांचति ।	उद्दिद	वायु	कांचति ।
वृष्टि	उद्दिदान्	सिचति ।	वृष्टि	उद्दिद	सिचति ।
सभासद	परस्पर	वदति ।	सभासदौ	परस्पर	वदति ।
दुर्द्धद	वार्ता	वदति ।	दुर्द्धद	वार्ता	वदति ।
दिविषद	जिनान्	अचति ।	दिविषद	जिनान्	अचति ।

नौचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

निरापद, दुर्द्धद, सुहृद, सभासद, विषद, दिविषदौ ।

जीवे विवे शाश्वतोऽहो धरकरा—

निशापदान् विपद्यान् निर्दति । दुर्द्धत् तरु छ तत ।  
दिविपद् जिन पद्यति । उद्विद् छट्टि कांचत ।

संस्कृत वनाची—

मित्र मित्रकी रक्षा करता है । शत्रु मित्रकी निंदा करता है ।  
आपत्तिकी मनुष्य नहीं चाहता है । विपत्ति मनुष्योंकी सताती है ।  
उद्विद् मेवकी चाहते हैं । सभासद् सभाकी जाति हैं ।

एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा—सुद्धत् सुद्धदौ सुद्धद

द्वितीया—सुद्धदम् ”

### धात्वर्थ

दातु	अध	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
दिशौञ्	आज्ञादेना	( दिग् + अ + ति )	दिशति	दिशत	दिशति ।
काञ्चि	चाहना	( काच् + अ + ति )	कांचति	कांचत	कांचति ।
सिचौञ्	सोचना	( सिच् + अ + ति )	सिचति	सिचत	सिचति ।
णिदि	निंदा करना	( निद् + अ + ति )	निदति	निदत	निदति ।
तुदौञ्	पोछा देना	( तुद् + अ + ति )	तुदति	तुदत	तुदति ।
व्रज	जाना	( व्रज् + अ + ति )	व्रजति	व्रजत	व्रजति ।

एकादश पाठ ।

अनु भागांत ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	राजा	सूधानं	छ तति ।	राजा	मिरको	कायता है ।
	सम्राट्	राजान	अर्दति ।	सम्राट्	राजाको	पीडा देता है ।
	राजा	राजानं	गच्छति ।	राजा	राजाके पास	जाता है ।
	तथा	वृषाण	पश्यति ।	वरुं	घोडोंको	देखता है ।
२	राजानौ	सूधानौ	छ तत ।	दो राजा	दो मिरको	काटत है ।
	सम्राट्	राजानौ	अर्दत ।	सम्राट्	दो राजाओंकी	पीडा देते हैं ।
	राजानौ	राजानौ	गच्छत ।	दो राजा	दो राजाओंके पास	जाते हैं ।
	तथापौ	वृषाणौ	पश्यत ।	दो वरुं	दो घोडोंको	देखते है ।
३	राजान,	सम्राज	अर्धति ।	राजालीग	सम्राट् को	पूजते है ।
	सम्राट्	राज	अर्दति ।	सम्राट्	राजाओंको	पीडा देता है ।
	राजान	राज	गच्छति ।	राजा	राजाओंके पास	जाते है ।
	तथाण	वृष्य	पश्यति ।	वरुं	साडोंको	देखते है ।

अपह ।

अह ।

राजान	पर्वत	व्रजत ।	राजानौ	पर्वत	व्रजत ।
सम्राट्	राजान	अर्दति ।	सम्राट्	राज	अर्दति ।
बालक'	प्रेमी	इच्छति ।	बालक	प्रेमाण	इच्छति ।
नृप	गरिमां	काञ्चति ।	नृप	गरिमाण	काञ्चति ।
सुनि	सूधानं	स्मृशत ।	सुनो	सूधानं	स्मृशत ।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

गरिमा, सूधानं, राज, तथापौ, प्रेमाण, देवनिदिनामान'  
अर्धति, सु शत, प्रेमा ।

कृत वताथी—

राजा प्रजाको रचा करते हैं। मुनि वद्व्यनको निन्दा करते हैं।  
मानक पुष्पक चाहता है। वटई घोड़ेकी देखता है। प्रेमकी  
मनुष्य चाहते हैं। पूष्यपाद नामके आचार्यकी सेवाकरष प्रयमा  
करते हैं ( प्रयमति )। सुधर्माचार्यको श्रेयिक पूछता है।

इह करा—

प्रजा राजां चर्षति । सुधर्माचार्यो महावीरं वृच्छति । प्रेमा लभ  
इच्छति । मुनि गरिमां निन्दति ।

अन् भार्गव राजन् वदस्व वच ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रयमा—राजा	राजानी	राजान
द्वितीया—रालान	„	राजान्

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चर्द	पोड़ादेना	( चर्द् + अ + ति )	चर्दति	चर्दत	चर्दति ।
सुच्छ्व	छोडना	( सु च् + अ + ति )	सु चति	सु चत	सु चति ।
शंस (१)	कहना	( शस् + अ + ति )	शंसति	शंसत	शंसति ।

द्वादश पाठ ।

अन् भागांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ शर्मा	ब्रह्माय	अर्चति ।	ब्राह्मण	ब्रह्माकी	पूजता है ।
यज्वा	इद्र	अर्चति ।	पुरोहित	इन्द्रकी	पूजता है ।
द्विजम्ना	सुधर्माण	नमति ।	ब्राह्मण	सुधर्माकी	नमता है ।
२ द्विजम्नानी	ग्रथान्	पठत ।	दी ब्राह्मण	य ग्रंथोंकी	पढ़ते हैं ।
यज्वानी	द्विजम्नानी	पृच्छत ।	दी पुरोहित	दीवियोंको	पूछते हैं ।
इद्र	यज्वानी	रिषति ।	इद्र	दी पुरोहितोंपर	क्रोध करता है ।
३ द्विजम्नान	ग्रथान्	पठति ।	द्विज	ग्रंथोंकी	पढ़ते हैं ।
यज्वान	द्विजम्नान	पृच्छति ।	पुरोहित	ब्राह्मणोंकी	पूछते हैं ।
इद्र	यज्वान	रिषति ।	इन्द्र	पुरोहितोंपर	क्रोध करता है ।

नोचं लिखे शब्दोंके संज्ञक बनायी—

यज्वा, द्विजम्नान, अश्वमानौ (पत्थर), ब्रह्मा, दुरात्मन, पापात्मन, चरति, श्रयति, यज्वान ।

रुद्धत बनायी—

राजा पुरोहितको पूजता है । लोग ब्रह्माको पूजते हैं । द्विज ग्रंथोंको पढ़ते हैं । ब्राह्मण दाताओंका सम्मान करते हैं । पुरोहित यज्ञ ( यजति ) करते हैं । पापोलोग धर्मात्माओंकी निन्दा करते हैं । राजा पापियोंको दण्ड देता है ।

पढ़ करी—

कर्ता यज्वा अर्चति, राजा पापात्मां निन्दति, प्रभु द्विजम्ना अर्चति, जना अश्वमाना अर्चति, साधु पापात्मनौ उपदिशति ।



	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	यज्वा (१)	यज्वानी	यज्वान
द्वितीया—	यज्वान	,	यज्वन

### धात्वर्थ<sup>१</sup>

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
णमौ	नमस्कारकरना	( नम् + अ + ति )	नमति	नमतः	नमति ।
रिप्	क्षीधकरना	( रिप् + अ + ति )	रिपति	रिपत	रिपति ।
चर	खाना, चलना	( चर + अ + ति )	चरति	चरत	चरति ।
अण	देना	( अण् + अ + ति )	अणति	अणत	अणति ।
यजीञ्	यागकरना	( यज् + अ + ति )	यजति	यजत	यजति ।
हृ (२)	हरण करना	( हृ + अ + ति )	हरति	हरत	हरति ।

### त्रयोदश पाठ ।

#### इन् भागात् । (१)

कता	कर्म	क्रिया	कता	कर्म	क्रिया
१ धनो	वलिन्	वदति ।	धनो	वलीकी	वदता है ।
यशस्वी	तपस्विन्	गच्छति ।	यशसी	तपस्वीके पास	जाता है ।

१ जिग अन् भागात् शब्दके अन्तमें 'न' और 'न' उगुत्त होनेसे उनसे रूप वञ्चन् शब्दके समान होनेसे न से वाचन, सुपवन आदि । वलीकी वाज्ज शब्दके समान । ( १ ) प्र परा आदि उपसर्गों के लटनेसे प्रायः धातुका अर्थ बन्व जाता है जैसे प्र हृ—मारणा विहृ—विहार करना आदि । ( १ ) अकारात् शब्दोंसे ( वाचा ) अर्थ में 'इन्' प्रत्यय होता है जैसे वि—वनवाला अर्थ में वन + इन् = वनिन् आदि ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
करी	स्वामिन	सृशति ।	हाथी	मानिककी	घृता है ।
पक्षी	कोटरं	गच्छति ।	पक्षी	खोखारको	जाता है ।
ज्ञानी	विषयिण	निदति ।	ज्ञानी	विषयीको	निन्दा करता है ।
२ मन्त्रिणौ	राजान	अर्चन्ते ।	दी भंवी	राजाकी	पूजते है ।
राजा	करिणौ	यच्छते ।	राजा	दी हाथी	देता है ।
मानया' ज्ञानिनी	अर्चन्ते ।	मनुष्य	दी ज्ञानियोंकी	पूजते हैं ।	
मेधाविनी	विषयिणी	निदत ।	बुद्धिमान	दी विषयियोंकी	निन्दाकरते हैं ।
तपस्विनी	राजान	उपदिशत ।	दी तपस्वी	राजाकी	उपदेश देते है ।
३ पक्षिण	भक्ष	खादन्ति ।	बहुत पक्षी	फलको	खाते है ।
विषयिण	गुणिन'	निदति ।	विषयीभोग	गुणियोंकी	निन्दाकरते है ।
तपस्विन	ध्यान	द्रच्छति ।	तपस्वीभोग	ध्यानकी	पाठते है ।
ध्यामिन	धन	व्रजन्ति ।	ध्यानीभोग	धनको	जाते हैं ।
धनिन	धनिन	गदति ।	धनी भोग	धनियोंकी पास	जाते हैं ।

संज्ञित बनायी—

ध्यानिन', वाञ्छति, गुणिन, पक्षिणी, स्वामिन, यच्छते', मेधावी, तपस्विन, मरीचमालिन, मन्त्रिणौ, करिष ।

एक एक शब्द रखकर इन वाक्योंकी पूराकरी—

—तदुत्तान् खादति, विषयिण —निदति, ज्ञानिनः  
ध्यानिन —, —अर्थ अणति, राजा—वदति, स्वामी करिष  
—,द्वोद्विष —चरति, सुनय मानिन —,एकाकी—  
षटति ।

यह करी—

राजा अपराधि रिपति, ज्ञानिन ध्यानिन द्रच्छति, ध्यानिनी पाप  
व्रजन्ति, तपस्वी राजान उपदिशति, धनी धनी काञ्चति ।

संज्ञत वनापी—

धनाढ्य लोग ज्ञानियोंको निन्दा करते हैं। बलवान् लोग धरकी जाते हैं। मन्त्री राजाको पूजते हैं। पापी पक्षियोंको खाते हैं। यशस्वी मनुष्योंको निन्दा नहीं करते हैं।

अनु-भक्तगात तपस्विन्, शब्दके अर्थ।

एक०

द्वि०

तृ०

प्रथमा—तपस्वी      तपस्विनी      तपस्विन  
द्वितीया—तपस्विनी      ,,      ,,

### धात्वर्थ

धातु	शब्द	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अट	जाना	(अट + अ + ति)	अटति	अटत	अटति ।
दाष्	देना	(यच्छ् + अ + ति)	यच्छति	यच्छत	यच्छति ।
सृष्ठी	छना	(सृष् + अ + ति)	सृशति	सृशत	सृशति ।

### त्रयोदश पाठ ।

अस् भागात् ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ चन्द्रमा	प्रकाश	यच्छति ।	चन्द्रमा	उजाला	देता १
मानव	दिवीकस	अर्चति ।	मनुष्य	देवकी	पूजता २
ध्याध	विज्ञायस	काञ्चति ।	ध्याता	पक्षीकी	बाइता ३
बाल	चन्द्रमसं	पश्यति ।	मनुष्य	चन्द्रमाकी	देखता ४
वेधा	धाम	गच्छति ।	धर्मित	धामकी	जाता ५

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
२ जन	दिवीकसौ	अर्चति ।	मनुष्य	दी दिवोकी	पूजता है ।
वनौकसौ	यनं	व्रजत ।	दी जङ्गली	जङ्गलकी	जाति है ।
विहायसौ	गीड	अटत ।	दी पत्नी	घोंसनाकी	जाति है ।
व्याध	विहायसौ	कांचत* ।	व्याध	दी पत्नीयोकी	बाइता है ।
मिच्छुकाः	उदारचेतसौ	यजतः	मिछारी	दी उदारचेतायोकी	पूजते है ।
५ उदारचेतस	अर्धं	यच्छति ।	उदारचित्तवाधि	धन	दत्त है ।
व्याध	विहायस	कांचति ।	व्याध	पत्नियोंको	बाइता है ।
महामनस	सज्जनान्	प्रशंसति ।	महामनवाधि	सज्जनोकी	प्रशंसकरति है ।
जना	दिवीकस	अर्चन्ति ।	मनुष्य	दिवोकी	पूजते है ।
मिच्छुकाः	उदारचेतस	गच्छति	मिछारो	उदारोके पास	जाते है ।

अपइ ।

इइ ।

इन्द्र	प्रचेत	निदति ।	इन्द्र	प्रचेतसं	निदति ।
बाल*	चन्द्रमां	पश्यति ।	बाल	चन्द्रमस	पश्यति ।
दिवीका	जिन	अर्चति ।	दिवीकस	जिन	अर्चति ।
वनौकौ	यन	गच्छति ।	वनौका	धन	गच्छति ।
महामना	तपस्विन	अर्चत ।	महामनसौ	तपस्विनं	अर्चत* ।
जना	दिवीका	अर्चति ।	जना*	दिवीकस,	अर्चति ।
विहाया,	आकाश	गच्छन्ति ।	विहायस*	आकाश	गच्छति ।
उद्यमसौ	सुखं	त्यजति ।	उद्यमस	सुख	त्यजति ।

श्रीशे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वनौका दिवोकास त्यजति, प्रशंसति, प्रचेतस, विहाया, वेधा, महामनसं, उद्यमसौ, उदारचेतस, कांचत, यच्छति ।

यइ कपो—

नृप वेधां पृच्छति, विहायसौ नियसन्ति, इन्द्र प्रचेता रिपति, चन्द्रमौ प्रकाश यच्छति, महामन ध्यानिन च्छति ।

संज्ञत बनाये—

। उदारचित्तवाने धर्म देते हैं । मध्याको माघण पूजते हैं । पक्ष स्वर्गको जाता है । जङ्गली जङ्गलको छोड़ता है । पक्षो आकाशको जाते हैं । मेष चन्द्रमाको ठारता है ( पाच्छादयति ) लडके चन्द्रमाको देखते हैं । दुवासा शकुन्तलाको शाप देता है ( शपति ) ।

वेषस, यद्के ६२ ।

एक०	दि	षड्
प्रथमा—वेषा	वेषी	वेषस
द्वितीया—वेषस'	,,	,

### धात्वर्थ<sup>०</sup>

भाव	चर्	अन्त्य	एक	दि	षड्
याचञ् मांगना	( याच् + च + ति )	याचति	याचत	याचति ।	
शपौष् शापदेना	( शप् + च + ति )	शपति	शपत	शपति ।	
वसो निवासकरना	( वस् + च + ति )	वसति	वसत	वसति ।	

### चतुर्दश पाठ ।

वसुभागांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ विद्वान्	अथ	मनति ।	विद्वान्	अथका	मनन करता है ।
भेधायो	विदास	अनुव्रजति ।	उद्विमान्	विधान्के	पोछे खडता है ।
गच्छत	तस्मिन्वांस	पश्यति ।	जातेहये	वेदुषीकी	देखते है ।

कतां	कर्म	क्रिया ।	कता	कर्म	क्रिया
जन्मवान्	पुण्य	जिघ्रति ।	जानेवाना	खकी	ए घता है ।
तस्थिवान्	जन्मवांस	पृच्छति ।	घेठा हुआ	जातेहुयेको	पूछता है ।
२ विद्वांसौ	ग्रथान्	मनत ।	दो विद्वान्	ग्रन्थोंकी	मननकरते है ।
राजा	विद्वांसौ	पृच्छति ।	राजा	दो विद्वानोंकी	पूछता है ।
जन्मवांसौ	तस्थिवांसौ	पश्यत ।	जानेवाले	दो बैठहुयोंकी	देखते है ।
तस्थिवांसौ	पुण्य	जिघ्रत ।	दो बैठेहुये	फूल	ए घते है ।
मेधावो	पेचिवांसौ	पृच्छति ।	बुद्धिमान्	दो पकानेधुयो को	पूछता है ।
३ विद्वांस	धर्म	उपदिशति ।	विद्वान् लोग	धर्मका	उपदिशदते है ।
नृप	विदुष	पृच्छति ।	राजा	विद्वानोंकी	पूछता है ।
जन्मवांस	तस्थुष	पश्यति ।	जानेवाले	बैठे हुयेको	देखते है ।
तस्थिवांस	जग्मुष	पृच्छति ।	बैठे हुये लोग	जातेहुयोंकी	पूछते है ।
शशुवांस	ग्राम	गच्छति ।	मुननेवाले	ग्रामकी	जाते है ।
छात्रा'	पेसुष	गदति ।	विद्यार्थी	पकानेवालोंकी	कहत है ।

गोचे लिखे शब्दोंकी व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

शशुवान्, मनति विदुष, तस्थुष, जग्मुष, पेचिवांसौ, जिघ्रति, अणत, त्यजति ।

नोचे लिखे वाक्योंकी ग्रह करा—

विद्वान् धर्म उपदिशति, राजा पेचिवानौ पृच्छति, जन्मवानौ पुण्य जिघ्रत, श्रुत्या तस्थिवान् पृच्छति ।

वस्, भागांत विरस शब्दों ६२ ।

एक०

द्वि०

तृ०

प्रथमा—विद्वान्      विद्वांसौ      विद्वांस  
द्वितीया—विद्वांस'      ,,      विदुष'

## पञ्चदश पाठ ।

## इयम् भागात् ।

कर्ता	कर्म	दिया ।	कर्ता	कर्म	दिया ।
१ गरीयान्	सघीयांसं	आदिशति	बग	छो/छो	बाग टंगा है ।
कनीयान्	श्रेयांस	कांक्षति ।	छोटा	बड़े को	चाहता है ।
व्यायान्	यधीयांस	उपदिशति	कनिष्ठ	बड़े को	उपदेश देता है ।
दृष्टीयान्	सुद	तुदति ।	दरन	परको	रोना देता है ।
२ गरीयांसी	महिमान	कांक्षत ।	दी बड़े जने	कनिष्ठको	चाहते हैं ।
साधु	कनीयांसी	सुवति ।	साधु	दी धीमेको	सुभा है ।
मघायासो	श्रेयांसी	इच्छत ।	दी धीरे	दी तेज(पदान)को	हत्या करते हैं ।
व्यायासो	यधीयासो	उपदिशत ।	नी बड़ने	दी छोटीको	उपदेश देते हैं ।
३ गरीयास	मघीयस	आदिशति ।	बड़े शाय	छोटीको	बाधा देते हैं ।
कनीयांस	श्रेयस	कांक्षति ।	छोटे शाय	बड़े बन्धुकी	चाहते हैं ।
व्यायांस	यधीयस	उपदिशति ।	बड़शाय	कनिष्ठको	उपदेश देते हैं ।
साधु	कनीयस	सुवति ।	साधु	छोटीको	सुभा है ।

निर्दिष्टित शब्दोंकी व्यवहारमें साकर बाध बनायी—

गरीयान् सघीयांसो, व्यायस, श्रेयांसो, सुवति, तुदति, मनत, यधीयस, निघ्नति ।

रुजत बनायी—

छोटे लोग बड़े जनोंका अनुगमन करते हैं । बड़े लोग छोटीको उपदेश देते हैं । कनिष्ठ श्रेष्ठवस्तु चाहते हैं । बसयान् कमजोरको पीडा देता है । साधुनोग गौरववालोंको निन्दा करते हैं । श्रेष्ठ लोग राजाको कहते हैं । अन्यासो श्रेष्ठको उपदेश देते हैं । कनिष्ठ प्रेम चाहते हैं ।

एव गरी—

ज्यायान् धमे उपदिशत । लघीयान् ज्यायान् नमति । कनोयानो  
पात्रां दियति । गरीयान् वनोयसी गच्छत । विद्वान् गरिमां  
निदति ।

इत् भागोत् गरीयस इच्छे चप ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—गरीयान्	गरीयांसी	गरीयांस
द्वितीया—गरीयांस	,	गरीयस'

### धात्वर्थ

धातु	चर्	प्रत्यय	एव०	वि०	बहु०
तुदोञ्	पोडादेना	( तुद् + च + ति )	तुदति	तुदत	तुदति ।
कुवि	टाकना	( कु व् + च + ति )	कु वति	कु वत	कु वति ।
सृ	सलना	( सर् + च + ति )	सरति	सरत	सरति ।
शूज	शब्दकारना	( शूज् + च + ति )	शूजति	शूजत	शूजति ।
भ्रमु	घूमना	( भ्रम् + च + ति )	भ्रमति	भ्रमत	भ्रमति ।
घ्रा (जिघ्र)	सू घना	( जिघ्र + च + ति )	जिघ्रति	जिघ्रत	जिघ्रति ।
धा (धम)	फू कना वजाना	( धम् + च + ति )	धमति	धमत	धमति ।
शोञ्	लेजाना	( नय् + च + ति )	नयति	नयत	नयति ।
सृ (धाव)	दौडना	( धाव् + च + ति )	धावति	धावत	धावति ।
पत्सृ	गिरना	( पत् + च + ति )	पतति	पतत	पतति ।
स्था (तिष्ठ)	वैठना	( तिष्ठ् + च + ति )	तिष्ठति	तिष्ठत	तिष्ठति ।
मना (मन)	अभ्यासकारना	( मन् + च + ति )	मनति	मनत	मनति ।



## पोडग पाठः ।

पु लिग विगेष्य (१) गण्टेके साद्य

विशेषका प्रयोग ।

१	क्रुह	इम	जलभरित	सुद	हापी	जलधे	भरेपुये	नवारको	जाता
			तडाग	गच्छति ।					ई ।
	सूत	मत्कुण	दु सद्	मता	बुधा	सुगम	बरो	भारी	सन्तुको
			दुर्गध	त्यजति ।					साहता ई ।
	सुदर	बालक	शिष्यापूषं	सुन्दर	बाणक	दिशादिपूष	य वकी	पदता	
			ग्रथ	पठति ।					ई ।
	सुधक	व्याध	मरमान्	श्रीभी	बावा	स ई	पथिपेको	बाहता	
			विहगमान्	इच्छति ।					ई ।
	सुपक	रसाल	मिष्ट रस	पका	बुधा	बाम	मोडा	रस	दिला
			यच्छति ।						ई ।
२	धवनी	हमी	जलपूर्णो	वेत	दी	इ व	जलधे	पूषं	तडागको
			बाधापो	व्रजत ।					ई ।
	लोरुपी	छपीवनौ	विशाम्ने	श्रीशुनी	दी	किचाल	बडे	दी	रेसीको
			वनीवर्दी	काक्षत ।					साहति इ ।
	भक्ती	छात्री	शिष्टी	पाठको	मल	दी	विशार्थो	मिष्ट	दी
			धनुगच्छत ।						गुदचोकि
									पीके पीके
									बनति ई ।

१ विशेषका की लिग और बचन दोनों ई वही विशेषका होता है । सुपकावक शब्द प्रायः विशेषक होते हैं ।

३ भक्ता' श्रावका' धीतरागान्	भक्त श्रावक धीतराग जिन भगवान् की
जिनान् अर्चति ।	पूजते है ।
धीतरागा जिना' सुखकर धर्म	धीतराग जिनदेव सुखदायी धर्म का उपदेश
उपदिशति ।	दते है ।
जेना धाला आत्मनिर्दिष्टान्	जेनी लडके सचे देव से उपदिष्ट शास्त्री की
ग्रथान् पठति ।	पढ़ते है ।
चतुरमत्तय धाला सारगर्भान्	चतुरदुखिवाले लडके सारपूर्ण उपदेश
उपदेशान् काञ्चिति ।	थाइते है ।
उदारचेतस मुनय द्धितकारान्	उदारचित्तवाले मुनि द्धितकारी उपदेश
उपदेशान् वदति ।	कहते है ।
भीषणा अग्नय विशान्	भयंकर अग्निदां बड़े बड़े पीढ़ी को
वृक्षान् दहति ।	जलाती है ।
गृहशून्या साधव' सदरान्	घररहित साधुयोग सुन्दरजिनालयी को
जिनालयान् व्रजति ।	जाते है ।

अप्य ।

अथ ।

क्रुद्ध' गजा सजलान् तडाग	क्रुद्धा गजा सजल तडाग
गच्छति ।	गच्छति ।
अनगारिणी मुनि धीतरागान्	अनगारी मुनि धीतराग जिन
जिन नमति ।	नमति ।
विशाली शाल्मलितरव कृष्णी	विशाला शाल्मलितरव कृष्णान्
मीधान् कु वति ।	मीधान् कु वति ।
गुणवता जना धनिनौ जगान्	गुणवत जना धनिन जनान्
पृच्छति ।	पृच्छति ।
दुभुक्षिता पक्षिण उद्यान्	दुभुक्षितौ पक्षिणो उद्यान् पर्वतान्
पर्वतौ गच्छत ।	गच्छत ।

शोधे द्विविधे विशेषणी का प्रयोग कर वाच्य बनाये—

- ( ऋ ) सुदर, मलोमघ, मेध्य, भिक्षुक, लुब्धक, शक्ति, गभीर, शुभ्र, क्रूर, अचल, नेदिष्ठ ( अति समीप ), दविष्ठ ( अति दूर ), मूढ, धीर, श्वेत सुतीक्ष्ण ।
- ( ए ) मनोहारिन्, धनिन्, धानिन्, तेजस्विन्, वलिन्, भोजस्विन् ।
- ( ग ) उदारचेतस, महामासु, चद्रमसु, उग्नमसु, सुमनसु ।
- ( घ ) यत्नवत्, धनवत्, विद्यावत्, एतावत्, तावत्, कर्मवत् ।
- ( ङ ) भूर्तिमत्, आयुषात्, बुद्धिमत्, वपुषात्, धनुषात् ।
- ( च ) चारु, गुरु, लघु, तनु, षट्शु, षट्, दयालु, शयालु, प्राशु साधु ।
- ( छ ) दवीयसु, कनीयसु, अयसु, अन्वीयसु, लघीयसु, वलीयसु, व्यायसु ।
- ( ज ) अनन्यदृष्टि उदारमति, सरलबुद्धि, अचलमति ।
- ( झ ) स्पृशत्, तिष्ठत्, गच्छत्, गायत्, चलत्, हसत्, रुदत्, शृण्वत्, वदत्, यत्, क्षुधित, व्यथित, पीडित, चलित, दृष्ट, सृष्ट, कर्तव्य, पालनीय, म्रियमाण ।
- ( ञ ) विद्वसु, पेचिवस, शृशुवसु, जग्मिवसु ।

यह करो—

स्थान्नु गिरय चलत मेघान् स्पृशति । अचल अर्थं गुणहीन जनान् त्यजति । षट्शु नदा पर्वतपादान् स्पृशति । सरलमतीन् कृपका मूर्त्तिमत अश्मन पूजति । राजनीतिकुमलौ सम्राज बुद्धिमत मन्त्रिण पृच्छति । सयतचेता साधव दवीयस जनान् न गच्छति । तन् चद्र अस्पोयाम किरणान् विकिरति । उदारमतौ विपश्चित मनोहारिण उपदेशान् लिखति । अविष्ठ पशव नेदिष्ठान् लोकालय न त्यजति । क्षुधितौ व्याघ्रा निद्रितान् नर खादति । षट्शु भङ्गका मृतान् जनौ न खादति ।

संस्कृत वनाधी—

अच्छे आदमी दुखी आदमियों को नहीं सताते हैं । सबे पुरुष चोरो नहीं करते हैं । जैन लोग मांस नहीं खाते हैं । उड़ड़ लड़के अच्छी किताबें नहीं पढ़ते हैं । नम्र विद्यार्थी अपने (स्वकीय) गुरुओं को पूजते हैं । प्रजाप्रिय राजा प्रजाको सुख देता है ।

हिंनै वनाधी—

विहगमा मेघाच्छन्न गगन गच्छति । क्षुद्रा मधुकरा अपि स्वकार्यं न त्यजति । शीतल समोरण (वायु) इतस्तत (इधर उधर) प्रसरति । लोहित अग्नि हरित हृत्त दहति । ब्रम्हचारिण पाठालय व्रजति पठति च । चचला प्राणा सर्वान् जनान् त्यजति । प्रचड निदाघ (धूप) दिवस उष्य करोति ।

एक एक विशेषण रखकर वाक्य बनाओ—

—शिक्षक, —विद्यार्थिन प्रहरति । —गर्दभ—  
—यवान् खादति । —विहगमा—समुद्रतीर गता ।  
—अहि, —वकशिशून् खादति । व्याध—तडुलकणान्  
विकिरति । —शृगाल—करिण पश्यति । —मेघ—  
सूर्य कुवति । —पादपा जल इच्छति । —चातक—  
मेघ कांक्षति । —दावानल—वन दहति ।

उपरोक्त स्थान पर कर्ता और कर्म का प्रयोग करो—

—चक्रुलीन अपि शास्त्रज्ञ —अर्हति । —मतिमत्—  
—अचति । मधुरभाषिण—न विश्वसनीया । फलच्छाया-  
समन्वित—न कर्षनीय (काटना चाहिये) । मथरादय—  
स्वकीय—गता । पाशहस्ता—वन्यान् (वनके)—काक्षति ।  
सभया—निरापद—गच्छति । पर्यटन्—प्रसायमानाम्—

## परिशिष्ट ।

मयि ( मित ) इण्	१० ईकारात् वनदेइइत् (१)
प्र० सप्ता सप्ताया सप्ताय	पामणी पामाण्यो पामण्य
द्वि० सप्ताय " सप्तोन्	पामाण्य " "
सुधो ( अच्छी सुधिया ) गो चादि	कोट्टु ( ग्हाण, अंजुह ) इण्
प्र० सुधी सुधियो सुधिय	कोट्टा कोट्टागी कोट्टार
द्वि० सुधिय " "	कोट्टार " कोट्टुन्
दोष अकारात् खल्लु इण्	भू ( बाग्ने बाजा ) (२)
प्र० खल्लपु खल्लण्यो खल्लण्य	न् लुण्यो लुण्य
द्वि० खल्लण्य " "	लण्य " "
(१) पितृ ( पिता बाप )	शोकात् गो ( गाय गैल ) इण्
प्र० पिता पितरो पितर	गो गावो गाव
द्वि० पितर " पितून्	गां " गा.
ईकारात्—रे ( धन ) इण्	शोकारात् लो ( धन ) इण्
प्र० रा रायो राय	खो खायो खाय
द्वि० राय " राय	खाय " "
(२) अकारात् मिवज ( इव ) इण्	अकारात् अन् ( कुता ) पुण् इण्
प्र० भियक ( म् ) भियजो भियज	खा खानो खान
द्वि० भियज " "	खान " खान
पयिन ( मार्ग ) इण्	महन् ( महा ) इण्
प्र० पया पयानो पयान	महान् महती महति
द्वि० पयान " पय	महति " महति
(३) ददन् ( दैता ददा ) इण्	पुमम ( पुदय ) इण्
प्र० ददत् ददतो ददत	पुमान् पुमांसो पुमांस
द्वि० ददत् " "	पुमांसं " पुंस

१—'सुधी' 'श्री' की लोह कर येष ईकारात्तो के इव इयके समास होते । २ इण् कारात् पुनम वर्षाम को लोह कर इव इण् जिनके चलन में भूँ है एतत् इव लूँ के समास होते है । ओर सज चारोंके तथा येष अकारात्तोके खल्लपूके समास । ३ यद्यत् कामादि द्वि० व सव्यदूके इव पिङ्गके समास, येष अकारात्तोकी दाट के समास । ४ जिन मन्थोंके चलने भज खज यज राज माज है उनसे तथा परिव्राज, दज इनसे भिन्न मन्थोंके इव इनसे समास दाट । ५ इसी प्रकार दधन् लघन् मघन् जाग्रन्, ददिदन्, माघन् अकासन् मन्थोंके इव होते ।

नीचे लिखे शब्दोंमें बाव बनावो—

सखाय , भ्रामणो , ( गांधका सुखिया ) क्रोष्टार , सुधो , जामा  
तरौ , खान , पथान , भिषक् , पुमान , गा , युन ।

हिंदो बनाओ—

महान् कोलाहल वर्तते । पुमांस परस्पर विवदते ( विवाद  
करते हैं ) । सुधिय शीघ्र एव शास्त्रज्ञातार भवति । खलख  
( खलियान साफ करने वाला ) खल ( खलियान ) गच्छति । गाव  
चेच व्रजति । कृपका गा इच्छति । लुप धान्य कृतति । राजा  
राय वितरति । दोना पुमांस आशोर्वादान् पतति । मूर्खा  
शिशव ग्लाध इच्छति । राम कृष्ण जात एत एक भिषग्  
भानेय । सर्पा तथा खला च कुत्सित पथान श्रयति । त्यागो श्रेष्ठी  
उपकारार्थं महत राय ददत् पुण्य अर्जति । आमोणा ( गांधके )  
पुमांस आमण्य मानति । ग्लौ आकाश द्योतते । देवर विलोक्य  
( देख कर ) भाटजाया हसति । विद्वांस नर जिन अर्धति ।

सकल बनाओ—

सडका चद्रमाको देखता है और रोता है । रातको ( नक्त )  
श्याल बोलते हैं । सेनापति ( सेनानी ) सेनाको आज्ञा देता है ।  
पिता पुत्रको कहता है । पुत्र पिताका सम्मान करता है । लोग बहुत  
धन कामाते है पर लोभ नहीं छोडता है । जो(वे)सोधि मार्ग पर चलते  
है वे ( ते ) बुद्धिमान् हैं । कुत्ता जानवर है तो भो ( तथापि )  
स्वामिभक्त होता है । रातको धनको रक्षा करता है । इस लिये  
लोग कुत्तोंकी भी रक्षा करते है । बैल बडा उपकारी जोव है घास  
खाता है पर बडा परिश्रम करता है । दामादको ( जामाद ) श्वशुर  
उपदेश देता है । धनको धारता हुआ ( दधत् ) भो कृपण कुछ  
( किमपि ) दान नहीं देता है । कजूस आदमी बडा उपकारी है  
क्योंकि मरणानतर सब धन यहीं ( अत्र एव ) छोड़ जाता है । सारथि  
( सव्येष्ट ) रथके पास जाता है । युवा लोग अलवान् होते हैं ।

## द्वितीय अध्याय ।

परांतस्तोभिंग ।

प्रथम पाठ ।

पा—(१)—जागत ।

कर्म	कर्म	विधा ।	कर्म	कर्म	विधा ।
१	वालिता (०) कर्ता	उद्यति ।	करको	करा ( कर्त ) को	करको है ।
	मनोरमा	कथा	गदति ।	मनेरमा	करा करती है ।
	कन्या	विद्या	गमति ।	कन्या	विद्या को पढ़ती है ।
	कनिका	मीमांसा	वितरति ।	कनिका	दती है ।
	पिपीनिका	विपानिका	कृष्टति ।	पिपीनिका	विपानिका को बनाती है ।
२	यक्ष	कन्ये	तर्पति ।	दीव्यो	द' कन्येको कर्ता है ।
	भते	प्रासादं	भुषति ।	दीव्यो	पराको कर्त्तव्य करती है ।
	वामिके	सते	मिषति ।	दीव्यो	दीव्यो को कर्ता है ।
	वामिको	शास्त्रे	गुह्यति ।	दीव्यो	दीव्यो को कर्ता है ।
	मुनि	विद्ये	ध्यायति ।	मुनि	दीव्योको ध्यान करता है ।
३	वालिता	भता	विधति ।	वालिता	भताको कर्ता है ।
	पत्न्या	कथा	तजति ।	पत्न्या	कथाको कर्ता है ।
	भृत्य	शास्त्रा	सुपति ।	भूतय	कथित है ।
	मुनि	विद्या	ध्यायति ।	मुनि	विद्याको ध्यान है ।

१—पुनिक इय प्रकारत कर्ता को दीव्य—( वाजारांत ) कर दीव्यो के प्राय  
 श्रीनिव ही जाते हैं । तस्यै—वाच—वाच भूया, वाजारांत इय प्राय श्रीनिव  
 होते हैं । २—जिन पुनिक प्रकारत कर्ताको कर्ता 'क' हीन सतको प्रोक्ति कर्तासे  
 'क' को पढ़िसे 'क' को 'क' का कर्ता—तस्यै—वाचकका श्रीनिव कर्ता ही—  
 'वाचका पढ़िसे विपमो कृपा कर इयको 'क' को पढ़िसे 'क' ही को 'क' को इ को  
 कर्ता ही—वालिता हीया ।

निबलिखित शब्दोंकी प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

उद्यत, चुटति, लुपति, सिद्यत, मनंसि, तर्जत, गदति, कन्या, बाले, भाषां, छाया, कथा, विद्ये, दया, दृष्या, रमा, रामे, द्विसा ।

भूष करो—

बालिका विद्यां इच्छति । कन्ये भृत्य तर्जति । बाला पक्षिण काचति । कृपा प्रेमार्थं अनुगच्छत । विद्या बालिकान् भूषति । बालिके साधून् वृच्छति । भृत्या लतान् जेषति । पाठिकौ कन्ये तर्जत । विद्या शोभ पितरत ।

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उद्य	सोचना ( उद्य् + अ + ति )	उद्यति,	उद्यत,	उद्यति ।	उद्यति ।
गद्	कहना ( गद् + अ + ति )	गदति,	गदत,	गदति ।	गदति ।
मन्	सोचना ( मन् + अ + ति )	मनति,	मनत,	मनति ।	मनति ।
ट (१)	तिरना ( तर + अ + ति )	तरति,	तरत,	तरति ।	तरति ।
कृड	काटना ( कृड् + अ + ति )	कृडति	कृडत	कृडंति ।	कृडंति ।
तर्ज	डाटना ( तर्ज् + अ + ति )	तर्जति,	तर्जत,	तर्जति ।	तर्जति ।
भूष	शोभितकरना ( भूष् + अ + ति )	भूषति,	भूषत,	भूषति ।	भूषति ।
रोह	उगना ( रोह् + अ + ति )	रोहति	रोहत,	रोहंति ।	रोहंति ।
चुट	काटना ( चुट् + अ + ति )	चुटति	चुटतः,	चुटति ।	चुटति ।
ध्या	ध्यानकरना ( ध्याय् + अ + ति )	ध्यायति,	ध्यायत,	ध्यायति ।	ध्यायति ।
शस्	स्तुतिकरना ( शस् + अ + ति )	शंसति,	शसत,	शंसंति ।	शंसंति ।
जेष	सौचना ( जेष् + अ + ति )	जेषति,	जेषत,	जेषति ।	जेषति ।
लुप	लुपट्टकाटना ( लु प् + अ + ति )	लुपति	लुपत,	लुपति ।	लुपति ।



एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—विद्या	विद्ये	विद्या ।
द्वितीया—विद्या	विद्ये	विद्या ।

इस प्रकार सब 'या' शब्दों के रूप आगना ।

उदाहरण—

बकरी ( अजा ) घास खाती है । घोड़ी ( अग्ना ) तनाय को खाती है । घटिका खोन्तार को खाती है । कोयल ( कोकिला ) बोलती है । मूषिका छिद में घुसती है ।

## द्वितीय पाठ ।

### इकारान्त (१) ।

कृता	कर्म	किया ।	कृता	कर्म	किया ।
१ बुद्धि	मानुष	भूयति ।	बुद्धि	मनुष्यको	भूयित करती है ।
रात्रि	दीप्ति	विस्रति ।	रात्रि	सज्जामिकी	दिपा देती है ।
वृष्टि	शोषधि	शेषति ।	वृष्टि	शोषधिकी	शोषती है ।
कांति	वालिका	भूयति ।	कांति	लड़कीको	भूयित करती है ।
दास	जमि	मथति ।	दास	लहरकी	मथती है ।
२ शोषधी	रात्रि	भूयति ।	दो शोषधी	रात्रिकी	भूयित करती है ।
वालिका	जमी	पश्यति ।	लड़की	दो लहर	देखती है ।
कन्ये	शोषधी	सिचति ।	दो कन्यायें	दो शोषधी	शोषती है ।
३ शोषधय	रात्रि	भूयति ।	शोषधियाँ	रात्रियों को	भूयित करती है ।
वृष्टय	शोषधी	सिचति ।	वृष्टि समुदाय	शोषधियोंकी	शोषता है ।
निद्रा	प्रमत्तो	शोषति ।	निद्रा	प्रमादी को	शुष्क करती है ।
तरय	नद	तरति ।	नावे	नालिकी	धार करती है ।

१—जिन शब्दों के अन्त में 'ति' होती है वे शब्द प्रायः कौचित्त में होते हैं ।

अपठ ।

पठ ।

दीप्तय'	मानवान्	लुभति ।	द्वैक्षय	मानवान्	लभति ।
मूर्खा	गतय	न पश्यति ।	मूर्खाः	गति	न पश्यति ।
स्मृति	बालक	भूषति ।	स्मृति	बालक	भूषति ।
वृष्टो	धूलि	वेपति ।	वृष्टय	धूलि	वेपति ।
व्रततय	पादप	श्रयति ।	व्रतति (लता)	पादप	श्रयति ।

निम्नलिखित शब्दादि वाक्य वगाथो—

( क ) विलसत, वेपति, मथति, पोषत, कुचति, सिचत, शोषधय, वृत्ति (व्यापार), गती, पक्षय, धूलो, स्मृतिः (स्मरण), कृतयः, बुद्धी, श्रुति, गति व्रततस्य' ( पक्षि, लता ) जर्मि, तिथी, तरौ, ( नाव) कटि (कमर) नाडो, श्रेणय, रात्रय, अगुली ।

दि शो वगाथो—

तारका रात्रौ भूषति । पयोमुच जर्मिं पोषति । साध्व कांतिं न कांक्षति । शिशव' विद्वगम ( पक्षी ) पक्षी पश्यति । वृक्षश्रेणि शोभते ।

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विल	छिपाना ( विल् + अ + ति )		विलति,	विलत,	विलति ।
विष्	सीधना ( वेप् + अ + ति )		वेपति,	वेपत,	वेपति ।
लुभ	सुखकरना ( लुभ् + अ + ति )		लुभति,	लुभत,	लुभति ।
मथ	मथनानष्टकरना ( मथ् + अ + ति )		मथति,	मथत,	मथति ।
पोष	पुष्टकरना ( पोष् + अ + ति )		पोषति,	पोषत,	पोषति ।
कुच		+ अ + ति )	कुचति,	कुचत,	
मर्ष		+ अ + ति )	मर्षति,	मर्षत,	

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	बुद्धि	बुद्धौ	बुद्ध्यः ।
द्वितीया—	बुद्धि	”	बुद्धो ।

—\*—

## द्वितीय पाठ ।

ई—कारांत ।

वर्ता	कर्म	श्रिया ।	करां ।	कर्म	श्रिया ।
१ कुमारी	गदो	गजति ।	कुमारो	गदीका	जाती है ।
शुगी	घटथी	अजति ।	शुगो	बनको	जाती है ।
जननो	कुमारीं	तर्दति ।	माता	कुमारीको	भारती है ।
धोयधो	रजनीं	भूपति ।	धोयरी	राखी मूर्ति	बसती है ।
२ भगिन्यो	तरण्यो	प्रविशत ।	दो बहने	दो नारीं	बैठती है ।
जनन्यो	कदस्थो	धामत ।	दो माग्ये	दो केली	खाती है ।
धोययो	धुन्यो	गच्छत ।	दो धोयरी	दो नन्दियोकी	जाती है ।
कुमाथी	जनन्यी	महत ।	दो कुमारी	दो माताथीको	पूजती है ।
३ जनन्य	अपराधान्	मर्पति ।	माग्ये	अपराध	बना करती है ।
कुमार्य	शुगी	आमृशति ।	कुमारो	हरिदियोको	कृती है ।
नद्या	अखि	प्रतिगच्छति ।	नदियां	समुद्रके	प्रति जाती है ।
अद्रमा	रजनो	सांछति ।	अद्रमा	राखियोको	चिन्हित करता है ।

नोहे जिसे शब्दोंका प्रयोग कर शक्य बनाओ—

( वा ) विदुष्यो(१), गुणवतो(२) मानिन्य, सुदरो, घटथ्यो,  
श्रीमती, गायत्य, (३) गच्छती विभ्व्यो, जायत्य, तप

१ दोष ईकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( २ ) मन् (बन्) ईयन् तथा 'इम  
भागांत शब्द अंतमे 'इ लगा'नेसे स्त्रीलिङ्ग ही जाता है । अं से—गुणवत् (पु लिङ्ग)का  
स्त्रीलिङ्ग 'गुणवतो' और मानिन्का 'मानिनी' कर्तीयसका 'कर्तीयसी' होगा । ( ३ ) अ

स्त्रिणी, वराकिन्य ( दीम ), गरीयस्य, ज्यायस्यी, कनीयस्य, लज्जावती, मनोहारिणी, मृगयो ( मटोको ), भक्तिमती, गुर्वी, पटोयसी ( अति चतुर ) ।

( ख ) चाङ्गति, अर्पत, मृशति, चामति, तर्दत, क्रामति ( उल्लघन करना ), अजत, छडति, मङ्गत, तर्दति, चामत ।

पद ।

पद ।

तिष्ठती	गच्छती	वदति ।	तिष्ठत्य	गच्छती	वदति ।
विद्युथी	रुदत्य	तर्जत ।	विद्युथी	रुदतो	तर्जत ।
मानिन्य	गरीयसी	तर्दत ।	मानिन्यी	गरीयसी	तर्दत ।
कनीयसी	करिष्य	पश्यति ।	कनीयसी	करिषी	पश्यति ।
वराकिन्य	शाखा	सुपत ।	वराकिन्य	शाखा	सुपति ।
राजपुत्र	वन	क्रामति ।	राजपुत्र	वन	क्रामति ।
पापीयसी	धर्म	निदति ।	पापीयसी	धर्म	निदति ।
जैनवाणी	मति	भूषत ।	जैनवाणी	मति	भूषति ।
भक्तिमत्ये	जिन	अर्चत ।	भक्तिमत्यौ	जिन	अर्चत ।
हसो	हस	तर्दत ।	हस्यौ	हस	तर्दत ।

स लय वगणो—

मानिनी स्त्रियां वङ्ग्यम् ( गौरव ) चाङ्गती है । दो सुदरो दो हरिणियों को छूतो है । अतिष्ठवा ( ज्यायसी ) छोटी छोटी स्त्रियों ( कनीयसी ) को उपदेश देतो है । रूपयतो गुणवतोको मारता है । पापिन दु ख पातो है । लज्जावानी स्त्री विनय करतो है ( विन-

( मट ) भाग्योक्त शब्द भी 'इ लया देनेसे झोजिन हो जाते है पर लनके 'ती'से पहिले 'न' भी माव चाया है—जैसे भाष्य+इ=भाषती हुआ पर 'ती'से पहिले 'न' चाया तो भाषनती हुआ । ऐसे शब्दोंको भाषती इधमकार अनुस्वारस भी लिखते है ।

यति)। घ्राहणी शूद्राको ताडना देतो है। पाठिका (छपाध्यायी) ललकियोंको कहती है। बहिन (भगिनी) बहिनको छूती है। कुमार (कुनान) मट्टीकी (सूत्रयो) सूति घनाता है। माताये जैनवाणीको पूजती है। नदियां समुद्रको छाती है। गानेवालो (गायिका) गीत गातो है।

### धात्वय<sup>०</sup>

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
क्रमु	उल्लघना (क्राम् + अ + ति)		क्रामति,	क्रामत,	क्रामति ।
अज	जाना (अज + अ + ति)		अजति,	अजत,	अजंति ।
तद	मारना (तर्द् + अ + ति)		तर्दति,	तर्दत,	तर्दति ।
विशौ	भीतरजाना (विश् + अ + ति)		विशति,	विशत,	विशति ।
चम्	खागा (चाम् + अ + ति)		चामति,	चामत,	चामति ।
सर्ज	वमाना (सर्ज् + अ + ति)		सर्जति,	सर्जत,	सर्जंति ।
मह	पूजना (मह + अ + ति)		महति,	महत,	महति ।
सृशौ	छूना (सृश् + अ + ति)		सृशति,	सृशत,	सृशति ।
साह्	चिन्हितकरना (साह् + अ + ति)		साहति,	साहत,	साहति ।
जर्ज	डांटना (जर्ज् + अ + ति)		जर्जति,	जर्जत,	जर्जंति ।
(वि)	थोज् विनयकरना (नय् + अ + ति)		नयति,	नयत,	नयति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम—नदी	नद्यौ	नद्य
द्वितीया—नदीं	नद्यौ	नदो

चतुर्थं पाठ ।

च कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ धेनु*	यत्सान्	त्वजति ।	गाय	बड़फोंकी	बोझती है ।
गोप	धेनु	सु चति ।	गवाहा	गायकी	झोंकता है ।
भूपिक	पाशस्त्रायु	छडति ।	मूसा	जालकी तांतकी	काटता है ।
रेणु	घृथिथीं	विनति ।	रेण	घृथिथीकी	टांकती है ।
२ धेनु	छायां	इच्छति ।	दोगधें	छाया	चाहती है ।
गोपाल	धेनु	सु चति ।	गोपाल (गवाना)	ही गायकी	झोंकता है ।
पिपीलिका चच्		दशति ।	चि बटो	दो चोंचखी	काटती है ।
भूपिक	पाशस्त्रायु	छडति ।	मूसा	ही जालकी तांतकी	काटता है ।
३ धेनुव*	गोशालां	गच्छति ।	गाधें	गोशालकी	जाती है ।
भूपिक	पाशस्त्रायु	छ तति ।	मूसा	पाशस्त्रायुकी	काटता है ।
वृष्टि	रेण	सिचति ।	पवां	धू लिकी	सोंचती है ।
रेणव	भाकाश	कु चति ।	धूलिके लण	बाकाशकी	टांकती है ।

निम्न लिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

( क ) ज्ञामति, मनति, चामत, गदति, भर्षति, सु चत, म च ति, रोहति, लाहति, कु चत ।

( ख ) चचव, धेनु, स्त्रायव रञ्जु (रञ्जो), तनव, ( शरीर), धेनु, करेणव, ( हस्तिनी ) ।

चचव ।

चच ।

रञ्जु	धेनु	लाहति ।	रञ्जु	धेनु	लाहति ।
धेनु	नदीं	गच्छति ।	धेनुव	नदीं	गच्छति ।
रेण	धेनुव	भूषति ।	रेणु	धेनु	भूषति ।
इन् (पू छ)	धानरी	लाहति ।	इन्	धानरी	लाहति ।
भाहार,	तनव,	पोषति ।	भाहार	तन	पोषति ।

संज्ञागत शब्दाधी—

दो भाई दो गायोंको देखते हैं । हिंदुलोग गायोंको रखा करते हैं । ब्राह्मण छायाको नहीं छूते हैं । छटि चींचको भिगोती है । भ्रमर दो पूछों ( हनु ) को काटते हैं । पुष्प रणुयें राजमार्गको चिह्नित करती हैं । लड़को रखोको स्नातो है ( धानपति ) भीड़ लड़की अकेली ( केयला ) घरको नहीं जाती है । नारी बाजार ( हाट )को जाती है ।

एकशब्द	द्विशब्द	बहुशब्द
प्रथमा—धेनु	धेनु	धेनुव
द्वितीया—धेनु	"	धेनु

## पंचम पाठ ।

लकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ वधू	स्वामिन	पृच्छति ।	वद्	पतिको	पूछती है
स्वामी	वधू	वदति ।	स्वामी	वद्को	कहता है
श्वश्रू	वधू	श्रयति ।	सासुर	वद्को	छूती है
चमू	शत्रुसेनिकान्	क्षयति ।	शेना	शत्रुओंको सेनाको	भीतती है
सेनापति	चमू	गूहति ।	सेनापति	सेनाको	छिपाता है
२ वध्वी	श्वश्रूपादान्	सृशयति ।	दो वद्	सासुरके पैरोंको	छूती है
देवर	वध्वी	प्रणमति ।	देवर	दो वद्को	प्रणाम करते हैं
वधू	श्वश्रू	पृच्छति ।	वद्	दो सासुरको	पूछती है
चम्वी	विश्राम	कांचति ।	दो सेनायें	विश्राम	चाहती हैं

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
३ वध्व'	शत्रून्	प्रणमन्ति ।	बहुये	सासुको	प्रणाम करती हैं ।
सीता	शत्रून्	वदति ।	सीता	सासुओंको	कहती है ।
श्वश्रुव	वध'	तर्जति ।	सासु	बहुओंको	ताड़ना देती है ।
चम्ब	शत्रुचम्बू	जयति ।	सेनायें	शत्रुसेनाओंको	जीतती हैं ।

संज्ञत बनायी—

बहुयें पतियोंको ससुष्ट करती हैं । दो बहुयें राजसेनाको देखती हैं । सासु बहुओंको मूछती है । सेना विदेशको जाती है । पानी (जल) शरीरको भिगोता है । शरीर व्यायामको चाहता है । वटहन (कारू) लकड़ीको छीलती है ( तच्छति ) । सेनापति सेनाको छोड़ता है । सासु बहुओंको उपदेश देती हैं ।

नीचे निम्ने शब्दोंसे वाक्य बनायी—

वध्व', तर्जति, गूहत, श्वश्रुव, चम्ब, चम्बू, कारू, तनु ।

यह करो—

स्वामिन वध्व' पृच्छति । वधु झोच्छति । चम्ब शत्रु न जयति ।  
कर्मकरा कारू वदति ।

### धात्वर्थ

शासु	चर्ष	प्रथय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
झीच्छ	लज्जाकरना(झीच्छ् + ष + ति)	झीच्छति, झीच्छत, झीच्छति ।			
जि	जीतना ( जय् + ष + ति )	जयति, जयत, जयति ।			
गुह्यीष्	छिपाना ( गुह् + ष + ति )	गूहति गूहत, गूहति ।			
मृशौ	छूना ( मृग् + ष + ति )	मृशति, मृशत, मृशति ।			
णम	नमस्कारकरना ( नम् + ष + ति )	नमति, नमत, नमति ।			



	वि०	श०
प्रथमा— वृ	वधो	वधः ।
द्वितीया— वधु	"	वधः ।

पठ पाठ ।

वृ—कारात् ।

वर्ता	कर्म	विता ।	वर्ता	कर्म	विता ।
१ माता	दुहितः	पूजयति ।	मा	पुत्रको	पूजती है ।
मनादा	वधु	तर्जयति ।	मन्दी	पुत्रको	तर्जती है ।
वध	मनादः	तर्जयति ।	वध	पुत्रको	तर्जती है ।
२ दुहितरो	मातर	अपचरति ।	दुहितरो	माता	पूजती है ।
कर्म	मातरो	प्रपद्यते ।	दुहितरो	माताको	पूजती है ।
मनादरो	वधु	तर्जयति ।	मन्दी	पुत्रको	तर्जती है ।
वधु	मनादरो	रिपयति ।	वध	पुत्रको	तर्जती है ।
३ दुहितर	मातृ	अपचरति ।	दुहितर	माताको	पूजती है ।
मनादर	वधु	तर्जयति ।	मन्दी	पुत्रको	तर्जती है ।
वधु	मनादु	रिपयति ।	वध	मन्दीको	पूजती है ।

वधः ।

वधः ।

माता	दुहितार	वदति ।	माता	दुहितर	वदति ।
दुहितार	मातृ	महति ।	दुहितर	मातृ	महति ।
वध	मनादन्	रिपयति ।	वध	मनादु	रिपयति ।

निम्न लिखित शब्दोंमें बाक्य बनाओ—

महति, मनादा, मनादरो, रिपयति, तर्जयति, मातर, मातृ,  
दुहितर, तर्जयति, महति, यातर (पतिके भाईकी स्त्री)

एकवचन	द्विव	बहुवचन ।
प्रथमा—दुहित्वा	दुहितरौ	दुहितर ।
द्वितीया—दुहितर	”	दुहितृ ।

सप्तम पाठ ।

व्यजनांत—स्त्रीलिङ्ग ।

च—कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ जिनवाक्	तत्त्व	भाषते ।	जिनवाची	तत्त्वोंका	वचनकरती है ।
बालक	वाच	भाषते ।	बालक	बाची	बोळता है ।
त्वग्	पशु	घेष्टते ।	खाल	पशुको	घेष्टित करती है ।
परिव्राट्	त्वच	ईक्षते ।	रुन्वाची	वचके बङ्गलको	चाहता है ।
भर	देवरुच	लोचते ।	मनुष्य	देवकीकान्ति	देखता है ।
रुक्	आहाति	कवते ।	दीवि	आकारको	ढकती है ।
कविवाक्	देवान्	कथ्यते ।	कविकी बाची	देवोंकी प्रशंसा	करती है ।
जन	त्वच	ईक्षते ।	मनुष्य	खालकी	देखता है ।
२ श्रावकौ	जिमरुची	ज्ञाघेते ।	दीनारुक् दोजिनकी	कान्तिकी प्रशंसा	करती है ।
कन्यावाची	मातर	कथ्येते ।	कन्याओंकी दो बाची	माताकी प्रशंसा	करती है ।
मानकी	वाची	भाषते ।	दा लङ्के	दा बाणी ( वचन )	बाधते है ।
मरौ	देवरुची	लोचते ।	दा जन	दो देवकान्ति	देखते है ।
कवी	वाची	ईक्षते ।	दो कवि	दा (प्रकारको) बाची	चाहते है ।
३ रुच	देवान्	घेष्टते ।	कान्तिया	देवोंकी	घेष्टित करती है ।
मराः	देवरुच	लोचते ।	मनुष्य	देवकान्तियोंकी	देखते है ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
वाच	जिमान्	कत्यते ।	वाची	जिनकी	प्रमंसा करती है ।
कवय	वाच	इच्छते ।	कवि वाचीया (नामा प्रहारकी)	की	चाहते हैं ।
वासका	वाच	भाषते ।	वाचक	वाची	बोझते हैं ।
रुच	प्राकृतिं	कथते ।	कांतिया	प्राकृतिकी	वांछती है ।

चपट

पट

वटु	पटच (वेदशाखा)	ईच्छति ।	वटु	पटच	ईच्छते ।
पथिकी	वनस्थलीं	इच्छत ।	पथिकी	वनस्थलीं	ईच्छते ।
गिरय		शोभति ।	गिरय		शोभते ।
लते	वृक्ष	वेष्टत ।	लते	वृक्ष	वेष्टते ।
वानिका	वाच	भाषति ।	वानिका	वाच	भाषते ।
मुनय	राज्ञ	ज्ञाघति ।	मुनय	राज्ञ	ज्ञाघते ।
विदुष्यो	गुणवत	कत्यते ।	विदुष्यो	गुणवतं	कत्यते ।
चद्रकाति	प्रासादं	कवति ।	चद्रकाति	प्रासाद	कवते ।
मानवा		मरति ।	मानवा		म्रियते ।
वाक्		प्यायति ।	वाक्		प्यायते ।

यह करी—

वाक् प्यायते । कविवाच देवान् भर्चति । मानवा देवरुचा ईच्छते । यावका त्वक् न स्पृशति । रुच शोभते । वासका रुक् ज्ञाघते । जैना जिनरुच ईच्छते ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्का बनाओ—

कत्यते, ज्ञाघते, कवते भाषते ईच्छते, वेष्टते, लोचते, ईच्छते, ईच्छते, रुच, त्वक्, पटचो, वाक्, वाच ।

उद्धृत बनाओ—

सङ्के दासचीनो (त्वक्) चाहते हैं । सूर्यकांति वाक्कागको

भूयित करती है । नीकर दी बातें बोलता है । कविकी वाणी  
सोर्गोंको संतुष्ट करती है । विद्यायी ऋचायें पढते हैं । कवि  
ऋचाये घनाते हैं । वैद्य जावित्री ( त्वच् ) चाहता है ।

### धात्वर्थ<sup>१</sup>

धातु	अर्थ	प्रथम	एक०	द्वि	बहु०
कत्ये(१)	ज्ञाधाकरना( कत्य् + अ + ते )	कत्यते,	कत्ये ते,	कत्य ते ।	
ईच्	देखना ( ईच् + अ + ते )	ईचते,	ईचे ते,	ईच ते ।	
भापे	बोलना ( भाप् + अ + ते )	भापते,	भापेते,	भापते ।	
ज्ञाष्ट्	प्रश्नसाकरना( ज्ञाष् + अ + ते )	ज्ञाघते,	ज्ञाघेते,	ज्ञाघते ।	
वेष्टे	चारोत्तरफसेघरना( वेष्ट + अ + ते )	वेष्टते,	वेष्टेते,	वेष्टते ।	
मृष्ट्	मरना ( म्रिय् + अ + ते )	म्रियते,	म्रियेते,	म्रियते ।	
ईच्	यत्नकरना, चाहना( ईच् + अ + ते )	ईचते	ईचेते,	ईचते ।	
लोचृष्ट्	देखना ( लोच् + अ + ते )	लोचते,	लोचेते,	लोचते ।	
कवृष्ट्	टांकना ( कव् + अ + ते )	कवते,	कचेते,	कवते ।	
वृत्तुष्ट्	उपस्थितरहना ( वर्त् + अ + ते )	वर्तते,	वर्तेते,	वर्तते ।	
भिच्	भीखमागना ( भिच् + अ + ते )	भिचते,	भिचेते,	भिचते ।	
प्यष्ट्	बटना ( प्याय् + अ + ते )	प्यायते	प्यायेते,	प्यायते ।	
एधे	बटना ( एध् + अ + ते )	एधते	एधते,	एधते ।	
शभे	शोभना ( शोभ् + अ + ते )	शोभते,	शोभेते,	शोभते ।	

	एक०	द्वि	बहु
प्रथमा—वाक्	वाची	वाच	वाच ।
द्वितीया—वाच	वाची	वाच	वाच ।

१—जिन धातुओंमें 'ङ्' अथवा 'ए' लगा है वे धातु आत्मनेपदी हैं उनमें एकवचनमें 'ते' द्विवचनमें 'एते' बहुवचनमें 'सन्ते' जोड़ देना चाहिये ।

## अष्टम पाठ ।

## द्—कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ विपत्	मानव	आपतति ।	विपत्ति	मनुष्य पर	पडती है ।
लोषा	परिषद	गच्छति ।	लोग	सभाकी	जाते हैं ।
शरत्	पयिकान्	सुभति ।	शरद ऋतु	पदिकों (राजानीर) को	सुभाती है ।
चातका	शरदं	निदति ।	चातक (पपीदा)	शरद ऋतुकी निर्ग करती है ।	
पुण्यकृत्	सपद	नभते ।	पुण्यात्मा (श्री)	रूपति	पाती है ।
२ परिषदौ	विद्यां	वितरत ।	दो सभायें	विद्याको	देती हैं ।
बालक	ककुदो	पश्यति ।	लडका	दा सीन	देखता है ।
बाला	परिषदौ	गच्छति ।	लडक	दो सभायोंको	जाते हैं ।
पंडित	सविदो	चरति ।	पंडित	दो प्रतिशायें	करता है ।
३ विषद	मानव	आपतति ।	विपत्तियां	मनुष्योंपर	गिरती हैं ।
मानव	सपद	मांचति ।	मनुष्य	संपत्तियां	चाहते हैं ।
परिषद	विद्या	वितरति ।	सभायें	विद्यायें	देती हैं ।
जना	आपदं	आप्लुमति ।	लोग	आपत्तियोंको	सांघते हैं ।

श्रीषे त्रिषे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

शरद, सपद, आपद, विषद, परिषद, परिषद, सपनिषद,  
( पडोसका मकान ), सविद ।

एक	द्वि०	तृ
प्रथमा—विपत् (द्),	विपदौ	विपद ।
द्वितीया—विषद,	विषदौ	विषद ।

नवम पाठ ।

घ्-कारात् ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ वीरुत्	हृत्त	वेष्टते ।	लता	पेड़की	खपेटती है ।
बालक	वीरुध	ईक्षते ।	बागक	लताकी	ईखता है ।
घुत्	मानध	तुदति(ते) ।	भूख	मनुष्यकी	पीड़ा देती है ।
युत्	घम्	शसति ।	युध	सेनाकी	नष्ट करती है ।
पावक	समिध	दहति ।	भाग	यज्ञकेकाष्ठकी	जलानी है ।
२ वीरुधौ	हृत्त	वेष्टेते ।	दो लतायें	पेड़की	खपेटती है ।
घम्	युधौ	जयति ।	सेना	दो युद्धोंकी	जीतती है ।
३ युध	घम्	शसति ।	युध	सेनाकी	नष्ट करती है ।
निर्भया	युध	पश्यति ।	निडर भाग	युध	देखते हैं ।
वीरुध	हृत्त	वेष्टते ।	लतायें	हृत्तक	वेष्टित करती है ।
समिध	अग्नि	काक्षति ।	समिध (नकली)	अधिकी	चाहती है ।

नीचे निम्ने शब्दोंसे संज्ञित बनायी—

ईक्षेते, वीरुध, समिधौ, युध, घुध, हृध ।

धात्वर्थ°

धातु	पथ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन ।
ईक्षे	देखना	( ईक्ष् + अ + ते )	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षते ।
तुदौञ्	पीडादेना	( तुद + अ + ते )	तुदते,	तुदते,	तुदते ।
वेष्टे	घेरना	( वेष्ट् + अ + ते )	वेष्टते,	वेष्टेते	वेष्टते ।
शस	हिसाकरना	( शस् + अ + ति )	शसति,	शसत ,	शसति ।
दहौ	जलाना	( दह् + अ + ति )	दहति,	दहत,,	दहति ।

	परवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—वीरुत्	वीरुधी	वीरुध	।
द्वितीया—वीरुध	वीरुधी	वीरुध	।

## दशम पाठ ।

### त्—कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ योषित्	तडित	पश्यति ।	वीरन	विजयोकी	देखती है ।
सरित्	समुद्र	गच्छति ।	नदी	समुद्रको	जाती है ।
वृष्टि	सरित	पोषति ।	वर्षा	नदीको	बनाती है ।
विद्युत्	मेघ	अनुगच्छति ।	विजयो	मेघके	पीछे रहती है ।
२ योषितौ	सरितौ	पश्यति ।	दो स्त्रियां	दो नदीकी	देखती हैं ।
सरितौ	पर्वतपानान्	स्पृशति ।	दो नदियां	पहाड़ोंके पाषाणके पर्वतोंकी छूती हैं ।	
विद्युतौ	योषितौ	लभति ।	दो विजयो	दो स्त्रियोंकी	सुख करती हैं ।
कवि	तडितौ	दृच्छते ।	कवि	दो विजयो	देखता है ।
३ योषित	तडित	पश्यति ।	नारियां	विजयो	देखती हैं ।
वृष्टि	सरित	पापति ।	वर्षा	नदियोंकी	पुष्ट करती है ।
हरित	विद्युत्	वहति ।	त्रिषाव	विजयोवीकी	धारण करती है ।

निचलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

सरित, विद्युत् योषित, तडित, योषित सवितौ ( युद्धभूमि, प्रतिष्ठा ) एष ते एषेते, शोभते वर्तते, दृच्छति, लुभत ।

संस्कृत बनाओ—

नदियां पहाड़ोंको घेरित करती हैं । विजयो मेघके साथ २ रहती है । स्त्रियां पतियोंको लुभाती हैं । विद्या स्त्रियोंको भूषित

करतो है । धिजनी मकानोंको जलाती है । यहाँ ( अत्र ) बहुत  
स्त्रियाँ हैं ( वर्तते ) । स्त्रियाँ प्रयत्न करतो हैं ( ईदते ) ।

### धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
वृत्तुड्	वर्तना (रचना)	(वत् + अ + ते)	वर्तते,	वर्तेते,	वर्तते ।
इहै	यत्नकरना	( इह् + अ + ते )	इहते,	ईहते,	ईहते ।
द्युते	दीप्तहोना	( द्योत् + अ + ते )	द्योतते,	द्योतेते,	द्यातते ।
स्मिड्	मुस्कराना	( स्मय् + अ + ते )	स्मयते,	स्मयेते	स्मयते ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—सरित्	सरितौ	सरित ।
द्वितीया—सरित	”	”

### एकादश पाठ ।

स्त्रालिग शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग ।

कता	काम	क्रिया ।	कता	काम	क्रिया ।
सु दरी	बाला	मनोज्ञां सतां पश्यति	सु दर	लड़की	सु दर सताको देखती है ।
सु दर्यौ	बाले	मनोज्ञे सते पश्यत	सु दर दो लड़की	दो मनोज्ञतायें	देखती है ।
सु दर्यं	बासा:	मनोज्ञा सता पश्यति ।	सु दर लड़कियां	मनोज्ञतायें	देखती है ।
अंधला	जर्मय	एधते ।	अंधल लड़के		बढ़ती है ।



विदुषो रमण्यो मयता साध्वी	विदुषो दोषियां	ब्रह्मवाणी साधिवीही
अर्चत ।		पूजते ॥
सितार' शत्रय पलायमाना चम्बु	अदधीव शत्रु	भासते इदं शिवादा दीडा
अनुगच्छति ।		करते ॥
मानिन्य ममांदर सुरनां बधू	मानिनी मर्मनिदां	होषी बद्धो जांगतो
तजति ।		॥
श्वेतरोमांक विभ्रती धेनु आयम	शक्रेद रोमोंको धारने बापी	बाय बायमको
मजति ।		जातो ॥
ज्यायस्य' योपित रुदती बधू	इराजिया रोती इदं बधुपीका	उपदि
उपदिशति ।		दती ॥
विदुष्य साध्वर सयतां वाचं	विदुषी साधिवीं	परिमित वापीको
भाषते ।		बोचती
पीडिता पद्मर' गुर्वी विदनां	पेडित पविदां	बद्धत बको वेदनाको
अनुभवति ।		भोगती ॥
श्रुत्या महानुभावां कर्त्री	मीकर महानुभाव स्थानिकोको	धरते
सेवते ।		॥
दात्री योपित् भूख्यवतो दृपद	दाता धी	भूख्यवाषी पखरीको
वितरति ।		बांटती
		॥

अपह ।

पह ।

शुद्धवसमा ब्राह्मण्यौ दात्री	शुद्धवसने ब्राह्मण्यौ दात्री	योपित
योपत अचत ।		अचत ।
रामचद्र मेध्या दृपद वाञ्छति ।	रामचद्र मेध्या' दृपद	वाञ्छति ।
रुदती बालिका अस्मटां वाच	रुदत्य बालिका	अस्मटा वाच
भाषते ।		भाषते ।
उज्वला धोषधी	द्योतेते ।	उज्वले धोषधी
		द्योतेते ।

अथ ।

अथ ।

कुमार्यं	श्यामलां	वनस्यन्ती	कुमार्यः	श्यामलां	वनस्यन्ती
		सोचते ।			सोचते ।
मेघवती	पर्वतमाला	विराजते ।	मेघवत्य	पर्वतमालां	विराजते ।
गिथ्या,	पवित्रा	समिध	आह्वरति ।	गिथ्या	पवित्रा
तीव्रा	पिपासा	शुष्कां	चञ्चू	तीव्रा	पिपासा
		तुदति ।			तुदति ।
क्लेशदायिनो	सुत्	संजाता ।	क्लेशदायिनी	सुत्	सजाता ।
बुद्धिमती	कर्त्रा	लज्जमानां	वध्वी	बुद्धिमत्य,	कर्त्रा
		पृच्छन्ति ।			पृच्छन्ति ।
प्रखरा	बुद्ध्य	एधते ।	प्रखरा	बुद्ध्य	एधते ।

एव करो—

सर्पाकार रञ्जु वर्तते । श्वेता घेनय शोभते । विदुषो योषित' मनोहारिणीं वाच' भाषते । क्षुधिता बानिके वाच न यदत । सृत्य' उदारमती कर्त्री सेवते । मनस्विनी कत्र कठोर वाच न भाषते । पलायमाना चमू दृष्टा । गधयुक्ता पुष्परेणव गच्छन्तीं चम्ब्री स्पृशति । प्रवृष्टा सरित समुद्र गच्छन्ति । ज्ञानां पुष्पमाला गध न वितरति । गच्छन्तीं बाला इतस्तत (इधर उधर) पश्यति । शुक्लिका रजताकारा वर्तते ।

गौचे लिखे विशेषणोको रचकर वाक्य बनायी—

( क ) रुचिरा ( सुन्दर ), मलीमसा ( मलिन ), पवित्रा, मनोघ्रा, पीडिता, श्रुता, प्रवोणा, पलायमाना ( भागती हुई ), म्रिय-माणा ( मरती हुई ), ज्ञाना, ध्यानपरा, सयता, सधुरा, स्पृष्टा, जनप्रिया, मनोरमा, शिचिका, उपदेशिका ।

( ख ) मनोहारिणी, गुणवती, बुद्धिमती, श्रोतस्वती ( बहने वाली ), क्लेशोत्थिनी ( तरगवाली ), सु दरो, गरोयसो, विभ्रतो, गच्छती,

रुदती, तिष्ठती, गुर्धी, महती, ज्वायसी, धारयती कुर्वती,  
गदती, श्रुतवती, शोभती, सुमंती ।

एक एक योग्य विशेषण रसकर भाव पूरे करी—

—नद्य वहति । —सतिशक्ति एधते । —लते शोभते ।  
—योषित्— गगा पश्यति,—वृष्टि— योषधी उच्यति ।  
—कर्त्री—परिचारिका तर्जति । —धेनव—गृह  
प्रत्यावर्तते । —व्यथा सजाता । वध्व् अटते । —लोका—  
दात्री महति । परोपकारी—कीर्ति लभते । —रुच' आकाश  
कवते । शिष्या—पुस्तिका मनति । विद्वांस—परिपद  
गच्छति । वन्दि—समिधो दहति । —वनस्थली शोभते ।  
—चद्रकला राजते ।

(ख) निम्न लिखित शब्दोंसे भाव बनाओ—

पराजिता, परिवर्द्धमाना, गच्छती, रुदती निव्रयमाणे, गरीयसी,  
ज्वायस्य, मायाविनी, सृष्टी लज्जावती, हिरण्ययी, (सुवर्णको)  
यशस्वी, स्रोतस्तल्य, दात्र ।

चपत्र

पद

श्यामला	वनस्थली	शोभते ।	श्यामला	वनस्थली	शोभते ।
मनस्वी	राज्ञी	परिचारिकां	मनस्विनी	राज्ञी	परिचारिकां
		धादिशति ।			धादिशति ।
दयावत	कर्त्रं	भृत्यान् दयते ।	दयावत्य	कर्त्रं	भृत्यान् दयते ।
श्रीमत्	वध्व्	ज्वायसी श्वश्रु	श्रीमत्य	वध्व्	ज्वायसी श्वश्रु
		प्रथमति ।			प्रथमति ।
ज्ञानो	योषित	रुदत	ज्ञानिन्य	योषित	रुदतीं बालिका
		उपदिशति ।			उपदिशति ।
तिष्ठती	योषितौ	गच्छत	तिष्ठती	योषितौ	गच्छती कन्या
		धादिशति ।			धादिशति ।

पद्य ।

पद्य ।

साधव	अपवित्र	त्वचं न	साधव	अपवित्रां	त्वच न
		सृशति ।			सृशति ।
बुद्धिमती	कन्ये	वृक्षान् उद्यत ।	बुद्धिमत्यौ	कन्ये	वृक्षान् उद्यत' ।
धूसरो	धेनू	गृह आगच्छत ।	धूसरे	धेनू	गृह आगच्छत' ।
आपद		आपतित ।	आपद		आपतिता, ।
रुपदा'		सेव्य' ।	सपदा		सेव्या ।
जना	भवनभूपित	अयोध्यां	जना	भवनभूपितां	अयोध्यां
		ईक्षते ।			ईक्षते ।
रत्नाभरणा'	वालिका	दयावत	रत्नाभरणा	वालिका	दयावतीं
		मातर अर्चति ।			मातर अर्चति ।
भर्ता	शोभां	पश्यत	भर्ता	शोभां	पश्यतीं
		योषित			योषित
		भाषते ।			भाषते ।

शुभ करो—

गुणवत पत्न्य स्वामिनं ईक्षते । शुभ्र कौमुद्य (चादनी) भिवसुक्तां शशिन उपगत । मनस्विन कर्त्तव्यं मधुरवाच वदति । कृष्णवर्णा पयोमुक् नीलवर्णा गिरि कु वति । पवित्र पुष्परेणव साधून् भूपति । साध्वी योषित स्वकीयान् स्वामिनौ अनुगच्छत । मनोज्ञ पुत्री सर्वप्रिया भवति । रूपवान् भार्या शत्रु । व्यभिचारी माता अपि (भो) शत्रु । जनकसुता सोता राम अनुव्रजति । रामानुजा लक्ष्मण भाट्टभार्या सोता अर्चति । श्वत वक्रपंक्ति आकाश गच्छति । इसानुरक्तौ इस्य मानस गच्छति ।

योग्य कर्ता पीर कमकी यथाव्याज पर रख कर शक्त पूरे करो—

गुणवत्य ——— देवसदृश ——— सेधते । वृष्णाक्षी ———  
वृष्णाक्षी ——— दयते । सरलस्वभावा — साध्वी — अर्चति ।  
आनाकाक्षिण्य, ——— निर्मलसलिला ——— प्रवगाहते । अमत्य, ———

श्यामायमाना'—पश्यति । कृतसीतापरित्याग —समुद्र  
 वेष्टितां—रक्षति । निराशा —प्रति (१) निवर्त्तते । मनोरमा  
 —जरायस्त—न काञ्चति । पानमत्ता —प्रफुल्ल—  
 न त्यजति । स्वयवरा—नृपकुलशोभितां—विशति । पति-  
 चाभाकाञ्छिष्य —परिहृतविवाहवेशान्—परोक्षते ।  
 विदुष्य —गुणवत—अभिलषति । पयस्विनी—  
 स्ववत्सममौष गच्छति । सौभाग्यशालिन्य —रत्नभूषित—  
 गच्छति । गुणयाञ्छिष्य —कर्मकृत—न तर्जति । भर्तृभक्ता  
 —मदपायिनी —न सृष्टते । धर्मार्थी—क्लेशकरा—इच्छति ।  
 कनीयान्—ज्यायसी—अनुगच्छति । कथा—मधुरा  
 —कृजति । साध्वी—स्वभाषसरल—न तर्जति । सुशीला  
 —विमयनम्ना—उपदिशति ।

नौवे शिष्ये शार्ङ्गामिं एकवचनके स्थानमें बहुवचन धोर बहुवचनके स्थानमें एकवचन करो—

विद्वांस स्वामिन शिषिता पत्नी अभिलषति । पण्डितबुद्धय  
 मरा अर्थहोनां वाच न भाषते । पुत्राद्यन्य जनन्य पुत्रार्थं धर्मं  
 आचरति । कृतविवाह सञ्जन नवोदा कन्या उपदिशति । कन्या  
 दृष्टुकामा जमनो स्फटिकमयीं प्रासादमालां व्रजति । कृतासन  
 परिषद साधु पुन पुन रुदती कन्या उपदिशति । धर्मप्राणा  
 योपित् ज्योत्स्नासहितां यामिनीं (रात्रि) तथा द्रुमपत्न्यशोभिता जन्म  
 भूमि ईच्छते । सतानुदितैधिणी श्वय नवोना वधुप्रसूति सृशति ।  
 आधुनिका श्लोका अथकरो शिष्या शसति । सञ्जोदरा भगिन्य  
 पद्मसमाकुर्वा पुष्करिणीं (छोटातनाव) गच्छति । स्वगृह आययतीं  
 शिष्य जन न त्यजति । पात्रतां नोत आत्मानसपद स्वय व्रजति । देवा  
 अपि धार्मिकान् अर्चति । सञ्जनकृता वाञ्छा सफला एव भवति ।  
 धर्मरक्षिणी यद्यो धर्ममूर्त्तिं जीवधर अर्चति ।

ऊपर लिखे वाक्योंकी हिंदी लिखो ।

छौलिंग शब्दको पुलिग और पुलिगको छौलिंग बनाकर नीचेलिखे वाक्य उद्धरके लिखो—

निपुण' नायक गुणवती नटीं उपदिशति । चपला बालिका सुदरौ कुमारौ ईक्षते । वेगवत' नदा विशाल हिमवंत गच्छति । मांसलुब्धा व्याघ्र मानवान् कांचति । (१) प्रसवित्' नार्यः पुत्र पश्यति । जनयितार पुत्री अभिलषति । विलासिनी नारी संत (सज्जन) भर्तार तर्जति । प्रियवादिन नरा निर्बोध सम्वाज सुमति । गरीयान् मानव श्रेयांस लभते । वपुष्मती नारो वसवती' परिचारिका इच्छति । जानती बालिका पृच्छत बालक वदति । कनीयसी पुत्री व्यायांस नर लोचते । गायत्य नार्य श्रोतृन् वदति । मैथिल पुत्र मागधीं पुत्रीं कांचति । गुजत भ्रमरा पौत्री (नातिनी) दशति । साध्वी पत्नी पति अनुगच्छति । भाग्यसमन्वित योग्य वर (दूल्हा) दुर्लभ । परार्थतत्परा सत प्रापद न पश्यति । समदु खसुखा भार्या श्रेष्ठा । अभिनयप्रिया मानवा नवा वसतजल क्रोडा पश्यति । धर्मपराशुखा' क्रूरा पापफल दुख सहते । पर

१—जिन शब्दोंके अंतमें 'ध' है उनको छौलिंग बनानेके लिये 'क' के स्थानमें 'री' कर देते हैं । जैसे—प्रसवित्र (उत्पन्नकरनेवाला) शब्दका छौलिंग बनाना है तो उसके 'त्र' के अंतमें जो 'ध' है उसको 'री' कर देना चाहिये प्रसवित्+री=प्रसविरी । २—जब कि पुरुषके नामसे स्त्रीका नाम लेते हैं । जैसे कि—गोप (स्वाहा) को स्त्री गणक (ज्योतिषी) को स्त्री आदि, तब अकारांत पुलिग शब्दोंको अकारांत को लगभ रूकारांत कर देते हैं । जैसे गोप—गोपी गणक—गणकी महामात्र—महामात्री । ३—जिनसे कि किसी एक तरहके बहुतसे पदार्थोंका ज्ञान होता है ऐसे छिद्र आदि जातिवाचक अकारांत शब्दोंको छौलिंग बनानेके लिये रूकारांत कर देते हैं । जैसे—मदूर—मदूरी व्याघ्र—व्याघ्री, मानव—मानवी छिद्र—छिद्री आदि ।

व्यथा वीचमाणा कुमारो शोकविह्वला जाता । न्यायपर पार्थिव  
स्वप्रियां पहरानीं वदति । आत्मानं घ्नत (हनते हुये) क्रुद्धा कि  
(कौनसा) अहित न आचरति । येष्टा गुरुभक्तिं सुक्तिं वितरति ।  
जैनी तपस्यां स्वैराचारविरोधिनी, सुखभाव, गुरु, निजसमीप तिष्ठत  
शिर्यं गदति । वैश्वपतिं पुत्रं पोषति । सतीषा सा वनं गच्छति ।

संज्ञित वनापी—

मदोदरी, रोती हुई सीताको समझाती है (उपदिशति) । लक्ष्मण  
सुखता पाते हैं । उत्साहवान् आदमी दुःखित नहीं होता है ।  
उद्दिग्ध चित्त माता धीर धारती है । पहाड़ोंके समान (पर्वतसदृश)  
मेघ आकाशको आच्छन्न करती है । सुगन्धित पवन दुर्गन्धिको दूर  
करता है । काले २ बादलोंमें (नीलमेघाश्रिता) विजुलौ चमकती है ।  
यात्री लोग स्वदेशकी जाते हैं । हनुमान् उपवासकृत् निरानन्द  
जानकीको पूछते हैं । रावण नीलकेशी कमलमुखी सीताको देख  
कर (दृष्ट्वा) सोचता है (विचारयति) । सेना समुद्रको पार करती  
है । रोना सुनकर पीछे चलते २ (रोदनाशुसरणकारी) हनुमान्  
रोती हुई सीताको देखता है । सयतषाक लक्ष्मण अतर्गतवाप्य  
होकर (सन्) भ्रात्राणां कहता है । धर्माका हिंसाको नहीं  
करता है । भ्रमर पुष्परसको पीते है (पिबति) । नदियां खादिष्ट जल  
वाली (सुखादुताया) होती हैं पर (परतु) समुद्रको पङ्कज कर (नङ्गा)  
अपेय हो जाते हैं । विद्या बहुत कल्याण बढाती है (पोषति)  
शांत मुनि सुख पाते हैं । दानी ब्राह्मणकी शोग प्रशंसा करते हैं ।  
राम स्वरसती देवीको नमस्कार करता है । गुरु लडकेकी धर्म  
वतसाता है ।

परिशिष्ट ।

	जरा ( बुदाया ) शब्द ।		ति ( शोक ) शब्द ।
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथ०—	जरा	जरसौ, जरै	जरस, जरा
द्वि०—	जरस, जरां	जरसौ, जरै	जरस, जरा
	०	०	०
	०	०	०
			तिस्र ।
			तिस्र ।

(१) श्री ( लक्ष्मी शोभा ) शब्द ।

चतुर ( चार ) शब्द ।

प्रथ०—	श्री	श्रियौ	श्रियः	०	०	चतस्र ।
द्वि०—	श्रिय	„	„	०	०	चतस्र ।

दीर्घ ऊकारान्त ध्रु (१) शब्द ।

(१) स्वस ( वदति ) शब्द ।

प्रथ०—	भ्रु	भ्रुवौ	भ्रुवः	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०—	भ्रुव	भ्रुवो	भ्रुव	स्वसार	स्वसारौ	स्वस

भौकारान्त, ऐकारान्त और औकारान्त शब्दोंके रूप पु लिंगके समान होते ।

इर् भागांत गिर ( वाणी ) शब्द ।

उर् भागाल पुर ( नगर ) शब्द ।

प्रथ०—	गी	गिरी	गिर	पृ	पुरी	पुर ।
द्वि०—	गिरं	गिरी	गिर	पुरं	पुरी	पुर ।

भकारान्त—ककुभ ( दिमा ) शब्द ।

अप ( जल ) शब्द ।

प्र०—	ककुप्, ( ष )	ककुभौ	ककुभ	०	०	अप ।
द्वि०—	ककुर्मं	„	„	०	०	अप ।

श्रेय इत्त भागांत, छत्त भागांत आदि व्यन्तान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप पुल्लिंगके समान समझना ।

१ स्त्री शब्दके रूप भी इत्तके समान होते हैं परंतु प्रथमाके एकवचनमें स्त्री और द्वितीया विभक्तिके एकवचनमें 'स्त्रीम्, स्त्रियं और बहुवचनमें 'स्त्रिय स्त्री ष्टी दो दो रूप होते हैं । लक्ष्मी शब्दके प्रथमाविभक्तिके एकवचनमें विसर्ग होते हैं और श्रेयइत्त नदी शब्दके समान चलते हैं । १ हन्म्, करम्, पुनम्, वर्षाम् शब्दोंसे भिन्न जिनके अंतमें भू षे छत्तके, तथा पू आदि एक स्वरवाली दीर्घ ऊकारान्त शब्दोंके रूप इसी प्रकार होते हैं । २ षत्त पाठमें त्रिये नये अकारान्त शब्दोंसे भिन्न शब्दोंके रूप इत्तके समान होते हैं ।



गोषे निरी इर्द्धीमे वास्य वनाधी—

जरा, शिथ, मच्छी, तिस, गिर, ककुप, भ्रुवी, खलपू, गा  
खसारौ, अप, चतस्र, अर्चिपो, स्त्री ।

हिंदी वनाधी—

यदा (जब) शरीरो जरम गच्छति तदा (तब) शरीरश्रिय  
त्यजति लक्षणां श्रयति बुद्धिशून्य च भवति (होता है) । गिरिव  
अस्पर्शा गिर गदति । लक्ष्मी पुण्यशालिन श्रयति । अग्निन चतस्र  
गतो भ्रमत दु खं अनुभवति । राम खसार प्रणमति । दुहितर  
मातर विलोक्य (देराकर) प्रसन्ना भवति । एव मातर अपि  
दुहितृ विलोक्य प्रसीदति । श्रिय अप आनेतु (मानेके निये)  
तडाग गच्छति । वाराणसी पू अतिशोभते । सर्वा ककुभ अधुना  
प्रसन्ना यतते । कुत्र अपि (कहीं भी) मेघा न । उज्ज्वलां भास  
(कांति) विलोक्य शत्रव दूर धावति । मेघाच्छत्रा ककुभ जाता ।

संस्कृत वनाधी—

सडके नगरमें प्रवेश करते हैं । विद्वान लोग सरस्वती ( गिर )  
को प्रणाम करते हैं । चार स्त्रियां परस्परमें विवाद करते हैं ।  
बुढापा दु रूढाधी होता है । मूर्ख लोग शीतल निर्मल जनको  
छोडकर ( त्यक्ता ) कोचड ( पक ) याने जलोंको पोते हैं । विद्वान  
लोग जब तक ( यावत् ) शास्त्रपठनप्रबोध धारणी खलित नहीं  
होती है ( न खलन्ति ), जब तक बुढापा तउकुटोरका आयय नहीं  
लेता है और जब तक दोनों पैर अपना ( स्वकीय ) काम नहीं  
छोडते हैं तब तक ( तावत् ) सामारिकवेदनाभिभूत आत्माको  
सुखो करनेजा ( सुखयितु ) प्रयत्न करते हैं भोहें क्रोध और  
प्रसन्नताको कहते हैं । राम तीन बालें ( वार्ता ) कहता है ।  
गाय दूध देतो है । धनाढ्य ( सुरे ) गरी दान देतो है । ग्वालिन तीन  
गाथोंकी छोडती है । खलियान साफ करनेवालो ( खलपू ) खलि

यानको जाती है । यर्वोको काटनेवालो ( यधलू ) यधक्षेत्रमें घुसती है । गावको मुखिया स्त्री गावकी रक्षा करती है । तीन पुत्रो अपनी ( स्त्रा ) अपनी माताओंको प्रणाम करतो है । लडके दूषा ( पितृ वसू ) को पूछते है ।

स्त्रीनिर्गुणशब्दोंके परिचयानेका उपाय—

स्त्रीलिङ्ग योनिमद्, यस्त्री-सेना-वज्रि तडित्-निशा ।

वीचि त द्रा ऽवट शोवा-जिह्वा शस्त्रो दया दिशा ॥ १ ॥

शिशिपाद्या नदो-वोष्णा ज्योत्स्ना घोरो तिथो-धियां ।

अगुलो कलशो वःगु छिगुपत्रा सुरा नसा ॥ २ ॥

लाशा शिबोष्णिका आषा भरवा रोचना भुवां ।

इत् तु प्राण्यगवाचि स्यादीदूदेकस्त्रे क्त ॥ ३ ॥

अर्थ—स्त्री, नारो मकरां मत्सी, चिह्नो आदि—मनुष्योंकी अथवा आनवरोंकी स्त्रियोंके तथा वसी ( एक तरङ्गका कोडा ) सेना ( अयू प्रतया बाहिनी आदि ) वज्रि ( क्षता प्रतानिनो वज्ररो अदि ) विजुनी ( तडित् मका, अपना भरा आदि ) रात ( निशा तमिखा रश्मी तनी तु गी आदि ) लहर ( घोष उत्कलिका, लहरो भ गि आदि ) निद्रा ( तद्रा आदि ) गडका ( अवट, घाटा हकाटिका आदि ) गदन ( रोवा, आदि ) जीम ( जिह्वा रसशा आदि ) कुरी ( कुरिका शस्त्री पश्चिपुत्रो आदि ) दया ( दया करणा हया आदि ) दिशा ( आशा काठा ककुम् आदि ) नत्नी ( धुनी, निधना आदि ) वीषा ( घोषवती विष्ठी आदि ) आदनी ( ज्योत्स्ना अद्रिका कौमुदी, आदि ) मितो ( प्रतिपद त्रितोवा त्रतोवा पूषिमातका बुद्धि ( धो विशया मनीषा पडा आदि ) अगुली ( अगुलि, करमाडा आदि ) गगर ( कलशो गगरो आदि ) मदिरा ( सुरा वारुषी आदि ) नाक ( नासा, नासका आदि ) लार ( लाणा छणीका आदि ) फली ( शिवा वीजकोशी आदि ) लपठी ( लपि का यवायू आदि ) लष्ठी ( श्री कमला, पद्मा पद्मवासा हरिप्रिया श्रीरीदलनया मा रमा इन्द्रिा आदि ) शरदकी मन्त्री ( सरवा शूद्रा मधुमयिका आदि ) रोचना ( गारोचना, धररोचना आदि ) श्वित्री ( भू, भूमि मही आदि ) इन शब्दोंके अर्थको कहने वाली शब्द प्राचिनको अ गको अर्थको कहनेवाली शब्द इकारांत शब्द ( आधि कटि पानि आदि ) और एकस्त्र वाली दीध ईकारांत ( ओ ओ श्री, आदि ) ऊकारांत ( ध, ध, दू, नू आदि ) शब्द आदि न होते हैं ।

## तृतीय अध्याय ।

धरांत नपुंसकलिङ्ग ।

प्रथम पाठ ।

अ—कारांत ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्म	क्रिया ।
१	घानं	सुख	वितरति ।	घान	सुखको देता है ।
	शष्प	वृक्षान्	क्षतति ।	शपियार	पेड़को काटता है ।
	वृक्ष	पुष्प	विकिरति ।	पेड़	पुष्पको बपाता है ।
२	पद्मे	हृदय	सुभत ।	दो पुष्प	हृदयको सुभाते हैं ।
	सलिल	कमले	सिञ्चति ।	पानी	दो कमलोंको सींचता है ।
	पौत्र	फले	खादति ।	मातो	दो फल खाता है ।
३	फलानि	मानवान्	सुभति ।	फल	मनुष्योंको सुभाते हैं ।
	राजा	धाननानि	पश्यति ।	राजा	धानोंको देखता है ।
	जीवा	शरीराणि(१)	सभते ।	जीव	शरीरोंको पाते हैं ।

नोट—लिखे शब्दोंकी प्रयोगमें छाकर वाक्य बनाओ—

धंग, शरीर, पत्रे, भूयष्यानि, कमल, फलानि, शष्पाणि (घास), कुसुमे ।

	पद्य ।		पद्य ।
वना	शोभते ।	वनानि	शोभते ।
पुष्पो	हृदय सुभत ।	पुष्पे	हृदय सुभत ।
बालक	कमले काञ्चति ।	बालक	कमले काञ्चति ।
बालिका	फलान् खादति ।	बालिका	फलानि खादति ।

१—जिन शब्दोंमें 'र' अथवा 'व' हीमा ही सन्तके मकारको अकार ही जायता है किन्तु इन र 'व' और मकारके बीचमें—य, च, ष, ल, ट, द, त, व, और सकार न हो । ज-घ—रमना, बरैन आदि में नहीं होता ।

बालक	पुस्तकान्	पठति ।	बालक	पुस्तकानि	पठति ।
पशवः	पत्रान्	खादति ।	पशवः	पत्राणि	खादति ।
चदना	सुगन्धं	वितरति ।	चदना	सुगन्ध	वितरति ।

गुणकारी—

राम दयावहे चरितौ वदति । हृदय धम कांचति । पुण्य  
सुखा वितरति । जना ज्ञानान् इच्छति ।

अकारांत नपु सकलिंग दान शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—दान	दाने	दानानि ।	
द्वितीया—दान	दाने	दानानि ।	

### द्वितीय पाठ ।

इकारांत(१) नपु सक लिंग ।

	कता	काम	क्रिया ।	करः	काम	क्रिया ।
१	वारि	जीवन	वितरति ।	जव	जीवन	देता है ।
	मिघ	वारि	सुचति ।	मिघ	जल	छोड़ता है ।
	बाल	दधि	कांचति ।	लइका	दही	खाइता है ।
२	अक्षिणी सकथिनी	पश्यत ।	नो पाखें	दो न घायीकी	देखती है ।	
	सकथिनी	शकटे	वहति ।	दो धुरा	दो शकियोंकी धारण करते हैं ।	
३	मिघा	वारौणि	त्यजति ।	मिघ	जलोंको	छोडते है ।
	अक्षीणि	जनान्	पचति ।	पाखें	मनुष्योंकी	रखा करते हैं ।

१—नपु सक लिंग शब्दोंके अन्तका दीर्घ स्वर उल्ल हो जाता है । जैसे—यानथी शब्द दीर्घ ईकारांत है तो वह नपु सक लिंगमें उल्ल 'यानथि' हो जायगा और उसके रूप 'वारि' के समान चर्भेगे । इसी तरह दीर्घ अकारांतको उल्ल अकारांत दीर्घ अकारांतको उल्ल अकारांत ऐकारांत तथा एकारांतका उल्ल इकारांत, और ओकारांत तथा औकारांत को उल्ल ओकारांत समझना चाहिये ।

भोशे तिले इधोसे वरा वरादी—

अप्यि दधोनि, अघोप्यि, मग्धि, वारीप्यि, अघि ।

अनु अघनिं अघागतं अरि अघं अर—

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—वारि	वारिणो	वारोप्यि ।
द्वितीया—वारि	वारिणो	वारोप्यि ।

### तृतीय पाठ ।

उ कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	
१ मधु	भ्रमरान्	सुभति ।	अरि	अनराणो	सुभा । ई ।	
मृगा	पर्वतसानु	अयति ।	हरिणो	पर्वतशिखरका	आपद्य अरणी ई ।	
बान्धिका	अश्व	गूहति (ते) ।	रुडनी	आशु	द्विपती ई ।	
२ हनुनो	शीर्षा	विहरत ।	दी अदिवार	शभा	ईत ई ।	
शिगिर	जानुनो	सुदति (ते) ।	पाना (ईत/ दी)	घाटणाको	तकनीक ईता ई ।	
अशुद्धणो	फलानि	विकिरत ।	नी शीशमको	पेड़	फलोंको	बराति ई ।
हरिण्य	सानुनो	अयते ।	हरिणो	दी सानु	बान्धिका	आपद्य अरणी ई ।
३ सानूनि	अधूनि	विहरति ।	मिळरें	अश्व	ईती ई ।	
भ्रमरा	अधूनि	पिबति ।	अभर	अशु	दीति ई ।	
अशुद्धपि	फलानि	विकिरति ।	शीशम अश	फल	बराति ई ।	
	अश्व ।			अश्व ।		
बासका	अधून्	पिबति ।	बान्धिका	अधूनि	पिबति ।	
अश्व	अशु	खादति ।	अश्व	अशु (यव)	खादति ।	
हरिण्य	सानु,	अयति ।	हरिण्य	सानूनि	अयते ।	

सानु विहगमान् लभत । सानुनी विहगमान् लभत ।  
 अगुरु फलानि विकिरति । अगुरु फलानि विकिरति ।  
 अग्नि दारु दहति । अग्नि दारुणो दहति ।  
 दारव अग्नि गूहति । दारुणि अग्नि गूहति ।

निम्नलिखित शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

दारु अश्रुणि, सानुनी, जतूनि, मधु, मधूनि, सानूनि, वस्तु,  
 ज्ञान, दान, पिबत ।

ग्रह करो—

अवय पृथिवी सिचंति । बालक मधुं दृच्छति । सानूनि  
 पर्वत भूपत । बालक अश्रुन् सुचति । शिष्य दारुं आहरति ।  
 वस्तु चौरान् लुभत । शिशिर जानु तुदति ।

उच्चारणत नपु सकलिन मधु शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	मधु	मधुनी	मधूनि ।
द्वितीया—	मधु	मधुनी	मधूनि ।

### चतुर्थ पाठ ।

व्यञ्जनात् नपुंसक लिय ।

मत् ( वत् ) भागात् ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	गुणवत्	बलवत्	दृच्छति ।	गुणवान् (मित्र)	बलवान् (मित्र)	को चाहता है
	श्रीमत्	विद्यावत्	सृशति ।	श्रीमान् (मित्र)	विद्यावान् (मित्र)	को हूता है
२	श्रीमतो	विद्यावती	सृशत ।	दो श्रीमान् (मित्र)	विद्यावान् (मित्र)	को हूते हैं
	विद्यावती	रूपवती	दृच्छत ।	दो विद्यावान्	दो रूपवान्	को चाहते हैं ।
३	श्रीमति	बलवति	दृच्छति ।	श्रीमान् (मित्र)	बलवान् (मित्रों)	को चाहते हैं
	बलवति	श्रीमति	सृशति ।	बलवान् (मित्र)	श्रीमान् (मित्रों)	को हूते हैं

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

वन्दयति, श्रौमतो, रूपवत्, धनुषतो, गुणवति ।

नपु मन्त्रनिग मत् ( वत् ) भागादके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गुणवत्	गुणवतो	गुणवन्ति ।
द्वितीया—	गुणवत्	गुणवतो	गुणवति ।

## पंचम पाठ ।

### नकारांत ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	वेश्म	शर्म	वितरति ।	घर	सुखको	दिता है ।
	साधव	धर्म (कर्म)	त्यजति ।	शाप भोग	कर्मदिव (कर्म) को	छोड़ते हैं ।
	भस्म	धाम	कु वति ।	राज	घर वा शरीरको	ढकती है ।
२	वालका	वेश्मनी	पश्यति ।	लड़के	दो घरको	देखते हैं ।
	धनुवनी	योद्धार	दुभत ।	दो धनुष	योद्धाको	मुभाते हैं ।
	श्रुत्य	कर्मणो	छरति ।	नौकर	दो कामको	दान करता है ।
३	दुर्नामानि	जनान्	सुदति ।	बवाचीरें (घर प्रकारकी)	पुरुषको दुःखदेती हैं ।	
	जना	शर्माणि	दृच्छति ।	लोग	कल्याणोंको	चाहते हैं ।
	आयिका	वेश्मानि	त्यजति ।	आधिकारि	घरोंको	छोड़ती हैं ।
	चर्मोणि	वर्माणि	कु वति ।	खाने	शरीरकी	ढकती हैं ।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

वर्त्मनो, ( मार्ग ) शर्म, कर्मोणि, भस्म, चर्मणी दुर्नाम वध  
धर्मोणि ।

अथ		यत्			
धामा	साधून्	भूयति ।	धाम (तेज)	साधून्	भूयति ।
शिशु*	जन्म	लभते ।	शिशु	जन्म	लभते ।
ब्राह्मण*	चर्मो	स्पृशति ।	ब्राह्मण	चर्मणो	स्पृशति ।
पद्मी		श्रीभेते ।	पद्मनो		श्रीभेते ।
भृत्य	कर्मण*	त्यजति ।	भृत्य	कर्माणि	त्यजति ।
राजा	वर्धमान	पश्यति ।	राजा	वर्ध	पश्यति ।
मानव	शर्म	इच्छति ।	मानव	शर्म	इच्छति ।
चर्मणी	भट	लोभत* ।	चर्मणी(दो टालें)	भट	लुभत* ।

संस्कृत शब्दाधी—

योद्धा लोग टालें चाहते हैं । कर्म जीर्णोको दुःख देता है ।  
विद्यार्थी घरको जाते हैं । बवासीर पीडा देती है । शरीर दुर्बल है ।

नकारात् वेष्मन् शब्दके रूप ।

एष वि० षट्०

प्रथमा—वेष्म वेष्मनी वेष्मानि ।  
द्वितीया—वेष्म वेष्मनो वेष्मानि ।

## षष्ठ पाठ ।

अस्—भागात् ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ मद्	मन	लुभति ।	अनुभव	मनको	लुभाता है ।
चेत	एन	भजते ।	मन	पाप	करता है ।
रज	नभ*	क्षु यति ।	क्षु	आकाशकी	ढकती है ।
पय*	रज,	छद्यति ।	जल	बलिषो	भिरोता है ।



२ सरसो	नयने	सुभत ।	दी ललाप	बांघीची	सुभांति ।
बालक	सरसो	पद्मति ।	नरका	दी ललापची	दिघता ।
३ चेतसि	दुःख	अनुभवति ।	पद्मति चित	दुःखका	अनुभव करी ।
बालका	पद्मसि	पिपति ।	नरके	दुःख	दीने ।
साधव	तर्पसि	वरति ।	साधवोर	ललापची	वरती ।
सरांसि	अधूनि	वितरति ।	लालाप	लल	दुःख ।
तमांसि	आकाश	कु वति ।	अधकार	आकाशची	कोकती ।

नौचे लिखे इच्छोछे वापर वनाचो—

तमसो, सरांसि अभ, तपसो, ममांसि, चेतसो, रजांसि, पद्म ।

पद्म

दुःख

मना	सुख	अनुभवति ।	मन	सुख	अनुभवति ।
कवि	छदानि	सृजति ।	कवि	छदांसि	सृजति ।
साधव	यश	लभते ।	साधव	यश	लभते ।
अभांसि	पिपासां	सह्वरते ।	अभांसि	पिपासां	सह्वरते ।
सुनि	वास	त्यजति ।	सुनि	वास	त्यजति ।
वासा	शरीर	कु वति ।	वासांसि (कपडे)	शरीर	कु वति ।
शोक	चेत	दहति ।	शोक	चेत	दहति ।

धर शरी—

तमांसि वर्तते । रज आकाशं कु वति । सरसो वसान् सुभति ।  
चेत दुःख अनुभवत । वैश्व शोभते । भस्मा अग भूपति । शिशव  
लक्ष्मण लभते । राजा शर्म दहति । कर्माणि फलानि वितरति ।  
अमो भट्ट रघत ।

अस् भागांत 'महस्' शब्द ।

पद्म

ति

वद्

प्रथमा—मह	महसो	महांसि ।
द्वितीया—मह	महसी	महांसि ।

सप्तम पाठ ।

इस—भागात् ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ हवि	रित	पोषति ।	धी	वीर्यको	बढाता है ।
अग्नि	हवि	इच्छति ।	आग	धीको	चाहती है ।
चन्द्र	ज्योति	वितरति ।	चंद्रमा	ज्यातिको	देता है ।
ज्योति	साधु	भूषति ।	तेज	साधुको	भूषितकरता है ।
२ अचिषी	नयनानि	लुभत ।	दो प्रभाये	आँखोंको	लुभाती है ।
ग्रहो	ज्योतिषो	विकिरत ।	दो ग्रह	दा ज्योति	देते हैं ।
अग्नि	हविषी	दहति ।	अग्नि ( दो प्रकारके )	धीको	जलाती है ।
३ सर्पिं पि	ओदरिकान्	लुभति ।	धी (बहुव०)	मूर्खोंको	सुग्ध करते हैं ।
छात्रा	सर्पिं पि	इच्छति ।	विद्यार्थी लोग	धी	चाहते हैं ।
अग्नि	हवींषि	दहति ।	अग्नि	धीको	जलाती है ।
	अशुद्ध			शुद्ध	
हवींषि	बल	वितरति ।	हवींषि	बल	वितरंति ।
ज्यातिषो	नयने	सुदते ।	ज्योतिषो	नयने	सुदत ।
छात्रा	सर्पिंषो	भिक्षते ।	छात्रा	सर्पिंषी	भिक्षते ।
ग्रहा	रोचिष	वितरति ।	ग्रहा	रोचींषि	वितरति ।
सर्पिंष	जिह्वां	लुभति ।	सर्पिंषि	जिह्वां	लुभति ।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

सर्पिं, हवींषि, रोचींषि, ज्योतींषि, सर्पिंषी, ज्योति ।

१—इ च स ए, पि, धी धी इ य र ल के बादमें यदि 'ष' होता तो उसको 'ष' आदिप हो जायगा । जैसे—ज्योतिष् शब्दमें 'त्' के 'इ' से पर 'ष' है इसलिये उसको 'ष' ही जानेसे ज्योतिषी बनता है ।

एव चो—

ज्योतिषं चद्र भूर्धति । धामन रीधं घमति । मीमा चर्धं  
कुंरति । मर्धं वि धामान् सुमति । एदियो चर्मिं स्मति ।

इमं पाठं न "अ" "व" इत्यं ।

वचनम्	विभक्ति	वचनम्
प्रथमा—ज्योति	ज्योतिषो	ज्योतींवि ।
द्वितीया—ज्योति	ज्योतिषो	ज्योतींवि ।

### षष्ठम पाठ ।

उम् भागात् ।

वर्त	वच	विधा ।	वर्त	वच	विधा ।
१ वयु,	मानव	सुदति ।	वरीर	मनुष्यो	वद ईना ई ।
धामन	वयु	स्मति ।	वच	वरीर	सुता ई ।
धनुषान्	धनु	सुधति ।	मनुष्यो	वदुवो	वोदता ई ।
धनु,	वीर	भूर्धति ।	वदुव	वीरको	सुविन वरता ई ।
२ चक्षुषो	चानेदं	सोभते ।	वी चाने	चानेदं	वारी ई ।
वीर	धनुषो	वदति ।	वीर	वी मनुष्यो	धारववरता ई ।
३ धनुषि	वीरान्	भूर्धति ।	मनुष (२+२)	वीरको	सुविन वरते ई ।
वीरा	धनुषि	वृष्यति ।	वीर	मनुष्यो	वदते ई ।
चक्षुषि	चक्षुषि	मधति ।	चाने	चाने	वोचते ई ।
प्रासाद	चक्षुषि	सुमति ।	ममान	चानेको	सुमता ई ।
	वदुव			वदुव	
धनुष		सोभते ।	धनुषि		सोभते ।
वीरा,	धनुम्	वृष्यति ।	वीरा	धनुषि	वृष्यति ।

पद ।

पद ।

चक्षव	पदार्थान्	पश्यति ।	चक्षूयि	पदार्थान्	पश्यति ।
चक्षु	अयूषि	सुधत ।	चक्षुषी	अयूषि	सुधत ।
धनुषी	वीर	भूषति ।	धनुषी	वीर	भूषत ।
चक्षूयि	आनन्द	लभते ।	चक्षूयि	आनन्द	लभते ।

नीचे द्विपे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

धनुषी, वपूयि, चक्षुषी, धनु, आयूयि, वपुषी ।

गुण करो—

योद्धा धनु वहति । धनुषी योद्धार भूषति । चक्ष अयूषि सुधति ।  
वपुषी दुःख अनुभवत ।

उस भागांत वपुष शब्दके रूप ।

एकारधन	द्विवधन	बहुवधन
प्रथमा—वपु	वपुषी	वपूयि ।
द्वितीया—वपु	वपुषी	वपूयि ।

द्वितीया बनाओ—

ध्रुवाणि (विरस्थायी) परित्यज्य (छोड़कर) न वर अध्रुव-  
सेवन (१) । दुष्कार अथनिर्माण । सतत (हमेशा) दुग्धघोत  
(धोयागया) अग्नि धायस (काक) खलु वायस । ममच्छेदि  
वच शस्त्र इव तीक्ष्ण भवति । जना नक्त (रातमें) कुकर्मणि  
आचरति । काल सूतानि (जोष) पचति । (पक्काता है)  
अष्टासम कष्ट न वर्तते । आलस्य विनाशहेतु । सम्यग्दर्शनज्ञान  
चारित्र्याणि मोक्षमार्ग । सकाल (सर्व) दूरत (दूरसे) रमण्योयं ।

। जिस वाक्यमें कोई क्रिया न हो उसमें वतते भवति ( है, होता है ) ये दो क्रियाय  
समभवा थीर उनको द्विपे करते समय लिखना । स शब्दमें चर्ता कम क्रिया आदिको  
कानसे रखनेका नियम नहीं है इसलिये निम्नलिखे शब्दोंसे उनको पहचानकर द्विपे बनाया ।

पर्वता दूरत रम्या । सर्वदा कर्म चाचरणीय । आकाशकमलं  
मूर्धा इच्छति । धन्य गृहस्थायम । ऐश्वर्यं न हि शाश्वत  
( नित्य ) । महत् अपि ऐश्वर्यं नाश गच्छति । दुर्गं ( किना )  
तुल्य निजगृह । दुःखसहित सर्वं सुख । देवाधीन सर्वं सुत पशो'  
धनादिकं ।

पञ्चम वनाधी—

निर्गुण स्थावण्य शोचनीय होता है । संतोष बड़ा धन है । छोटे  
भोग बड़े लोभीके पाछे चमते हैं । जितेंद्रिय मनुष्य धन्य है । पण्डित  
परिमित बोलते हैं । ज्ञानी भोग निरहकार होते हैं । पापचारी  
दुःखसागरमें प्रवेश करते हैं । पापी नीचे ( अध ) जाते हैं । सतुष्ट  
मनुष्य सर्वदा सुखी होता है । निराशा परम दुःख देतो है । दुःख सुख  
पट्टियेके समान ( चक्रवत् ) घूमते हैं । जीवन सुखदुःखमय है ।  
भूखा ( बुभुक्षित ) क्या ( कि ) पाप नहीं करता है । अन्यायोपार्जित  
द्रव्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ( नश्यति ) । मन सुख चाहता है ।  
राजशासन अनुष्ठान घनीय होता है । विद्या सर्वत्र गीर्वाण है । अनृत-  
भाषी भोग शपथ करनेके लिये ( कर्तुं ) सर्वदा सत्यत रहते हैं ।  
जीवित बुद्धि तुल्य है । ज्ञानरहित जीवन शून्य है । सूर्य अंधकार  
( तमस ) को नष्ट करता है ।

## नवम पाठ ।

( ननु सकलिंग विशेष्यशब्दोंके साथ विशेषणका व्यवहार )

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सजल अश्व	निमल	अंभ	सजल मेष	निमल जल	वरदाता
		वितरति ।			इ ।
सजले अश्वे	श्यामल वन	उद्यत ।	सजल दो मेष	द्वरे वनकी	चौंघते हैं ।

कृता	कर्म	क्रिया ।	कृता	कर्म	क्रिया ।
तीक्ष्णो चक्षुषी	श्यामायमाने	घने	तीक्ष्णं चाक्षे	इरे दो बनोंको	देखती
		पश्यति ।			है ।
प्रस्कृष्टिते कामले	तीरणद्वार		प्रफुल्लित	न कामल	तीरण द्वारको
		भूपति ।			भूषित करते हैं ।
मनोहराणि सरासि	नयनानि		मनोहर तानाभ	नयनोंकी	लगाते
		लुभति ।			हैं ।
बालक*	उपदेशपूर्णानि		बालक	उपदेशसे पूर्ण	पुस्तकोंको
		युस्तकानि पठति ।			पढ़ता है ।
भ्रमरा	साधु मधु	पिबति ।	भ्रमर	अच्छे	मधुकी पीति है ।
गच्छत् अम्भ	चन्द्र कु	वति ।	जलता हुआ मेष	चंद्रमाकी	दांकना है ।
(१) गच्छती अम्भे	पर्वत कु	वति ।	चलते हुये दो मेष	पर्वतको	ढाँकते हैं ।
गच्छति अम्भाणि	पर्वतानि		चलते हुये मेष	पर्वतोंको	भूषित
		भूपति ।			करते हैं ।
गच्छन्ति अम्भाणि	पयांसि		जाति हुये मेष	जल	बरसाते
		वितरति ।			हैं ।
बालका श्रीमत् अंबर	पश्यति ।		लड़की	सु दर बादल	देखते हैं ।
श्रीमती अगुरुणो	शोभते ।		सु दर	दो अगुह	शोभते हैं ।
ज्योतिषति नक्षत्राणि	रात्रि		उज्ज्वल नक्षत्र	रात्रिको	शोभित
		भूपति ।			करते हैं ।
राजान रत्नवति सद्धानि इच्छति ।			राजा लोग	रत्नवाले	घरोंको चाहते हैं ।
जना बलवति यूपि असति ।			लोग	बलिष्ठ	शरीरोंको चाहते हैं ।

१—नपु सक लिङ्गमें शब्द प्रत्ययांत शब्दोंके विवचनमेंभी लो से पढ़िंछि 'म्' आता है ।  
जैसे—गच्छती ।

तरल (चञ्चल) भवति । तप्त जल पेय । नवानि पत्राणि हरितानि ।  
सल्लनहृदय सदय भवति ।

व ज्ञात वनाधी—

पण्डित लोग असभव पदार्थकी इच्छा नहीं करते हैं । जीव  
उपस्थित दुःख भोगता है । धन सुलभ नहीं है । अर्थी लोग और  
शरणागत लोग विमुख होकर (रुत) जाते हैं । कदाचित् (कियदती)  
प्रसिद्ध है । भेष जलवासी जलुषीकी रक्षा करते हैं । दुर्ग (किना)  
दुर्गवासियोंकी वधाता है । विद्वान् मत्रीलोग राजाओंकी रक्षा करते  
हैं । यन वनवासियोंकी रक्षाकरते हैं । मयर तानात्र छोड़ता है ।  
हिरण्यकादिक विपत्की शका करते हैं ( शकते ) । व्याध  
वनमे घूमते घूमते मयरकी देखता है । तीक्ष्ण शस्त्र शत्रुशिरकी  
काटता है । हरे पत्ते मनकी लुभाते हैं । श्वेत कपड़ा अच्छा  
लगता है । शत्रु हृदय भग्न हो गया ( जात ) । शीतल जल पीय  
होता है । पुराया (अपहृत) धन सुखकर नहीं है । पुरानी  
पुस्तकें प्रायः शुद्ध होती हैं । पढ़ाहूषा (पठित) पुराण हृदयको  
ज्ञान देता है । दुष्कृत दुखकर होते हैं । निदासम पाप  
नहीं है । मोहसम भय नहीं है । अच्छे वचनको विद्वान्  
बोलता है । यमुनाजल काला है । विध्याचलवन भीषण है ।  
गोदुग्ध मीठा और पुष्टिकर होता है । विद्यार्थी धीकी चाहते हैं ।  
नवीन पुस्तक सुंदर होती है । पठनेवाले सर्वदा नवीन पुस्तक  
चाहते हैं । लोग नवीन चीज चाहते हैं । सडका खान कोकनद  
देखता है । प्राणी शुभाशुभ कर्मोंकी भोगते हैं । ज्ञान अधिक  
सुखकारो है ।

हिंदी वनाधी—

सत्रस्ता शृग्य द्रतस्तात (इधर उधर) धावति । नदी सागरं  
गच्छति । वलवती सिद्धी निर्बलां हस्तिनीं तुदति । विकसिता,

(खिनीदुई) कमलिन्य सुगध वितरति । साधो नारी गृहं गच्छति । भगिनी (वहिन) भ्रातर भवति । सुपरिष्कता वाच जनान् अधति । सकला' सपद' नखरा' वतते । मनोहर सर, सपकज (कमलसहित) वर्तते । विद्याहीना' जना न शोभते । धावन् भग्व पतति । सुहित परिव्राड् इह (यहां) आगच्छति । पठन् पुत्र मीढं यच्छति । फलिन इच्छा नमति । गुणिन जना नमति । पर (लेकिन) शुष्का तरव भूर्खा भरा च (और) न नमति । सरलस्वभावी जन दुर्लभ । सतत (सर्वदा) प्रियवादिन जना सुलभा । अप्रिया तथा पथ्या' (हित करने वाली) वाच दुर्लभा । शोमति जिनभवनानि सर्वदा शोभते । ध्याकुल पांथ तरुमूल आश्रयति । बहय छात्रा इह पठति । महत् द्विम शरीर तुदति । कोमल चरण क्षत । ज्ञान इव सुख कार, मधु इव पापदायक हितोय न वर्तते । वीणिरत्नानि-जल, अश्व सुभाषित (अच्छेवचन) । भावि कार्य अन्यथा (विपरीत) न भवति । चिन्तासम न अस्ति (हे) शरीरशोषक । स्वल्पनरायु' बहुल च शास्त्र । धर्मतस्व अहिसन । न उचित नृतमारण । वर नृत्यु न पुन अपमान । पडितसेवन एव श्रेय । पुण्यार्थ स्वकोय अर्थ प्रयच्छतं जन सुक्ति इच्छति, लक्ष्मी व्रजति, कीर्त्ति इच्छते, प्रीति सुबति सौभाग्यं सेवते, नीरोगता आश्रयति । यथा (जैसे) वनाग्नि वन दहति, तथा सत् तप कर्माणि दहति, । एक वैराग्य' एव समस्त कर्म अतं नयति । ईश्वरपूजा पाप क्षु पति, श्रिय वितरति, नीरोगतां पोषति, स्वग यच्छति सुक्ति रचति । धर्मसेवक जन—कदाचिद् (कभी) अपि रोग क्रुब इव न पश्यति, दारिद्र्य भयभोत इव त्यजति । भूर्खा पुरुषा देव, कुदेव, सुगुरु, कुगुरु, धम, अधर्म, गुणिन न क्षोद्यते ।



## चतुर्थं अध्याय ।

भ्वादि धोर सुदादिगणकी चकर्मक

धातुओं का व्यवहार ।

## प्रथम पाठ ।

कर्ता	क्रिया ।	कर्ता	क्रिया ।
१ राजा	जीवति ।	राजा	जोता है ।
चम्बू	जवति ।	सेना	जाती है ।
अम्बा	जयति ।	धीरे	दीकते हैं ।
नद्य	अतति ।	नर्त्या	सम्पदा बढ़ती है ।
धेनु	अचति ।	गाय	जाती है ।
धनहीन	कठति ।	निधन (धान्मी)	कटसे जीवन बिताता है ।
रोप्यसुद्रा	कनति ।	बादीकी सुदा (रूपया)	चमकती है ।
बूढा	कर्षति ।	मूख	घमक करते हैं ।
पक्षिण	कूर्जति ।	पक्षी	भूजते हैं ।
घोर	क्रामति ।	बोर	परोंसे चमता है ।
वानका	क्रोडति ।	लङ्के	खेलते हैं ।
शरीराणि	अयति ।	शरीर	मट होजाते हैं ।
हस्तिन	नर्दति ।	हाथी	चिंभाकते हैं ।
सिंह	गर्जति ।	रिह	गमता है ।
शरीर	स्त्रायति ।	शरीर	थाल होता है ।
भृगा'	चरति ।	हरिच	धूमते हैं ।
शाखा	चलति ।	शानियां	हिलती हैं ।
सेनापति	जयति ।	सेनापति	जीतता है ।
गिण'	अवरति ।	लङ्केकी	अवर जाता है ।

कर्ता	क्रिया	कर्ता	क्रिया
शोधय'	ज्वलति ।	शोधयिषा	शोध होती है ।
मन.	भ्रमति ।	मन	धमता है ।
द्वैवं	फलति ।	भाग्य	फल देता है ।
पुष्पाणि	फुलति ।	फूल	फूलते हैं ।
देवदत्त'	हठति ।	द्वैवत्त	ग्रहता करता है ।
सीता	मूर्च्छति ।	सीता	मूर्च्छित होती है ।
छात्रा.	वसति ।	विद्यार्थी	निवास करते हैं ।
सर्पा	सरति ।	साप	सरते हैं ।
वच	स्फूर्जति ।	वच	ग्रन्थ करता है ।
बालिका	क्रीच्छति ।	लड़की	लखित होती है ।
शिशु	शुवति ।	लड़का	मल त्याग करता है ।
दांभिक	मिथति ।	कपटी	खडा करता है ।
पुष्पाणि	स्फुटति ।	फूल	खिलते हैं ।

अबमक धातुओंके पहिचानने का उपाय—

उन्मादे च पलायनभ्रमणयो' खेदे क्षवाहं तथा,  
 मोहे धावन युद्ध-शुद्धि दहने शान्तौ मृती मज्जने ।  
 दीप्तौ जागर-शोष वक्रगमनोत्साहे मृती सशये,  
 कपोहेग-निमेष सग पवन खेदे ध्वोऽकर्मका ॥

मत्त होना, भागना, घूमना, खेद करना, हँक सेना, मुग्ध होना,  
 दौडना, युद्ध करना, शुद्ध होना, जलना, शान्त होना, कूटना, हूडना,  
 चमकना, दीप्त होना, जागना, सूकना, टेडाचलना, उत्साहित  
 होना, मरना, सशय करना, कांपना, उद्दिग्ध होना, पलक मारना,  
 पवित्र होना, पसीना पाना, इन अर्थोंमें जो धातुयें हैं वे सब  
 अकर्मक होती हैं ।

## द्वितीय पाठ ।

## पाठनेपदो धातुर्षोका व्यवहार ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सीता	मरयू	रूचते ।	श्रीग	सरयु नदीको	रूचती है ।
निदका	शोकान्	ईजते ।	दिब होव	कोदीको	निदा करते हैं ।
यासका'		रूचते ।	बबब		रूचते हैं ।
परिश्रमिण		रूचते ।	दी परिश्रमी		बेदा करते हैं ।
सपत्		एषते ।	रूप		बढ़ती है ।
अवना	केग	कथते ।	को	केग	कागती है ।
गुणपाद्विष	बुद्धिमत्	कथते ।	गुणपादि शोक	बुद्धिमान्को	प्रशंसा करते हैं ।
मम		चोभते ।	मम		विचलित होता है ।
क्षामी	भृत्य	गाहते ।	क्षामी	भोबरको	निदा करता है ।
पडिता	शास्त्राधि	गाहते ।	पडित लोग	शास्त्रोंका	गतन करते हैं ।
यासक	अस	असते ।	लकडा	अस	घाता है ।
अध्यवसायिन		चेष्टते ।	आपारी शोक		बेदा करते हैं ।
समर्था'	दुर्धमान्	तिजते ।	समर्थ शोक	दुरधोंको	अना करते हैं ।
श्रावक		दोषते ।	श्रावक		दोषा लेता है ।
रत्नानि		द्योतते ।	रत्न		दीव होते हैं ।
नद्य'		वधते ।	नदियां		बढ़ती हैं ।
भारतवर्ष'		प्रयते ।	भारत देश		प्रविष्ट होता है ।
साम्बाध्य		प्रसृते ।	साम्बाध्य		फलता है ।
भिक्षुक'	अस	भिक्षते ।	भिक्षारी	अस	भागता है ।
शिष्य'	अध्यापक	मानते ।	विद्यापी	गुरुका	सन्मान करता है ।
चित्त		मोदते ।	चित्त		आनंदित होता है ।
छात्रा,		मयते ।	विद्यार्थी लोग		जाते हैं ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
मोदक		रोचते ।	बाहु		बन्धा लगता है ।
प्रदीप		वर्धते ।	दीपक		जलता है ।
मृत्यु	खाद्य	यन्भते ।	नीकर	खाद्य पदार्थ	छाता है ।
राम	ज्ञानकी	उद्दहते ।	रामधर्म	ज्ञानकी	विवाहते है ।
प्रणय		प्यायते ।	प्रेम		बढ़ता है ।
हृदय		व्यथते ।	मन		दुःखित होता है ।
श्रोतारं शिशु		वेपते ।	श्रोतरी पीकित लड़का		बाँपता है ।
कापुरुषा	मृत्यु	शकते ।	कायर बादमी	मौतकी	शका करते है ।
ब्रह्मचारी	बाल	शिक्षते ।	ब्रह्मचारी	बालककी	पढ़ता है ।
प्रासाद		शोभते ।	मङ्गल		शोभता है ।
कवय	वीरान्	श्लाघते ।	कवि लोग	वीरोंकी	प्रशंसा करते है ।
पुष्पाणि		श्लेतेते ।	कमल		श्लेते होते है ।
बधु		श्रयते ।	बन्धु		सुखराती है ।
रोगी	धीमधं	स्वादते ।	रोगी	दवाइकी	खाइता है ।
पुष्पाणि		स्फुटते ।	फूल		विकसित होते है ।
दुग्धं		स्यदते ।	दूध		बढ़ता है ।
लोका	असत्यवादिन	विश्रम्भते ।	लोग भूठ	बोलनेवालीका	विश्वास नहीं करते है ।
पिता	पुत्र	स्वजते ।	पिता	पुत्रकी	आपनिगत करता है ।
लोका	शिशून्	आद्रियते ।	लोग	बच्चोंका	आदर करते है ।
मानवा		स्त्रियते ।	मनुष्य		मरते है ।
मन		उद्दिजते ।	मन		उत्थित होता है ।

नीचे लिखे शब्दोंकी व्यवहारमें लाकर एक २ वाक्य बनाओ—

जयते, ग्लायति, सरति, अर्तति, क्षयते, गर्दति, फटति,  
 झोच्छते, मियति एधते, कक्षते, शोभते, रोचते, द्योतते, प्रसेते,  
 मोदते, वर्धते, दीक्षते, शिक्षते, शिक्षते, कचेते, श्लेतेते, क्षयति,

सरत' ग्हायत, कठंति, धमिते, धन्मंते, धामेते, धामंते, धयते,  
मयेते ईडते, वेधंते, कत्यते, स्र जीते, तिजेते, प्रघंते, प्रभंते ।

एव एव इव एव इव वाच्ये पूरे करो-

टर्षसा — ध्वरति । — इक्षित्त्यौ जयत । सहायडोनाः  
— कटति । — जन व्यधते । सुधारपोडिता — धरति ।  
दृष्टिज्जमप्राप्ता — एधते । विद्यामुरागिण — विमानानि  
— गाधते । — जितारी समामार्थिन — तिजेते । रामाय  
एवर्षिता — प्रघते । परस्परं — मयेते । भयविह्वला —  
वेधते ।

### धारवर्थ

धातु	धृ.	प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१। जीव	जीना	( जीव + ध + ति )	जीवति,	जीवत,	जीवति ।
जव	जलदीसे चरुना	( जव + ध + ति )	जवति,	जवत,	जवति ।
धत	नित्यचरुना	( धत् + ध + ति )	धतति,	धतत,	धतति ।
धध	छाना	( धध् + ध + ति )	धधति,	धधत,	धधति ।
कठ	कटसेजीवनकाटना	( कट् + ध + ति )	कठति,	कठत,	कठति ।
कनी	धमकना	( कन् + ध + ति )	कनति,	कनत,	कनति ।
कर्व	धमडकरना	( कर्व + ध + ति )	कर्वति,	कर्वत,	कर्वति ।
कूज	कूजना	( कूज + ध + ति )	कूजति,	कूजत,	कूजति ।
कामु	पैदधचलना	( काम् + ध + ति )	कामति,	कामत,	कामति ।
क्रीड्	खेलना	( क्रीड् + ध + ति )	क्रीडति,	क्रीडत,	क्रीडति ।
धय	नटडोना	( धय् + ध + ति )	धयति,	धयत,	धयति ।
नर्द	शब्दकरना	( नर्द + ध + ति )	नर्दति,	नर्दत,	नर्दति ।
गर्ज	गर्जना	( गर्ज + ध + ति )	गर्जति,	गर्जत,	गर्जति ।

धातु	अर्थ	प्रथम	एक०	द्वि०	बहु०
स्व	विषादकरना (स्वाप् + अ + ति)	स्वायति	स्वायत	स्वायति	स्वायति
चर	खाना, घूमना ( चर् + अ + ति )	चरति	चरत	चरति	चरति ।
चल	चलना ( चल् + अ + ति )	चलति	चलत	चलति	चलति ।
जि	जोतना ( ज्य् + अ + ति )	जयति	जयत	जयति	जयति ।
ज्वर	ज्वरघाना ( ज्वर् + अ + ति )	ज्वरति	ज्वरत	ज्वरति	ज्वरति ।
ज्वल	दीप्तहोना ( ज्वल् + अ + ति )	ज्वनति	ज्वलत	ज्वलति	ज्वलति ।
तप	तपना ( तप् + अ + ति )	तपति	तपत	तपति	तपति ।
फल	फलना ( फल् + अ + ति )	फलति	फलत	फलति	फलति ।
फुल्ल	फूलना ( फुल्ल् + अ + ति )	फुल्लति	फुल्लत	फुल्लति	फुल्लति ।
वस	रहना ( वस् + अ + ति )	वसति	वसत	वसति	वसति ।
सर	सरकना ( सर् + अ + ति )	सरति	सरत	सरति	सरति ।
स्फूर्ज	ध्वनिकरना ( स्फूर्ज् + अ + ति )	स्फूर्जति	स्फूर्जत	स्फूर्जति	स्फूर्जति ।
झीच्छ	गर्मकरना ( झीच्छ् + अ + ति )	झीच्छति	झीच्छत	झीच्छति	झीच्छति ।
गु	मनत्यागना ( गुय् + अ + ति )	गुवति	गुवत	गुवति	गुवति ।
मिप	स्पर्धाकरना ( मिप् + अ + ति )	मिपति	मिपत	मिपति	मिपति ।
स्फुट	विकासितहोना ( स्फुट् + अ + ति )	स्फुटति	स्फुटत	स्फुटति	स्फुटति ।
मूर्च्छ	वेहोयहोना ( मूर्च्छ् + अ + ति )	मूर्च्छति	मूर्च्छत	मूर्च्छति	मूर्च्छति ।
२ ईच्	देखना ( ईच् + अ + ते )	ईचते	ईचेते	ईचते	ईचते ।
ईज	निंदाकरना ( ईज् + अ + ते )	ईजते	ईजेते	ईजते	ईजते ।
ईपे	जाना ( ईप् + अ + ते )	ईपते	ईपेते	ईपते	ईपते ।
ईहे	चेष्टाकरना ( ईह् + अ + ते )	ईहते	ईहेते	ईहते	ईहते ।
कचिड	चमकना ( कच् + अ + ते )	कचते	कचेते	कचते	कचते ।
क्षुभै	क्षुब्धहोना ( क्षुभ् + अ + ते )	क्षुभते	क्षुभेते	क्षुभते	क्षुभते ।
गर्ह	निंदाकरना ( गर्ह् + अ + ते )	गर्हते	गर्हेते	गर्हते	गर्हते ।
गाह	पालोचनाकरना ( गाह् + अ + ते )	गाहते	गाहेते	गाहते	गाहते ।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
चेष्टे	चेष्टाकरना (चेष्ट् + अ + ते)		चेष्टते,	चेष्टेते,	चेष्टते।
तिजोड्	घमाकरना (तिज् + अ + ते)		तिजते,	तिजेते,	तिजते।
दोक्षे	दौचालेना (दोच् + अ + ते)		दौक्षते,	दौक्षेते,	दौक्षते।
द्युते	दौप्तहोना (द्योत् + अ + ते)		द्योतते,	द्योतेते,	द्योतते।
प्रथेप्	प्रसिद्धहोना (प्रथ् + अ + ते)		प्रथते,	प्रथेते,	प्रथते।
प्रसेप्	विस्तृतहोना (प्रस् + अ + ते)		प्रसते,	प्रसेते,	प्रसते।
भिचै	मांगना (भिच् + अ + ते)		भिचते,	भिचैते,	भिचते।
मानै	पूजाकरना (मान् + अ + ते)		मानते,	मानेते,	मानते।
मुदेप्	हर्षितहोना (मोद् + अ + ते)		मोदते,	मोदेते,	मोदते।
मये	जाना (मय् + अ + ते)		मयते,	मयेते,	मयते।
रुचै	अच्छालगना (रोच् + अ + ते)		रोचते,	रोचैते,	रोचते।
वर्चे	जलना (वर्च् + अ + ते)		वर्चते,	वर्चेते,	वर्चते।
वल्भ	खाना (वल्भ् + अ + ते)		वल्भते,	वल्भेते,	वल्भते।
उह्वोड्	विवाहना (उह्व् + अ + ते)		उह्वते,	उह्वेते,	उह्वते।
वर्धे	वदना (वर्द् + अ + ते)		वर्धते,	वर्धेते,	वर्धते।
व्यथेप्	पीडितहोना (व्यथ् + अ + ते)		व्यथते,	व्यथेते,	व्यथते।
वेपे	कापना (वेप् + अ + ते)		वेपते,	वेपेते,	वेपते।
शक्तिड्	शंकाकरना (शक् + अ + ते)		शकते,	शक्तेते,	शकते।
शिचै	पढाना (शिच् + अ + ते)		शिचते,	शिचैते,	शिचते।
शोभै	शोभना (शोभ् + अ + ते)		शोभते,	शोभेते,	शोभते।
श्वेताड्	श्वेतहोना (श्वेत् + अ + ते)		श्वेतते,	श्वेतेते,	श्वेतते।
स्मिड्	मुस्कारना (स्मय् + अ + ते)		स्मयते,	स्मयेते,	स्मयते।
स्वादै	चाखना (स्वाद + अ + ते)		स्वादते,	स्वादैते,	स्वादते।
स्फुटै	फूसना (स्फुट् + अ + ते)		स्फुटते,	स्फुटेते,	स्फुटते।
स्यदूड्	वहना (स्यद् + अ + ते)		स्यदते,	स्यदेते,	स्यदते।

धातु	अप्रत्यय	प्रत्यय	एक०	वि०	बहु०
संभुङ्	विश्वासकरना	(संभ् + अ + ते)	संभते,	संभते	संभते ।
स्वजौङ्	आदिगनकरना	(स्वज् + अ + ते)	स्वजते,	स्वजते,	स्वजते ।
आहृङ्	आदरकरना	(आहृद् + अ + ते)	आहृयते,	आहृयते,	आहृयते ।
मृ (१)	मरना	(म्रिय् + अ + ते)	म्रियते,	म्रियते,	म्रियते ।
विजौडो	उद्विग्नहोना	(विज् + अ + ते)	विजते,	विजते,	विजते ।
ओप्यायीङ्	वटना	(प्याय् + अ + ते)	प्यायते,	प्यायते,	प्यायते ।

### द्वितीय पाठ ।

(२) उभयपदी ( तुदादि और भ्वादिगण्य ) धातुओंका व्यवहार ।

कृता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
कर्मक	गर्त	खनति (ते)	खिचान	गड्डा	खीदता है ।
चौर	हृत धन	गूहति (ते)	चौर	पुराणे चनकी	छिपाता है ।
बालक	खादनीय	चपति (ते)	बालक	भय पदायको	खाता है ।
बालक	बालक	छपति (ते)	बालक	बालकको	मारता है ।
चंद्र		त्वेपति (ते)	चंद्रमा		दीप्त होता है ।
असहाय	धनघत	भजति (ते)	निष्हाय	चनकी	शरणमें जाता है ।
धनी जन	मि ख	भरति (ते)	धनी आदमी	निष्णका	पोषण करता है ।
व्यावका	जिन	यजति (ते)	व्यावक	जिनको	पूजा करते हैं ।
अतिथि	धन	याचति (ते)	अतिथि	धनको	मांगता है ।
रजक	सस्त्राणि	रजति (ते)	धोशी (रजरेण)	रूपके	रंगता है ।
ऋष		राजति (ते)	राजा		शोभता है ।
क्षेत्रस्वामी	धीज	धपति (ते)	क्षेत्रका मालिक	बीज	बीता है ।

१—इस धातुमें 'ह' अथवा 'ये', छद्भी हत् नहीं है तबभी वतमानका०में विधिवनियमही आत्मनेपद् होता है । २—जिस धातुके दोनों प्रकारके ( आत्मनेपद् और परस्मैपद् ) रूप अनेक उसको उभयपदी कहते हैं ।



कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सूत्र्य	भार	वहति (ति)	नीकर	भार (रोमा)	हीता है ।
तसुवाया	वखाणि	वयति (ते)	मुनाई	वपई	वुनते है ।
भृगा	अद्रोन्	श्रयति (ते)	धन	दरतीका	वापय लेते है ।
शिष्या	समिध	आह्वरति (ते)	दिवायी	लजवा	जाते है ।
पुत्रगोक	हृदय	तुदति (ते)	पुत्रका गोक	हृदयको	अपित करता है ।
मभु.	भृत्यान्	आदिशति (ते)	मानिक	नीकरोंको	आज्ञा देता है ।
पाषक	अप	भृञ्जति (ते)	रहीरवा	अप	दखाता है ।
साधव	गाय	सिपति (ते)	गाय नीक	शरीरको	निशचरते है ।
भृत्य	हृष	सुपति (ते)	नीकर	क्रि	खाटता है ।

नीचे निचे मन्नेषी बाबू बनायी—

त्वेषते, वयेते, लुपते, तुदेते, श्रयेते, हृषते, सिपत, सुचते,  
सिपत, भृञ्जत, आह्वरते, भृञ्जति ।

### धात्वर्थ<sup>०</sup>

धातु	वर्ध	प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
खनुञ्	खोदना	( खन् + अ + ति )	खनति,	खनत,	खनन्ति ।
„	„	( खन् + अ + ते )	खनते,	खनते,	खनते ।
गूहञ्	छिपाना	( गूह् + अ + ति )	गूहति,	गूहत,	गूहति ।
„	„	( गूह् + अ + ते )	गूहते,	गूहते,	गूहते ।
अपञ्	खाना	( अप् + अ + ति )	अपति	अपत,	अपति ।
„	„	( अप् + अ + ते )	अपते,	अपते,	अपते ।
हृषञ्	मारना	( हृष् + अ + ति )	हृषति,	हृषत,	हृषति ।
„	„	( हृष् + अ + ते )	हृषते,	हृषते,	हृषते ।
भजौञ्	सेवाकरना	( भज् + अ + ति )	भजति,	भजत,	भजति ।
„	„	( भज् + अ + ते )	भजते,	भजते,	भजते ।

धातु	शब्द	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भृञ्	पालना	( भर् + ष + ति )	भरति,	भरत',	भरंति ।
"	"	( भर् + ष + ते )	भरते,	भरंते,	भरते ।
यजौञ्	पूजाकारना	( यज् + ष + ति )	यजति,	यजत ,	यजति ।
"	"	( यज् + ष + ते )	यजते,	यजेते,	यजते ।
याचञ्	मांगना	( याच् + ष + ति )	याचति,	याचत	याचति ।
"	"	( याच् + ष + ते )	याचते,	याचेते,	याचंते ।
रजौञ्	रगना	( रज् + ष + ति )	रजति,	रजत	रजति ।
"	"	( रज् + ष + ते )	रजते,	रजेते,	रजते ।
वृष्यौञ्	वीजवोना	( वप् + ष + ते )	वपते,	वपेते,	वप ते ।
"	"	( वप् + ष + ति )	वपति,	वपत',	वप ति ।
वह्नीञ्	सेजाना	( वह् + ष + ते )	वहते,	वहंते,	वहते ।
"	"	( वह् + ष + ति )	वहति,	वहत',	वहति ।
वेषञ्	कपड़ा बुनना	( वय् + ष + ते )	वयते,	वयेते,	वयते ।
"	"	( वय् + ष + ति )	वयति,	वयत ,	वयति ।
श्रियञ्	सेवा करना	( श्रय् + ष + ते )	श्रयते,	श्रयेते,	श्रयंते ।
"	"	( श्रय् + ष + ति )	श्रयति,	श्रयत ,	श्रयति ।
हृञ्	हरना	( हर् + ष + ते )	हरते,	हरंते,	हरंते ।
"	"	( हर् + ष + ति )	हरति,	हरत	हरति ।
भ्रृञ्	पकाना	( भृज् + ष + ते )	भृज्जते,	भृज्जेते,	भृज्जंते ।
"	"	( भृज् + ष + ति )	भृज्जति,	भृज्जत ,	भृज्जति ।
लिपीञ्	लेपकरना	( लिप् + ष + ते )	लिपते,	लिपेते,	लिपंते ।
"	"	( लिप् + ष + ति )	लिपति,	लिपत	लिपति ।
लुप्लुञ्	छिदना	( लुप् + ष + ते )	लुपते,	लुपेते,	लुपते ।
"	"	( लुप् + ष + ति )	लुपति,	लुपत ,	लुपति ।

## पञ्चमाध्याय ।

## प्रथम पाठ ।

## विसर्ग सधिका व्यवहार ।

( स धिके नियम कठ करानेकी आवश्यकता नहीं है केवल द्वितीयदेश चवचडामणि चानि  
वाक्योंके वाक्योंकी समझा समझाकर स धिके नियमोंकी बतलाना चाहिये )

## (१) अकारसे पर विसर्गका लोप ।

भृत्य आगच्छति—भृत्य + आगच्छति । भीकर जाता है ।

जिनदत्त इष्टस्यान गच्छति—जिनदत्त + इष्टस्यान गच्छति ।

जिनदत्त इष्टस्यानकी जाता है ।

राम सर ईक्षते—राम सर + ईक्षते । राम ताशाव देखता है ।

परिश्रमिण ईक्षते—परिश्रमिण + ईक्षते । परिश्रमी लोग चेष्टा करते हैं ।

बालक ईषते—बालक + ईषते । बालक जाता है ।

पर्वत उन्नत — पर्वत + उन्नत । पर्वत ऊँचा है ।

उन्नत उष्ट्र धावति—उन्नत + उष्ट्र धावति । लंका ऊँची है ।

धूम लध्व गच्छति—धूम + लध्व गच्छति । धुंध ऊपरकी जाता है ।

मनस्विन ऋषय शास्त्राणि मनति—मनस्विन + ऋषय शास्त्राणि  
मनति । मनसो नयो लोग शास्त्रोंका अभ्यासकरते हैं ।

वृष एजति—वृष + एजति । वृष दिलाता है ।

मत्त ऐरावत — मत्त + ऐरावत गच्छति । मत्त ऐरावत हाथी जाता है ।

उज्ज्वल भोषधिपति द्योतते—उज्ज्वल + भोषधिपति द्योतते ।

उज्ज्वल चंद्रमा जगकता है ।

रुग्ण भोषध इच्छति—रुग्ण + भोषध इच्छति । रोगी भोषध चाहता है ।

१—यदि इल्ल अकारके बाद विसर्ग होगे और उन विधियों के बाद इल्ल अकारकी लोपकर कोई भी सर होगा तो उन विधियों का लोप ही जायगा ।

पठ

पपठ

बालक अचति । बालक अचति । लक्ष्मी जाता है ।

नद्य अतति । नद्य अतति । नदी मन दा चढती है ।

सयत अथी धनं काचति । सयत अथी धनं काचति । स यमी

मिखारी धन चाहता है ।

पठ करो—

साधव अर्हणां इच्छति । साधव शाति इच्छति । ऐरावत अबु  
पिबति । बध्य वाच वदति । तरुण अरुण किरण वितरति । सरित  
नयनानि लुभति । पर्वत अभ्र स्पृशति । ऐरावत गगां गच्छति ।  
बालक नदी गच्छति । उदारचेतस दरिद्रान् भरति । राजान्  
मन्त्रिणं विन्यभते । सज्जन आश्रितं रक्षति । बाल आश (शोध)  
गच्छति । मनुष्य इदु पश्यति । छात्र इतिहास पठति । दुर्जन  
ईर्ष्या आचरति । लोक ईश भजते । पाठक उत्तरं यच्छति ।  
सूर्ख उदत भवति धार्मिक ऊर्ध्वलोक व्रजति । समुद्र ऊर्मि  
मान् । धनाढ्य ऋण यच्छति । बालक ऋतु वर्तते । अष्टम  
स्वरवर्ण ऋकार । जीव एकाकी गच्छति । सूर्ख एव वदति ।  
परिषद ऐक्य वाङ्मति । देवा ऐनविल (कुबेर) नमति । योषित  
शोक (घर) गच्छति । शोकार शोष्ठवर्ण । समाज शोन्नत्य  
( उन्नति ) इच्छति । शीतार्त औरभ्र ( कवल ) काचति ।

## द्वितीय पाठ ।

(१) आकारसे पर विसर्गका लोप ।

१ बालका अमृता वाच भाषते—बालका + अमृता वाच भाषते ।

लडके अमृतके समान मीठी वाणी बोलते हैं ।

१ दीप आकारसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंके बाद कोई भी स्वर अथवा वगका लोप, शीघ्र, पाँचवाँ अक्षर तथा य र ल न इ, हंगि तो उन विसर्ग का लोप ही लाया ।

## पञ्चमाध्याय ।

## प्रथम पाठ ।

## विभक्तौ संज्ञिका ध्ययङ्कार ।

( संज्ञिके नियम बंध बदलनेकी आवश्यकता नहीं है । केवल द्वितोपदेश स्वतन्त्रतादि आदि  
वाक्योंके वाक्योंको समझा समझाकर स विभक्तौ संज्ञिका ध्ययङ्कार )

## (१) अकारसे पर विभक्तौका लोप ।

भृत्य आगच्छति—भृत्य + आगच्छति । लोपक जाता है ।

जिनदत्त इष्टस्यान गच्छति—जिनदत्त + इष्टस्यान गच्छति ।

जिनदत्त इष्टस्यानकी जाता है ।

राम सर ईक्षते—राम सर + ईक्षते । राम साक्षर दीवता है ।

परित्रयिण ईक्षते—परित्रयिण + ईक्षते । परित्रयी लोग वेदा करते हैं ।

वासक ईक्षते—वासक + ईक्षते । वासक जाता है ।

पर्वत उद्यत—पर्वत + उद्यत । पर्वत ऊँचा है ।

उद्यत उद्यु धावति—उद्यत + उद्यु धावति । लोपक ट दीवता है ।

धूम ऊर्ध्व गच्छति—धूम + ऊर्ध्व गच्छति । धूम ऊपरकी जाता है ।

मनस्विन ऋषयः शास्त्राणि मनन्ति—मनस्विन + ऋषयः शास्त्राणि

मनन्ति । मनकी लोप लोप शास्त्रोंका पढावकरते हैं ।

वृष एजति—वृष + एजति । वृष हिमता है ।

मत्त ऐरावत—मत्त + ऐरावत गच्छति । मत्त ऐरावत जायी जाता है ।

उज्ज्वल भोपधिपति द्योतते—उज्ज्वल + भोपधिपति द्योतते ।

उज्ज्वल चंद्रम जमता है ।

रुग्ण भोपध इच्छति—रुग्ण + भोपध इच्छति । रोनी भोपध चाहता है ।

१—यदि इस अकारके बाद विभक्तौ संज्ञिके और उन विभक्तौ के बाद अन्य अकारकी लोपक  
की भी लोपकी जाती है उन विभक्तौका लोप ही जायगा ।

पठ

पपठ

बालक अचति । बालक अचति । नङ्गा जाता है ।

नद्य अतति । नद्य अतति । नदी सर्वदा चरती है ।

सयत अथो धनं काञ्चति । सयत अर्थो धन काञ्चति । स यमी

भिखारी धन चाहता है ।

पठ करो—

साधव अर्हणां इच्छति । साधव याति इच्छति । ऐरावत अबु  
पिबति । वध्व वाच वदति । तरुण अरुण किरण वितरति । सरित  
नयनानि लुभति । पर्वत अभ्र सृशति । ऐरावत गगा गच्छति ।  
बालक नदीं गच्छति । उदारचेतस दरिद्रान् भरति । राजान्  
सत्रिणं विजयते । सज्जन आश्रित रक्षति । बाल आश (शोभ)  
गच्छति । मनुष्य इन्दु पश्यति । छात्र इतिहास पठति । दुर्जन  
ईर्या आचरति । लोक ईश भजते । पाठक उत्तर यच्छति ।  
मूर्ख उद्वत भवति धार्मिक ऊर्ध्वलोक व्रजति । समुद्र ऊर्मि  
मान् । धनाढ्य ऋण यच्छति । बालक ऋणु वर्तते । अष्टम  
स्वरवर्णः ऋकार । जीव एकाकी गच्छति । मूर्ख, एव वदति ।  
परिषद ऐक्य वाहति । देवा ऐलविल (कुवेर) नमति । योषित  
शोक (घर) गच्छति । शोकार शोठप्रवर्ण । समाज शोवत्यं  
( उचति ) इच्छति । शीतार्त औरभ्र ( कवल ) काञ्चति ।

## द्वितीय पाठ ।

(१) आकारसे पर विसर्गका लोप ।

१ बालका अमृता वाच भाषते—बालका + अमृता वाच भाषते ।

शुद्धके अणुके समान मीठी वाणी बोलते हैं ।

१ दीप आकारसे पर विसर्ग होने और उन विसर्गोंके वाच कोई भी स्वर अथवा वगका तोसर, शोधा, पांचवां अक्षर तथा य र ल, व इ, इंगि तो उन विसर्गों का लोप हो जायगा ।

सता अभ्यं इच्छति—सता + अभ्य इच्छति । सतां इच्छति ।  
 वामका घातं समते—वामका + घातं समति । वामके घातं समते ।  
 प्रचेता इच्छति—प्रचेता + इच्छति । प्रचेता इच्छति ।  
 वेधा ईर्षं भवति—वेधा + ईर्षं भवति । वेधा ईर्षं भवति ।  
 वामका ईर्षते—वामका + ईर्षते । वामका ईर्षते ।

पर्यता छयता भवति—पर्यता + छयता भवति । पर्यता छयते ।  
 चद्रमा उच्छ्र सहरते—चद्रमा + उच्छ्र सहरते । चद्रमा उच्छ्र सहरते ।  
 भाष्या लभिका यच्छति—भाष्या + लभिका यच्छति । भाष्या लभिका यच्छति ।

तापसा प्रयोन् मेधते—तापसा + प्रयोन् मेधते । तापसा प्रयोन् मेधते ।

वामका घना घादति—वामका + घना घादति । वामका घना घादति ।

राजपुत्रा ऐश्वर्यं इच्छति—राजपुत्रा + ऐश्वर्यं इच्छति । राजपुत्रा ऐश्वर्यं इच्छति ।

सैनिका भोजस्विन सेनापति मानते—सैनिका + भोजस्विन सेनापति मानते ।  
 सैनिका सेनापति मानते । सैनिका सेनापति मानते ।

नागरिका भोरस राजपुत्रं मानते—नागरिका + भोरस राजपुत्रं मानते ।  
 नागरिका भोरस राजपुत्रं मानते । नागरिका भोरस राजपुत्रं मानते ।

२ प्रचेता गोवभिर्दं जयति—प्रचेता + गोवभिर्दं जयति । प्रचेता गोवभिर्दं जयति ।

अग्ना जयति—अग्ना + जयति । अग्ना जयति ।

दृग्णा डिभा विलपति—दृग्णा डिभा विलपति ।

वासका

सना सुद्धिमत ।

बुभुक्षिता बहु खादन्ति—बुभुक्षिता + बहु खादति । भूखे लोग खूब खाते हैं ।

श कु भकारा घटान् सृजति—कु भकारा' + घटान् सृजति । कुम्हार पढ़ीको बनाते हैं ।

बालका भटिति गच्छति—बालका + भटिति गच्छति । लडके लड्दो जाते हैं ।

बालका टका स्पृशति—बालका + टकां स्पृशति । लडके टका छूते हैं ।

मेघा धवला सजाता—मेघा + धवला सजाता' । मेघ देत हो गये ।

कन्या भृत्यान् आदिशति—कन्या + भृत्यान् आदिशति । कन्याये नौकरोंको आज्ञा देती हैं ।

४। दिग्गजा नदति—दिग्गजा + नदति । दिग्गज (दिशाभोक हाथी) चिंघाडते हैं ।

बालका मातुलालय गच्छति—बालका + मातुलालय गच्छति । लडके मामाके घर जाते हैं ।

५ गृहस्था यतीन् पूजति—गृहस्था + यतीन् पूजति । गृहस्थ यतियाँको पूजते हैं ।

चद्रमा रात्रि भूयति—चद्रमा + रात्रि भूयति । चद्रमा रातको भूयित करता है ।

बालिका लता छ तति—बालिका + लता छ तति । लडकियाँ लताओं को काटती हैं ।

भृत्या वदति—भृत्या + वदति । नौकर बोलते हैं ।

ब्राह्मणा हरिद्रां भिष्यते—ब्राह्मणा + हरिद्रा भिष्यते । ब्राह्मण लड्दो भाँसते हैं ।

सुख

असुख

६। बालका + कोकिल पश्यति ।

बालका कोकिल पश्यति ।

भृत्या + चीर प्रहरति ।

भृत्या चीर प्रहरति ।

उन्नता + तरव मेघ स्पृशति ।

उन्नता तरव मेघ स्पृशति ।

प्रजा + प्रजापति पूजति ।

प्रजा प्रजापति पूजति ।



७। छपीवना + च्छन्ति भिच्छते । छपीवना च्छन्ति भिच्छते ।  
 आचार्या + छात्रान् उपदिशति । आचार्या छात्रान् उपदिशति ।  
 वृक्षा + फलानि मुच्यते । वृक्षा फलानि मुच्यते ।

### तृतीय पाठ ।

( १ ) अकारसे पर विसर्ग और अकारको ओकार ।

बालकोऽचति—बालक + अचति ।  
 विद्यांसाऽज्ञान् उपदिशति—विद्यांस + अज्ञान् उपदिशति ।  
 गृहस्योऽतिथीन् सेवते—गृहस्य + अतिथीन् सेवते ।  
 हरिणोऽरण्यं गच्छति—हरिण + अरण्यं गच्छति ।

अचत् ।

अत् ।

बालक + आगच्छति—बालकोऽगच्छति—बालक आगच्छति ।  
 साधय + इद् अर्चति—साधयाऽर्चति—साधय इद् अर्चति ।  
 मानय + ईश्वरं पूजति—मानयोऽश्वरं पूजति—मानय ईश्वरं पूजति ।  
 छात्र + उपाध्यायं सेवते—छात्रोऽपाध्यायं सेवते—छात्र उपाध्यायं सेवते ।  
 बालक + उष्यं दुग्धं पिबति—बालकोऽष्यं दुग्धं पिबति—बालक उष्यं दुग्धं पिबति ।  
 गृहस्य + अर्चति—गृहस्योऽर्चति—गृहस्य अर्चति ।  
 बालक + एकाकी गच्छति—बालकोऽकाकी गच्छति—बालक एकाकी गच्छति ।

१। यदि अकारके बाद विसर्ग नहीं और उन विसर्ग के बाद इस अकार की तो उन (पदिशा अकार, ओपने विसर्ग अत् अकार) तीनोंके स्थानमें एक ओ कार आनायवा ।

सरितः + ऐरावत लुभति—सरितो ऽरावत लुभति—सरितं ऐरावत लुभति ।

भ्रमर + श्लोष्ठ दग्धति—भ्रमरोऽष्ठ दग्धति—भ्रमर श्लोष्ठ दग्धति ।  
भिषज्ज + औदरिकान् निदति—भिषजो ऽदरिकान् निदति—भिषज्ज औदरिकान् निदति ।

पृथक् ।

पृथक् ।

कोकिल + क्लृजति ।

कोकिलो ऽक्लृजति ।

छपभ. + केशरिण पश्यति ।

छपभोऽकेशरिण पश्यति ।

जाल्म + खट्वा आरोहति ।

जाल्मोऽखट्वा आरोहति ।

जन + चक्रवाक ईक्षते ।

जनोऽचक्रवाक ईक्षते ।

अश्व + चरति ।

अश्वो ऽचरति ।

छात्र + क्लृप्त वहति ।

छात्रोऽक्लृप्त वहति ।

बाल + टिट्ठिभ पश्यति ।

बालोऽटिट्ठिभ पश्यति ।

धार्मिक + ठक्कुर अर्चति ।

धार्मिकोऽठक्कुर अर्चति ।

योषित + तडि पश्यति ।

योषितोऽतडित पश्यति ।

मलिन + धूत्कार आचरति ।

मलिनोऽधूत्कार आचरति ।

नार्य + पति मानते ।

नार्योऽपति मानते ।

सर्ष + फणा वहति

सर्षोऽफणा वहति ।

## चतुर्थ पाठ ।

विसर्गोको ओकार ( १ )

१. हरिणो गुहा अयते—हरिण + गुहा अयते । हरिण गुहाका आवय  
लेता है ।

१—इस अकारके बाद विसर्ग और उन विद्युतोंके बाद वर्गका गोसर भीदा पाँचवाँ

र ल व और ह इति ती विसर्गोंके स्थानमें भी

बालको जननी ईक्षते—बालक + जननी ईक्षते। लक्ष्मणा काकी ईक्षता है।  
 बालो जमरु पश्यति—बाल + जमरु पश्यति। लक्ष्मणा जमरु ईक्षता है।  
 धनिनो दरिद्रान् भरति—धनिन + दरिद्रान् भरति। धनी लोद मरीचो  
 भी पालते है।

साधवो बालकान् स्मरति—साधव बालकान् स्मरति। साधु लोद  
 लक्ष्मणोको स्मरं करती है।

शयीरो घोटक इच्छति—शीर + घोटक इच्छति। शेर घोराको खाता है।

मधुरो भुङ्क्ते शृत—मधुर + भुङ्क्ते शृत। मधुर भुङ्क्ते शृता।

बालको टङ्का पश्यति—बालक + टङ्का पश्यति। लक्ष्मणा बालको देखता है।  
 गृहस्थो धर्मं गिच्छते—गृहस्थ + धर्मं गिच्छते। गृहस्थ धर्मको पढ़ता है।

सर्पो भेक वल्भते—सर्प + भेक वल्भते। साप लोदको खाता है।

शुद्धस्तिनो नदति—शुद्धस्तिन + नदति। शुद्धो निरुद्धते है।

पक्षिणो मत्स्यान् खादति—पक्षिण + मत्स्यान् खादति। पक्षि  
 मत्स्याको खाते है।

शालको यतते—बालक + यतते। शालक प्रथम करता है।

चद्रो रोधीषि वितरति—चद्र + रोधीषि वितरति। चंद्रमा चित्त  
 खोलता है।

शृपो लोभदुम पश्यति—शृप + लोभदुमं पश्यति। शाल लोभदुमको  
 देखता है।

बालको वदति—बालक + वदति। लक्ष्मणा बोलता है।

बालको हसति—बालक + हसति। लक्ष्मणा ईक्षता है।

अथ

शुद्ध

गृहस्थ + साधु सेवते—गृहस्थोसाधु सेवते—गृहस्थ साधु सेवते।

बालक + छोवन क्षिपति—बालको छोवन क्षिपति—बालक छोवन  
 क्षिपति।

- विद्वांस' + शिशून् उपदिशति—विद्वांसो शिशून् उपदिशति—विद्वांस  
शिशून् उपदिशति ।  
भृत्य + आगच्छति—भृत्योऽगच्छति—भृत्य आगच्छति ।  
नद्य + एधन्ते—नद्यो ऽधन्ते—नद्य एधन्ते ।  
शांतिरक्षक + चौर प्रहरति—शांतिरक्षको चौर प्रहरति—शांति  
रक्षक' चौर प्रहरति ।  
अरुण + तपन' शोभते—अरुणो तपन शोभते—अरुण तपन शोभते

### पंचम पाठ ।

विसर्गो को रकार । ( १ )

- १ इधिरावर्जित—इधि + आवर्जित । धी जाता ।  
मतिरेधते—मति + एधते । बुद्धि बढ़ती है ।  
साधुरागच्छति—साधु + आगच्छति । साधु जाता है ।  
बधूरीहते—बधू + इहते । बधू चेष्टा करती है ।  
२ मुनिर्गच्छति—मुनि + गच्छति । मुनि जाता है ।  
गुरुर्जोवति—गुरु + जोवति । गुरु जीवता है ।  
चमूदुर्गति' प्राप्ता—चमूः + दुर्गति प्राप्ता । शीमा दुर्गतिको प्राप्त हुई ।  
ऋषिबंधु वदति—ऋषि + बधु वदति । ऋषि बंधुको कहता है ।  
३ अग्निघृत दहति—अग्नि + घृत दहति । आग धीको जलाती है ।  
कारुर्भपान् पश्यति—कारु' + भपान् पश्यति । वन्धू मच्छत्रियोंको  
देखता है ।  
गुरुर्ध्यायति—गुरु + ध्यायति । गुरु ध्यान करता है ।

१—अकार और आकारसे भिन्न किसी भी शब्द पर यदि विसर्ग होने और उन विसर्गों के आगे कोई भी स्वर अथवा वगका होकरा, चौथा पाँचवा अकार, और य ख व

शिशुर्भास्करं पश्यति—शिशु + भास्करं पश्यति । नदवा शरको  
द्वयता ३ ।

४ यतिर्गोक्षां आरोहति—यति + गोक्षां आरोहति । यति नाथ पर  
चदता ३ ।

साधुर्मागधीं पठति—साधु + मागधीं पठति । साधु मागधीको पदता ३ ।

५ गद्ययुद्धं दृच्छति—गद्य + युद्धं दृच्छति । गद्य युद्धको वादता ३ ।  
नरपतियेति पूजति—नरपति + यति पूजति । राजा वतिको पूजा  
करता ३ ।

कपिर्नोभद्रुमं आरोहति—कपि + नोभद्रुमं आरोहति । बदर  
लोभ्रश्च पर चदता ३ ।

साधुर्वसति—साधु + वसति । साधु वसता ३ ।

शिशुर्हसति—शिशु + हसति । नदका हसता ३ ।

अपह ।

पह ।

बालक आगच्छति—बालकरागच्छति । बालक आगच्छति ।

अश्वं धायति—अश्वर्धावति । अश्वो धायति ।

शिशुव यतते—शिशुवर्यतते । शिशुवो यतते ।

सुनय अचति—सुनयरचति । सुनयोऽचति ।

बालका आगच्छति—बालकारागच्छति । बालका आगच्छति ।

प्रचेता नाथ अर्चति—प्रचेता नाथ अर्चति । प्रचेता नाथ अचति ।

कोकिलां फूजति—कोकिलाफूजति । कोकिलां फूजति ।

पह करे—

अग्निर्हविकीक्षति । साधुर्मधुरार्वाचर्मापते । मनोज्ञार्वादिध  
दृष्टा । रामभर्षिवति । बध्मर्मादृष्टहाणि गच्छति । निरकुगा  
दि कवय । बुद्धिमत्तर्नार्यगर्भते ।

षष्ठपाठ ।

विसर्गोको श, घ, ष, (१) ।

- १ चतुरक्षीरो धृत —चतुर + क्षीरो धृत ।  
 घोराद्यर्माणि इच्छति—वीरा + चर्माणि इच्छति ।  
 रविद्यक्षुपी तुदति—रवि + चक्षुपी तुदति ।  
 लक्ष्मीसंद्र गच्छति—लक्ष्मी. + चद्र गच्छति ।  
 साधुय डो जात —साधु + चडो जात ।  
 बधूय द्रमस पश्यति—बधू + च द्रमस पश्यति ।  
 क्षुधात्ता गौरति—क्षुधात्ता गौ + चरति ।  
 आचार्यंश्चात्र उपदिशति—आचार्य + चात्र उपदिशति ।  
 श्रत्याश्चिन्नान् तरुन् आहरति—श्रत्या. + चिन्नान् तरुन् आहरति  
 २ कारुटक इच्छति—कारु + टंक इच्छति ।  
 छात्रघकार पठति—छात्र + ठकार पठति ।  
 ३ श्रुत्यस्तरुन् क्तति—श्रुत्य + तरुन् क्तति ।  
 तपनस्ताप वितरति—तपन + ताप वितरति ।  
 बालस्थूत्कार करोति—बास + थूत्कारं करोति ।

षष्ठ करो—

रामो (२) सौमित्रि आभाषते । विविधा काननद्रुमार्याभते ।  
 चंदनशीतसरनिलवर्षहति । शैलार्थिराकते । सुगन्धयुक्तसुखस्पर्शहिंसावह  
 र्मायु वहति । विशालो शाल्मलीतरु तिष्ठति । पक्षिण निवसति ।  
 वायसो प्रबुद्धो पाशवत व्याध पश्यति । कपोतराजो सपरिवारवियत

१—किसी भी स्वर पर विभक्त होगी और छन विभक्तों से पर यदि च, छ होंगे तो  
 छन विभक्तों के स्थानमें 'य' यदि ट, ठ होंगे तो 'य' और त, थ, होंगे तो 'व' हो जायगा ।

२—स्वर से पर विभक्त होगी और छन विभक्तों से पर क, ख, प, फ, ब, भ, च, होंगे तो  
 विभक्तों २६ में कुछ भी परिवर्तन न होगा ।

गच्छति । कपोतराजो तद्बुद्धकणसुब्धान् कपोतान् षदति । द्रष्टुं प्रष्टुं  
 गर्भं गो भ्राम्यन् षवन्नोक्ति । गलितगखनयनर्जरह्य गृध्रो प्रति  
 यसति । वृक्षवासिन धर्मज्ञानरता विश्वासभूमय । अभ्यागतर  
 तिथि पूज्य । मार्जारार्हिं मासरुचया ऽभवति । मार्जारभूमि  
 स्पृशति ।

### साहित्य परिचय ।

( चतुष्पदाभि धितोपदेश आदि च श्लोके गाना प्रकारके वाक्य वता १ कर  
 प्रथोत्तरोंके विधादेना आदिथे । )

१ कुरुवशीया नृपतय शुद्धा सफलकर्माण सार्वभौमा स्वर्गमुक्ति  
 वर्त्मानय भवति । श्रेयासादयो राजानो यथाविधि जिन अर्चति,  
 यथाकाम अर्थिनोऽवन्ति, यथापराध च दोषिणोऽर्दति, इति  
 प्रसिद्धि । कौरवास्यागिनोऽल्पभाषिणो विजिगीषवय । कुरुव-  
 शीया युवराजा शिक्षिता भवति युवकास यथाकाल उद्बुद्धते ।  
 परसु वृद्धा जैनी दीघा धारयतो मुनिवृत्तयो धम ध्यायतस्तनुत्थजा  
 भवति ।

अपरचितशब्द—

यथाविधि—विधिके अनुसार ।

यथापराध—अपराधके अनुसार ।

यथाकाम—इच्छाके अनुसार ।

यथाकाल—ठीक समय पर ।

भाषा षट्—

२ कुरु वंशके राजा लीग शुद्ध सफलप्रयत्न, सपूर्ण पृथिवीके ईश्वर,  
 और स्वर्ग तथा मुक्तिको जाने वाले होते हैं । श्रेयांस आदिक  
 राजा विधिके अनुसार जिने द्रको पूजते हैं । अतिथियोंको इच्छा  
 के अनुसार संतुष्ट करते हैं और अपराधके अनुसार दोषियोंको  
 दंड देते हैं इसभातिकी प्रसिद्धि है । कौरवस्यो ग दानी  
 परिमित वीसनेवाले, और जयके अभिलाषी होते हैं । कुरुवय

के युवराज शिञ्चित होते हैं और युवा होने पर योग्यभवस्थामें विवाह करते हैं । परंतु वृद्ध होने पर जैाधर्मको दोष्ठा धारण कर मुनिकी वृत्ति वाले होते हुये और धर्मको ध्याते हुये शरीर को छोड़ते हैं ।

१ प्रश्नोत्तर-

- |  |                                 |
|--|---------------------------------|
| प्र० के (कौनसे) नृपतय  | प्र० कान् अर्धति, कान् अर्द्धति |
| उ० कुरुवशीया ते (वे)   | उ० अर्थिन, दोषिण                |
| प्र० कि विधा नृपतय   | प्र० पुन कि विधा; कुरुवशीया     |
| उ० ते शुद्धा इत्यादि   | उ० ते त्यागिन इत्यादि           |
| प्र० के शुद्धा इत्यादि                                       | प्र० अपि राजपुत्रा शिञ्चिता     |
| उ० कुरुवशीया नृपतय   | भवति                            |
| प्र० का ( क्या ) प्रसिद्धि                                   | उ० ते शिञ्चिता भवति एव          |
| उ० त्रयोसादयो राजानो यथा-                                    | प्र० के उद्बुद्धते              |
| विधि जिन अर्चति इत्यादि                                      | उ० युवका न तु शिशव              |
| प्र० का ( किसको ) अर्चति                                     | प्र० के मुनिवृत्तयः             |
| उ० जिन   | उ० वृद्धा न तु युवका            |
| प्र० किंविध वृद्धचरित ( वृद्धोंका क्या काम है )              |                                 |
| उ० वृद्धा जिनदोष्ठा धारयतो मुनिवृत्तयो धर्मं ध्यायंत इत्यादि |                                 |

व कृत मनाथो-

रामचंद्र लक्ष्मणको कहते हैं । वर्षा भागइ है । बादल ( नभ स्थल ) मेघसमूहत है । यौगमपीडित पृथिवी आसू छोड़ती है । ठंडी २ हवा चलरही है । प्रफुल्लितवृक्षोंको मेघधारा सींच रहो है । मेघ गर्ज रहो है । विद्युत् नोलमेघोंका आश्रय लेतो है और शोभती है । सूर्य मेघरुद्ध है इसलिये प्रकाशित नहीं होता है । नदियां बड़ती है । वनवासी जोय अपने अपने (स्व) स्थानका आश्रय



ले रहे हैं। मृग समूह जहाँ (यत्र) तथा (तत्र) स्थित है। अष्टापद भेदको खर्चा करता है ऊपर (ऊपरि) कूदता है (कूर्दति) पर विकल प्रयत्न होता है। हाथो चिघाडते हैं, सिंह गर्जते हैं, खरगोश (शक) विलमें घुसते हैं, समय दृष्ट्य है। दिशायें बहुत (बहु) शोभती हैं। इद्र धनुष मनको हरण करता है।

ग्रन्थनामा—

का समागता। किविध नभ। का वाप्याणि सुचति। अपि (का) पवनो वहति। को नदति। का नीलमघं त्रयते। कौटश स्य। का एधते। किविधा वनवासिना जीवा। कुत्र (कहाँ) तिष्ठति मृगसमूहा। क स्रधते अष्टापद, कि च भाचरति। अधुना गजसिंहशक का कि भाचरति (करते है)। कौटश वन।

निध लिखित विषय पर रुक्ततमे प्रयोपर करो—

(१) हत (हर्ष है) प्रभातप्रायो जात। अस्तोन्मुखो भगवान् निशाकर, दिनकरस्तु उदयोन्मुख। मलिन पश्चिम दिग्गन उज्वल तु पूव। स्युनानि कुसुदानि, उत्फुल्लानि तु कुवलयानि। महान् रमणाय समय। उदबुद्धा कूजनमुखरा विहगमा। विकसितानि सुरभीणि कुसुमानि। शिशिरसुदराणि श्यामलानि दूर्वात्रेवाणि। सुरभिथोतल समीरणो वहति। लोहितो मधुरो बालातपद्यातते। अनुचित अधुना शयन। परिहरणोय इदम् (यह) इदानीं हृद्ग मधुकरा अपि स्वकमेनिरता छात्रास्तु मानवा अत पठनीय।

विदो वर्ष—

हर्ष है कि प्राय सवेरा हो चुका है। भगवान् चद्र अस्त होने वाले है सुरज उदयके सम्मुख है। पश्चिम दिशाका आगन अधकार

१—अव्ययोंके न कोर निग होता है और न कोई वचन। इस द्विवि अव्ययोंके रूप नहीं चलते। वाक्योंमें जेधीकी तकीधी रखदो जाता है। जिस वाक्यमें कोई द्विया न लिखी हो उसमें अत (१) भवति (होता है) समझना चाहिये।

मय भीर पूर्वदिशाका प्रकाशमय है। कुसुद (कुई फूल) खान हो गये हैं लेकिन सूरजमुखी फूल खिनगये हैं। समय बडाही मनोहर है। कूजनेवाने पक्षी जाग गये हैं। सुगंधित फूल विकसित हो गये हैं। हरे हरे दूबके खेत भोससे सुदर दोख पड़ते हैं खुशबूदार ठढी हवा चल रही है। लाल भीर सुदर सूरज चमक रहा है। इस समय सोना अयोग्य है। इसको छोड़ना चाहिये। इस समय छोटे भीरे भी अपने काममें लगे हैं विद्यार्थी तो मनुष्य हैं इसलिये पटना चाहिये।

हिंदी कथा—

ब्रह्मदत्तनामा सम्राट् एक स्वभवनमायात परिव्राजकरूपिण देव पृच्छति। “कुत्र महामिष्टानि एतादृशानि (ऐसे) फलानि वर्तन्ते ? तत् श्रुत्वा परिव्राट् वदति।” “मदीयमठसमीपस्था बहवो वृक्षा तत्र बहूनि वर्तन्ते” तत (इसके बाद) शुभाशुभमविचारयन् जिह्वालपटो नृपस्तत्र गतु (जानेके लिये) आरभते। तत सागरसमीप गत्वा (जाकर) परिव्राट् सम्राज पतिदु ख यच्छति। दु खं अनुभवन् सम्राट् पचनमस्कारमत्र स्मरति। देवस्य मारयितु समर्थो न भवति।

अधुना मध्याह्नसमय, महान् निदाघ (धूप), उष्ण पवनो वहति। पथिका माग गच्छतो महांत कष्ट अनुभवति अत एव एकोऽपि (भो) पाया नयनपथ न अवतरति। सवद्य निस्तब्धता (गुनसान) वतते। पक्षिणोऽपि स्वकोयान् नौडान् प्राश्रयति। परं (लेकिन) अत्रियपुत्री अश्वारोहिणी ( घुड़ सवार ) वीरो युवानौ कुत्र अपि गच्छतौ दृष्टिपथ (नेत्रोंके सामने) अवतरत। एको श्वेत घोटकारोऽहौ द्वितीयस्य लोहिताश्वारोहो। हावपि आतरौ।

प्रश्नोत्तरमात्रा—

- १ क क पृच्छति। क प्रश्न। किम् उत्तरं ? नृप कि आचरति।
- २ कीदृश समय। पथिका कि न माग गच्छति। कौ नयन गोचरतां गतौ ?।

## षष्ठ अध्याय ।

सर्वादि शब्दोंका व्यवहार ।

## प्रथम पाठ ।

अकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ सर्व	सर्व	न अवगच्छति ।	सब लोग	सब (पगले)	नहीं जानते हैं ।
दुर्जना	सर्व	दूँजते ।	दुग न	सबको	निंदा करते हैं ।
अन्य	अन्य	शृच्छति ।	दूसरा	दूसरेको	पूढता है ।
२ अन्यौ	शास्त्राणि	गाहति ।	अन्य ही	पुस्तक शास्त्रोंको	पानीचना करते हैं ।
अन्य	अन्यौ	प्रबधौ पठति ।	दूसरा	अन्य ही प्रबन्धोंको	पढता है ।
३ सर्वे	अध्यापकान्	मानति ।	सब लोग	अध्यापकोंको	मानते हैं ।
देवा	सर्वान्	तिजते ।	देव	सबको	पना करते हैं ।
साध्व	अन्यान्	सेवते ।	साधु लोग	दूसरोंको	सेवा करते हैं ।

नीचे निम्ने शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

अन्यौ, सब, अन्य, सर्वौ, सर्वे ।

सब शब्दक रूप—

	एक	बि०	बहु
प्रथमा—	(१)सर्व	सर्वौ	सर्वे ।
द्वितीया—	सर्व	„	सर्वान् ।

द्वितीय पाठ ।

तद् (१) यद्, किम् (२) शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ सः	वास्तुकान्	पृच्छति ।	पद्	पालकोंको	पूजता है ।
सर्वे	त	निदति ।	सप्त	उसकी	निंदा करते हैं ।
य	घट	सृजति ।	जो	पड़की	बनाता है ।
सर्वे	य	अर्चति ।	सब	जिसको	पूजते हैं ।
कः	तं	उपदिशति ।	कीन	उसको	उपदेश देता है ।
स्वामी	क	आदिशति ।	स्वामी	किसको	आज्ञा देता है ।
२ तौ	यौ	मानते ।	वे दो	जिनदोको	मानते हैं ।
यौ	तौ	पृच्छत* ।	जो दो	उन दोको	पूछते हैं ।
की	मातुभालय	गच्छत ।	कीन दो	मामाके घर	जाते हैं ।
तौ	कौ	इच्छत ।	३ दो	किन दोको	चाहते हैं ।
३ ते	यान्	पृच्छन्ति ।	वे	जिनको	पूछते हैं ।
के	कान्	मानते ।	कीन खान	किसका	उत्थान करते हैं ।
ये	तान्	उपदिशति ।	जो लीन	उनको	'उपदेशदेते हैं ।

निम्न लिखित शब्दोंकी व्यवहारमें साकार वाक्य बनाओ—

य, ये, तान्, यौ, के, का स, तं, तौ, ।

१—तद् शब्दके तकारकी प्रथमाके एकवचनमें 'य' आदेश होता है । अतः तद्, यद्, यत्, यद्, इत्, इत्, और वि ये सात शब्दोंके अत अचरके स्थानमें 'य' हो जाता है इस क्रिये इनकी अकारांत समभङ्गा आदिमें और इनके रूप सर्व शब्दोंकी भांति चलाने चाहिये । जैसे—यत् शब्दकी 'य' समभङ्गा तो रूप य, यो ये आदि सन् शब्दकी भांति है । २—किम् शब्दकी 'क' शब्द समभङ्गा आदिमें ।

## द्वितीय पाठ ।

इदम् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ अय	सुख	इच्छति ।	यद्	सु	पाइता ऐ ।
स्वामी	इम	तिजते ।	स्वामी		चना करता ऐ ।
२ इमौ	क	पृच्छतः ।	शे दोनी	किसकी	पूछते ऐ ।
स	इमौ	वदति ।	वद्	इन दीको	कहता ऐ ।
३ इमे	पुस्तकानि	पठति ।	ये	पुस्तके	पढ़ते ऐ ।
सर्वे	इमान्	गहते ।	सर्व	नकी	निंदा करते ऐ ।
	अयद् ।			यद् ।	
की	अय	पृच्छत ।	की	इम	पृच्छत ।
इम	सुख	इच्छति ।	इमे	सुख	इच्छति ।
ते	इमे	मानति ।	ते	इमान्	मानति ।

नोधि निधे शब्दोसि वाच्य बनाओ—

अय, इमौ, इमे, इम, इमो, इमान ।

## चतुर्थ पाठ ।

अदस् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ असी	आश्रम	गच्छति ।	यद्	आश्रमको	जाता ऐ ।
अय	असु	वदति ।	यद्	इसकी	कहता ऐ ।
२ अमू	वस्तूनि	विनिमयेते ।	एद् दी अने	बहुषीका	खनदेन करते ऐ ।
शिष्यक	अमू	पृच्छति ।	शिष्य	इनदीकी	पूछता ऐ ।
३ अमी	सर्वान्	इजते ।	ये	उनकी	निंदा करते ऐ ।
सर्वे	अमून्	तिजते ।	सर्व	इनकी	चना करते ऐ ।

पठ ।

पठ ।

बालकः	अमी	पृच्छति ।	बालक	अमून्	पृच्छति ।
अमी	गृह	गच्छति ।	असौ	गृहं	गच्छति ।
अमू	तान्	उपदिशति ।	अमी	तान्	उपदिशति ।

नीचे विद्ये शब्दोंके वाक्य बनायीं—

असौ, अमू, अमी, असु, अमू, अमून् ।

### पंचम पाठ ।

पु लिङ्ग सर्वनाम शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग ।

पापात्मा	अथ	शुण्वत त	पापी यः	उस	शुण्वान्को	मारता
		रिषति ।				ई ।
गरीयांसौ	इमौ	होनान्	नडे ये	दी जने	हीन अथ खीनोंकी	
		सर्वान् निदत ।			निदा करते हैं ।	
उदारमतय	सर्वे	दरिद्रान्	उदारमति	अथ लोग	दूसरे दरिद्रोंकी	
		अपरान् भरति ।			पानते हैं ।	
लघुचेतस	इमे	निस्त्रान्	लघुचित्तवाले	ये लोग	इन दरिद्रोंकी	
		अमून् गर्हते ।			निन्दा करते हैं ।	
बुद्धिमंतौ	तौ	विदुषः इमान्	वे दो	उद्भिमान्	इन उद्भिमानोंकी	
		पृच्छति ।			पूछती हैं ।	
निर्वोध	यः	त ज्ञानिनः न	कीन	मूर्ख	उस ज्ञानीकी पास	
		व्रजति ।			नहीं जाता है ।	

पठ ।

पठ ।

पापकृत	अथ	पुण्यात्मन तान्	पापकृत् अथ	पुण्यात्मन	तान्
		गर्हते ।			गर्हते ।
विद्वांसौ	इमे	मूढान् अमू	विद्वांस	इमे	मूढौ अमू
		उपदिशति ।			उपदिशति ।

चरु

दुः

संहिता' अथ जाल हरति । संहिता' इमे ज्ञान हरति ।  
शोकार्तां ते विन्दपत्नी हृष्य शोकार्तां ते विन्दपत् हृष्य  
यामिन सर्वांन् पृच्छति । यामिन सर्वांन् पृच्छति ।

शेष निर्ये विशेषणको मत्र नाम शब्दादि भाष्य भगवत्पर वाक्य बनायी—

मतिमत, व्यायामी, गुणिन, भायंभौमान मेघाययिष्, सपु  
चेता, पापकर्माणौ, विद्यायत, कनीयांस गच्छत, दृष्टा, श्रुतवत  
ध्यायत, रोदनानुसारिणी ।

इह करो—

कन्यानिष्पु ते स्वयधरा कन्या इक्षते । क मूग वासितवत ।  
ज्यायांस अमू कनीयांस तान् उपदिशति । विदुष सर्वं मूर्खान्  
इमे तिजते । गायत स श्रोतार अमून् वदति । आयमागतौ  
असौ ध्यायंत तान् प्रथमतः । मारगर्भा अमू श्रुता । विचारक  
इमे दोषिण त पदेति ।

एक एक योग्य विशेषण रखकर वाक्य पूरे करी—

—असौ—इमान् पठति । —ते—अमू  
निन्दति । —सर्वे—तान् अक्षति । —अमू—तौ महत ।

अपवृक्त सर्वनाम भगवत्पर वाक्य पूरे करी—

—महामतय—अपराधिन—तिजते । बलवान्—  
दुर्वलान्—अर्दति । गच्छत—तिष्ठत—उपदिशति ।  
साधुशीली—परोपकारिण—मानते । शिक्षानुरागी—  
विद्यादातार—सिधते ।

संस्कृत बनायी—

वह जीवधर उसी काष्ठांगारको मारता है जिसने उसके पिता  
को मारा था (इतिम्) । ये लोग उस रावणके पास जाते हैं, जिसने

सीताको हरा था (हरतिष्म) । ये ही शास्त्रभक्त ब्रह्मसेवी भूपतिगण शत्रुओंको पराजित करते हैं । इस बैलको वह किसान चाहता है । यह बड़ा भारी अपराध है पर इसको भी वह सहता है । अन्य विद्वान क्या कहते हैं । दरिद्रताको कोई भी नहीं चाहता है । वह श्रेणिक ( विवसार ) सर्वत्र प्रसिद्ध है जो पहिले बौद्ध और पश्चात् जैन हुआ ( भवतिष्म ) ।

हिंदी वगैर—

अन्यबधुर्भवित्रो बाला अमु राजान तथा अतिक्रामति यथा सागर गत्रो स्रोतोवहा ( नदी ) मार्गस्थ महीधर अतिक्रामति । सागरोऽय महागभीर । असौ सूर्या मरोचि वितरति । अमी मत्स्या जलान् उत्क्षिपति । कोऽय जन ? य एव स्नानाथ नदीं गच्छति । स एव अयं यो मुनोन् सेवते छात्रान् च उपदिशति । श्मशानभूमि गतास्ते त मुनि प्रणतवत । सोऽपि मुनिराशोर्वाट दत्तवान् । अमु ग्रथ पठित्वा ( पढकर ) सर्वे छात्रा गृह गता । एष निर्धनी वन्न गच्छति । केचित् त श्लाघते अये च निदति । अय एव प्रिय सखा । सर्वे गुणा काचने आश्रयति । का अपि शवरो ( वारहसिगो ) नदीजल पिबतो प्रतिबिंबित आत्मरूप दृष्ट्वा महत् मुद लब्धवतो । तत पादप्रभृति ( यगैरे ) शिर पर्यंत सर्वान् अययवान् एकैकयो ( एक एक करके ) निरूपयतो गदितवतो “एतद् विषाण( सीग )युगल कियत् ( कितने ) मनोहर वर्तते । कथ ( कैसे ) सु दरे नयने, ये कमलानि अपि जयत । कथ अम कुसुमसदृश कीमल । पर ( लेकिन ) पादा एव नज्जा करा, । इमे क्षया दुर्दशनाश्च वर्तते ।



## परिशिष्ट ।

पूर्व शब्द ।

(१) एतत् ( यद् ) शब्द ( एवं व्यङ्ग्य )

एक	दि०	वङ्ग०	एक०	दि०	वङ्ग
प्रथ०—पूर्व	पूर्वी	पूर्वे, पूर्वा	एष	एतौ	एते ।
द्वि०—पूर्व	पूर्वी	पूर्वान्	एत, एन	एतौ, एनी	एतान्, एतान्

इसी तरह छ च तर, पर, चपर, चतर, दक्षिण, चपर, चपरके रूप सम्भवा ।

व्यङ्ग्य ( यद् ) के रूप प्रथमाके एकवचन में एत् होगा ।

(२) एक ( सुष्य, कीरे ) शब्द ।

(३) दि ( दी ) शब्द ।

प्रथ०—एक	एकी	एके	०	द्वौ	०
द्वि०—एक	एकी	एकान्	०	द्वौ	०

(४) प्रथम ( पहिला )

प्रथ०—प्रथम प्रथमी प्रथमे, प्रथमा ।

द्वि०—प्रथमं प्रथमी प्रथमान् ।

१—एतद् तथा इदम् शब्दके द्वितीया विभक्तियोंमें—एन एनी एनान् इस तरहके भी रूप होते हैं। इन रूपोंका प्रयोग सब जगह नहीं करते। जब एक बार इदम् अथवा एतद्, शब्दका प्रयोग एक पदायके लिये कर चुके हैं और फिर दूसरी बारभी उसी पदायके लिये इदम् अथवा एतद्का प्रयोग करना है तब इन रूपोंका प्रयोग करते हैं। जैसे—अथ धनवान् वतते ( यद् धनवान् है ) अत एन सव भागल (इस लिये इसका सब रुमान करते हैं) यदा एत सने मानति जादना अग्रह है । २। एक शब्दका अर्थ जब कि अकेला होता है अर्थात् जब किभोकी उल्ला मताता है तब एकवचन में रूप चलते हैं द्विवचन बहुवचनमें नहीं । ३—दि शब्दका एकवचन बहुवचन नहीं जाता । ४—इसी तरह—धरम, अथ धरं अतिपय मन और जिन शब्दोंके अतमें तथ है उन शब्दोंके रूप होते हैं ।

सज्जत वनाथो—

यह लडका सुशील है इसलिये इसको सब मानते हैं । इस विद्यार्थीने संस्कृतप्रवेशिनो पढली है ( पठितवान् ) इसलिये इसको जेनेद्र पढाया ( पाठय ) ये दोनों दुष्ट हैं इससे लोग इनको निंदा करते हैं । ये धार्मिक हैं इसलिये देव भी इनको नमते हैं । ये लोग विद्वान् हैं इससे इनको सब पूजते हैं । कोई कहते हैं कि ( यत् ) यह जीव मोघ जाकर ( गत्वा ) लौट आता है ( प्रत्या गच्छति ) घोर भ्रमण करता है पर पूर्वपाचार्योंने इस बातका खडन किया है ( प्रत्यास्यातवत ) ।

द्विती वनाथो—

ज्ञातिकुलैकसथयां भर्तृमतीं नारीं सतीं अपि जनोऽन्यथा विशकते । अतो भधव प्रियां अप्रियां वा स्त्रीं पतिगृह प्रति प्रेषयति ( भेजते है ) । परपीडन दुष्टस्वभावो ऽतस्तान् सज्जनास्त्रयति । बुद्धि मत्त स्रसामर्थ्यं बोध्या दानादिक आचरति । ये विचारशून्यास्तो आत्मान पडित मन्यमाना गव वहति । महातो जना परस्पर विवदते होनाय दु र् अनुभवति । यो द्विताद्वित न बोधति स प्रसन्नोऽपि हानि एव यच्छति । मधुरा वाणो कल्याणकारिणो । पडित स खलु ज्ञेयो यो नित्यं भाषते मितं । जीवन् नरो भद्र( कल्याण ) शतानि पश्यति । धामिका एते अत एनान् देवा अपि नमति । इम तडाम भ्रमरा सेवते अथो ( घोर ) एव विहायसद्यः । एतो जनौ अर्थिन सेवते अथो एनौ मित्राणि अपि । सर्वं स्वार्थं पश्यति । सूर्यो हि महान् उपकारकः ।

## षष्ठ पाठ ।

झीनिग ।

( १ )—आकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ सर्वा	गच्छन्	पूजति ।	सर्व ( स्त्री )	साधुको	पूजती है ।
साधु	सर्वा	उपदिशति ।	साधु	सर्व ( स्त्री ) को	उपदिशता है ।
जननी	अन्या	मेवते ।	मा	दुसरो ( स्त्री ) को	धरती है ।
२ अन्ये	सया	सेयेति ।	अन्य दो स्त्रियां	सर्व ( स्त्री ) को	धरती है ।
पुत्रशोक	अन्ये	तुदति ।	पुत्र शोक अन्य दो ( स्त्री ) को	बत देता है ।	
३ सर्वा	देवान्	अर्चति ।	सर्व ( स्त्रियां )	देवीको	पूजा करती है ।
साधु	सर्वा	उपदिशति ।	साधु	सर्व ( स्त्रियों ) को	उपदिश देता है ।

नोवे विधि शब्दोंसे बाह्य बनाओ—

सर्वा, अन्ये, अपरा, अन्या, अपरे, सर्वे, अपरा ।

## मसम पाठ ।

तद् यद् किम् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ सा	वालिका	वदति ।	वह	वालिकाको	बतती है ।
वालिका	तां	पृच्छति ।	सबको	उसको	पूछती है ।
या	त	अर्हति ।	ओ ( लड़की )	उसको	बत देती है ।

१—पढ़िये कतना कुछ कि कर्म आकारांत शब्दोंके दोष आकारांत कर देनेसे वे प्रायः झीनिग की जाति हैं उसी नियमसे अनुसार सब आदिक शब्दोंको भी झीनिगमें दोष आकारांत कर देना चाहिये । मन् आदि पढ़िये कतने गय शब्द अज्ञात होने पर भी आकारांत की जाति हैं यह भी बता चुके हैं इस विधि उनको भी उसी तरह झीनिग बनाकर रूप बनाने चाहिये । द्वितीय अध्यायके पढ़िये पाठके समान इन सब आदिकोंके रूप हींसे उक्त अर्थ मर्दा होता है ।

कता	कर्म	क्रिया ।	कता	कर्म	क्रिया ।	
स	यां	उद्दिशति ।	वद	लक्ष्मी	व्याख्या है ।	
का	वाच	भाषति ।	कीम ( स्त्री )	वाची	मोलती है ।	
वालिका	का	स्पृशति ।	लक्ष्मी	किम ( लक्ष्मी ) को	छती है ।	
२	ते	वालिकां	वदत* ।	वे दो ( स्त्रियां ) लक्ष्मीको	कहतीं हैं ।	
वालिका	ते	पृच्छति ।	लक्ष्मी	उम दो ( स्त्रियां ) को	पूछती है ।	
ये	त	पृच्छत ।	जो दो ( स्त्री )	उमको	पौछा देती हैं ।	
वालिका	के	स्पृशति ।	लक्ष्मी	किम दो ( स्त्री ) को	छती है ।	
३	ता	वालिकां	वदति ।	वे स्त्रियां	लक्ष्मीको	कहती हैं ।
ता	या	उपदिशति ।	वे स्त्रियां	जिम ( स्त्रियों ) को	उपदेश देती हैं ।	
प्रभय	का	आदिशति ।	आलो	लोग किम ( स्त्रियों ) को	आशा देते हैं ।	

निम्नलिखित शब्दोंका वचनरूप लाकर वाक्य बनाओ—

या, ये, या सा, ते ता, का, के, का, या, ये, या, तां, ते, ता, कां, के, का, ।

### अष्टम पाठ ।

इदम् शब्द ।

कता	कर्म	क्रिया ।	कता	कर्म	क्रिया ।	
१	इय	वाच	भाषति ।	यद् ( स्त्री )	वाक्य	कहती है ।
	जननी	इमां	पृच्छति ।	मा	इम ( स्त्री ) को	पूछती है ।
२	इमे	श्वसुरालय	गच्छत ।	ये दोनों ( स्त्रियां )	श्वसुरालयको	जाती हैं ।
	श्वशू	इमे	आदिशति ।	सास	इन दो ( स्त्रियों ) को	आशा देती है ।
३	इमा	क	पृच्छति ।	ये स्त्रियां	किमको	पूछती हैं ।
	क	इमा	ईक्षते ।	कीम	इन स्त्रियोंको	देखता है ।

नीचे लिखे शब्दोंमें वाक्य बनाओ—

इय, इमे, इमा, इमां, इमे, इमा ।

## नवम पाठ ।

## अदस् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ असौ	भृत्यां	तजति ।	यद् ( स्त्री )	भीकरणीको	ताडना देतो है ।
परिचारिका	अम्बु	मानते ।	नोकरको	इस ( स्त्री ) को	मानतो है ।
२ अम्बु	बालिकां	पृच्छति ।	ये दो स्त्रियां	लड़कियोंको	पूछतीं हैं ।
बालिका	अम्बु	पृच्छति ।	लड़को	इन दो स्त्रियोंको	पूछतो है ।
३ अम्बु	वाच	भाषते ।	ये स्त्रियां	बात	बाहतीं हैं ।
स्वामिनी	अम्बु	पृच्छति ।	मातृकिण	इन स्त्रियोंको	पूछतो है ।

नोवे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असौ, अम्बु अम्बु, अम्बु, अम्बु, अम्बु ।

## दशम पाठ ।

( स्त्रीलिङ्ग सर्वनामशब्दोंका विशेषणके साथ व्यवहार )

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	
सुदरी	सा	मनोज्ञां	इमां	सु दरी वर	मनोज्ञ इसको	देखतो
		पश्यति ।				है ।
सु दरी	अम्बु	मनोज्ञे	ते	सु दरी ये दोनों	मनोज्ञ	उन दोनोंकी
		पश्यत ।				देखतो हैं ।
ज्यायस्य	इमा	रुदती' ता	नेह	ये ( स्त्रियां )	रीतीं हुईं	उनकी
		उपदिशति ।				उपदेश देतो है ।
भृत्या	महानुभावां	इमां	अम्बु	लोक	इस महानुभाव	स्त्रीको
		सेवते ।				सेवते हैं ।
दात्रो	इमे	गृहीत्वो	सर्वा	दोषे	भाली	ये दो स्त्रियां
		स्पृशत ।				लेने वाली
						उन स्त्रियोंकी दूतीं हैं ।

ज्ञातां	कर्म	क्रिया ।	ज्ञातां	कर्म	क्रिया ।
शिक्षार्थिनो	असौ	शिक्षयित्री	शिक्षाको	बाइने	बाली यह स्त्री उस शिक्षिका
	तां	प्रणमति ।		श्रोको	प्रणाम करती है
गच्छत्यौ	एते	पृच्छतीं	अभू	जाती हुई	ये दो स्त्रियां पूछने बाली
		वदत ।		इस स्त्रीको कहती है ।	
धर्मपरा	एया	साध्वीं	अभू	धर्ममें तत्पर	यह स्त्री इस साध्वी
		अर्चति ।			को पूजती है ।
पूर्वा	कथा	श्रुता ।	पश्चिमी	कथाये	सुनी ।
ब्रह्मचारिण	उत्तरा	पुस्तिका	ब्रह्मचारी	लोग	बादकी पुस्तकें
		पठति ।			पढ़ते हैं ।
स्वर्ग	गत्रो	सा	कठोर	तप	स्वर्गकोपानेवाली
		चरति ।			यह स्त्री कठोर तप करती है ।
श्वेतयस्त्रधारिणी	इय	साध्वो	श्वेत	यस्त्र	धारण करनेवाली
	अर्चतीं	इमां	यदति ।	पूजनेवाली	इस स्त्रीको कहती है ।

अपठ

पठ

शुद्धवसना	एते	दात्री	अभू	शुद्धवसने	एते	दात्री	अभू
		अंचत ।				अंचत ।	
रामदास	मिथ्यां	इमां	वाञ्छति ।	रामदास	मिथ्या	इमां	वाञ्छति ।
रुदती	सर्वा	अस्मष्टां	एता	रुदत्य	सर्वा	अस्मष्टा	एता
		भाषते ।				भाषते ।	
इय	जैनपुस्तिका	सर्वा	पठिता ।	इय	जैनपुस्तिका	सर्वा	पठिता ।
शिक्ष्या	पवित्रां	एता	आश्चरति ।	शिक्ष्या	पवित्रा	एता	आश्चरति ।

## नवम पाठ ।

## अदस् शब्दः ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ असी	भृत्यां	तर्जति ।	यद् ( स्त्री )	नीकरनीको ताडना	दीती है ।
परिचारिका	अम्बू	मानती ।	नीकरणी	इस ( स्त्री ) को	मानती है ।
२ अम्बू	वालिकां	पृच्छति ।	ये दो स्त्रियां	लड़कीकी	पूरती है ।
वालिका	अम्बू	पृच्छति ।	लड़की	इस दो स्त्रियोंकी	पूरती है ।
३ अम्बू	वाच	भाषते ।	ये स्त्रियां	बत	कहती है ।
स्वामिनी	अम्बू	पृच्छति ।	मातृकिण	इस स्त्रियोंकी	पूरती है ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असी, अम्बू अम्बू, अम्बू, अम्बू, अम्बू ।

## दशम पाठ ।

( स्त्रीलिंग सर्वनामशब्दोंका विशेषणके साथ व्यवहार )

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सुदरो सा	मनोशां	इमां पश्यति ।	सुदरी वद्	मनोश इसको	देखती है ।
सुदर्यौ	अम्बू	मनोशे ती पश्यत ।	सुदरी ये दोनों	मनोश उन दोनोंकी	देखती है ।
ज्यायस्य	इमा	रुदती ता उपदिशति ।	वेठ ये ( स्त्रियां )	रोती ईई उनको	उपदेश देती है ।
भृत्या	महानुभार्या	इमां सेवते ।	भय लोग	इस महानुभाव	स्त्रीकी सेवते हैं ।
दात्रो	इमे गृहीत्रो	सर्वां स्पृशत ।	इने वाली	ये दो स्त्रियां	सने वाली स्त्रियोंकी छूती है ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
शिक्षार्थिनो	भ्रमो	शिक्षयित्री	शिक्षाको	बाइने	वाली यह स्त्री उस शिक्षिका
		तां प्रणमति ।			स्त्रीको प्रणाम करती है
गच्छत्यो	एते	पृच्छतीं	भ्रमूं	जातो	इह
				य दो	स्त्रियां पूछने वाली
		वदत ।			इस स्त्रीको कहती है ।
धर्मपरा	एषा	साध्वी	भ्रमू	धर्ममें	तत्पर
		अर्चति ।		यह	स्त्री इस साध्वी
					की पूजती है ।
पद्मा	कथा	श्रुता ।	पंडितो	कथायै	सुनी ।
ब्रह्मचारिण	उत्तरा	पुस्तिका	ब्रह्मचारी	लोग	बादलो
		पठति ।			पुस्तकें पढ़ते हैं ।
स्वर्ग	गत्रो	सा	कठोर	तप	स्वर्गकी
		चरति ।			जातिवाली यह स्त्री कठोर तप करती है ।
श्वेतवस्त्रधारिणी	इय	साध्वो	श्वेत	वस्त्र	धारण
		अर्चतीं	इमा	वदति ।	करनेवाली यह साध्वी पूजनेवाली इस स्त्रीको कहती है ।

चपड

चव

शुद्धवसना	एते	दात्री	भ्रमू	शुद्धवसने	एते	दात्री	भ्रमूं
			अचत ।				अचत ।
रामदास	मेध्यां	इमा	वाञ्छति ।	रामदास	मेध्या	इमा	वाञ्छति ।
रुदती	सर्वा	अस्मष्टां	एता	रुदत्य	सर्वा	अस्मष्टा	एता
			भाषते ।				भाषते ।
इय	जैनपुस्तिका	सर्वा	पठिता ।	इय	जैनपुस्तिका	सर्वा	पठिता ।
शिष्या*	पवित्रां	एता	आह्वरति ।	शिष्या	पवित्रा	एता	आह्वरति ।



इमा साध्वः अमू पवित्रा इमा साध्वः अमू पवित्रे  
 पश्यति । पश्यति ।  
 उल्लसला एते द्योतते । उल्लसना एषा द्योतते ।  
 क्लेशदायिन्य इय सजाता । क्लेशदायिन्य इमा सजाता ।  
 वेगवत्य अमो एधते । वेगवत्य अमू एधते ।  
 बुद्धिमत्यो असौ लज्जमाना बुद्धिमत्यो अम लज्जमाने  
 अमू पृच्छत । अमू पृच्छत ।

शब्द करो—

सर्पाकारा एषा वर्तते । श्वेता अमू शोभते । विदुषी सर्वा  
 मनोहारिणी इमा वदति । क्षुधिता इमे विपासिता एता पृच्छत ।  
 साध्वः असौ अर्चितवती अमू स्पशति । के ता गच्छति । असौ  
 वानिका किमिधा एता पश्यति । का अमू आगच्छति । वानक  
 का रात्री पश्यति । सा कां पृच्छति । ता अमू पृच्छति । अपि  
 ( यथा ) ते विदुष्य । ये गुणवत्य ते यथा सभते ।

भौचे लिखे शब्दोंमें एक १ वाक्य बनाओ लेकिन सर्पादि शब्दोंका प्रयोग करना आवश्यक है ।

पराजिता परिवहमानां, विभ्रत्यौ, गच्छतो, वदती, म्रियमाणे,  
 गरोयस्यौ, ज्यायसी, मायाविन्ध, सदृशीं, लज्जायती, हिरण्ययीं,  
 यशस्कर्यं श्रोतस्वती, दात्र, भवित्रीं ( होने वाली ), प्रागता ।

एक एक उपपुत्र शब्द लगाकर भौचे लिखे वाक्य पूरे करो—

—एता वदति, —असौ एधते, योषित्—इमां  
 पश्यति । वृष्टि —एता उच्चति । —इय—सर्वा तर्जति ।  
 —इमा प्रत्यावर्तते । परोपकारी—इमां सभते । लोका  
 —अमू मञ्जति ।—एता आकाश कथते । शिष्या —सर्वा  
 —मनन्ति । वन्दि—एते ददति । —इमे शोभते ।  
 विदुष्य —इमे अनुगच्छति ।

एकादश पाठ ।

	अपह ।		पह ।
श्यामल	इय	शोभते ।	श्यामला ( नीली ) इय शोभते ।
मनस्वी	एषा	राजते ।	मनस्विनी एषा राजते ।
कर्त्री	कार्यकुशल	अमू	कर्त्री कार्यकुशलां अमू
		आदिशति ।	आदिशति ।
विद्वान्	अमू रुदत	इमा	विदुष्य' अमू रुदतीं इमां
		उपदिशति ।	उपदिशति ।
ब्रह्मचारो	एता	ज्ञानदातार	ब्रह्मचारिण्य एता' ज्ञानदात्रीं
		परिषद गच्छति ।	परिषदं गच्छति ।
रत्नाभरण'	एषा दयावत	अमू	रत्नाभरणा एषा दयावती अमू
		अर्चति ।	अर्चति ।
सुग्रीव	रत्नभूषित	अयोध्या	सुग्रीव रत्नभूषिता अयोध्या
		इक्षते ।	इक्षते ।
वेगवत	एता'	एधते ।	वेगवत्य, एता एधते ।
ज्ञानवान्	इय शोभा	पश्यत	ज्ञानवतो इय शोभां पश्यतीं
		ता भाषते ।	ता भाषते ।
धूसरी	एते	आगच्छत ।	धूसरे एते आगच्छत ।

शुद्ध करो—

गुणवत अमू विद्याधौ इमा पृच्छति । शुभ्र एता मेघमुक्ता इमाम् उपगता ( प्राप्त इद ) । मनस्विनी ता मधुराणि इमे भाषते । कृप्या अय नील एतां कुवति । पवित्र इमा साधून् एता भाषते । साधु इमे सयतान् अमू मृशति ।

उपयुक्त सब नाम शब्दोंको प्रयोगमें पाकर नाका पूरे करो—

गुणवत्य ——देवसदृशो—सेवते । लक्ष्यार्त्ता ——लक्ष्यातुरां  
—दयते । सरलस्वभावा, —साधो, —अहति । स्वानार्थिन्य

—निर्मलमलिना—अशगाहते । कृतमीतापमित्याग —रदाकर  
धोता—रक्षति । मधुपानमशा ( मधुकेपानेन मधु द्रुये )—  
प्रफुल्लानि—त्यजति । धर्माधी—क्षेमकरा—इच्छति ।  
नीच लिये बाकोमि एकरचनके छानमे शूरचन और नदुवचनके छानमे एकरचन ११—

विदांस एते विचिता असु उदहते । पठितबुद्धिरसौ पर्य  
ज्ञाना इमा न भाषते । पुत्राद्येभ्य एता सार्धो अर्धति । कृत  
विवाहा इय नवाटा इमा अपदिशति । कन्यादृष्टुकामा ( मङ्गकीको  
देसनेको इच्छावालो ) एषा स्फटिकमयी तां प्रवति ।

सोपिदन्के छानमे पु निग और पु निगके छानमे सोपिदन्के छानमे—

निपुण अय गुणवती इमा सर्वा अपदिशति । चपला एषा  
सुदरी एता इच्छते । येगवत्यो इमे विशाल असु कांचित । प्रस  
विप्रो इय तं पुत्र पश्यति । यिनामिनो असौ मत ( अच्छा योग्य )  
त तजति । प्रिययादिन एते निर्वाधां सुभति । गरीयासौ इमो  
श्रेयसी अमु सभ ते । कनीयसो सा व्यायांस अभितपति ।

ऊपर लिये बाकोमि हिंदी लिये ।

हिंदी बनायो—

योऽन्धं षोडासहित पश्यति, तथा ( और ) तदीयां ( उसकी )  
तां षोडां चित्तयति ( विचारता है ) सोऽदृश्य एष चितासमाकुलो  
भवति । अधम अपदेद् ( अपदेग देनेके लिये ) को न पठित ।  
आकार एष ( ही ) सर्वान् गुणान् वदति । ये धूर्त्तास्ते नूर्त्तान्  
प्रायित्य ( आयकरके ) जीवति । या दु खसाध्या चपला दुरता  
सा लज्जो कथ ( क्यों ) न त्याज्या ( छोड़ने योग्य ) । सर्वं सुख  
न अनुभवति । सर्वा अपदो नम्वरा । या सर्वदा पति अनुसरति सा  
एव भार्या पतिव्रता । इमां विदुषीं वीक्ष्य के न आनन्द सभते । ता  
स्त्रियो हि ( लियेसे ) धन्या या भवति पतिव्रता । या एकां अवि

कुत्सितां वाच वदति सा नून ( निश्चयमे ) दडनीया ( दड देने के योग्य ) । ते एव मानवा धन्या ये जिहेंद्रिया । इमा ज्ञानगून्वा (१) अत ( इस लिये ) सर्वत्र अभिभयति ( तिरस्कृतहोती हैं ) । असौ मनो जयति अत सर्वान् जयति । अन्मू दात्रा गर्भं न वदति ।

संस्कृत श्लोको—

जो स्त्री परिमित धोन्ती है वह पंडिता है । वहही कार्य्य कुशल है जो विजयपाता है । यह स्वयं सुखसहित है इस लिये अन्य सबोंको भी सुखी समझती है । यह कौन घातो है ? यह वह ही साध्वी है जो यावकोंको उपदेश देती है । यह विचारी ( वराका ) दु खसे जोषन काटती है ( कठति ) इसको देखकर पापाण्डुदय मनुष्य पिघल जाता है ( गलति ) । यद्यपि वह शूद्र है तथापि उसका सब लोग आदर करते हैं क्योंकि ( यत ) गुणी है । यह बहुत भूखी है इस लिये शोत्रहो ( शोघ्न ) गुस्सा होतो है । यह नीति है इसका कौन लाघता है । स्त्रियां पतिका विश्वास करती हैं । यह बात सबत्र प्रसिद्ध हो रही है ।

### द्वादश पाठ ।

नपु सकर्लिंग—अकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ सब (२) वृष्टि		इच्छति ।	सर्व वस्तु	वर्षाकी	पाइती है ।
वृष्टि	सर्व	सिञ्चति ।	वधा	सर्वको	सँवती है ।
२ अपरे	वृष्टि	इच्छति ।	अन्य दो वस्तु	वृष्टिको	पाइती है ।
कर्ता	अपरे	पश्यति ।	कर्ता	अन्य ( दो वस्तु ) को	दिखता है ।

१—विद्यमान लोप होनेसे एकवचन और बहुवचनमें भेद नहीं रहता ही वधि क्रिया तथा विशेषणोंका पूरा र ध्यान रखना आवश्यक है । २—अथ कि किसी विशेष पदार्थको नहीं कहते तब किसी लिंगका नियम न होनेसे ( सामान्यमें ) नपु सक लिंगकी विभक्ती लाते हैं ।

३ सर्वाणि वृष्टि इच्छति । सर्व चीजें सर्वाको चाहती है ।  
कर्ता अपराणि पश्यति । कर्ता अन्य (वस्तु, चीं) को देखता है ।  
नौचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

( १ ) सर्व, सर्वे, सर्वाणि ।

## त्रयोदश पाठ ।

तद् यद् किम् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ तत्	त	तुदति ।	वह ( वस्तु )	उसको	पीटा देती है ।
स	तत्	पश्यति ।	वह	उस ( वस्तु ) को	देखता है ।
यत्	मन	हरति ।	जो	मनको	हरता है ।
मन	यत्	इच्छति ।	मन	जिसको	चाहता है ।
कि	वृष्टान्	कृतति ।	कौन ( वस्तु )	उसको	कागता है ।
वृष्ट	कि	विकिरति ।	वृष्ट	का	बखेरता है ।
२ ते	हृदयं	सुभत ।	वे दी ( वस्तु )	मनको	सुभाती है ।
सखिल	ते	सिचति ।	जल	उस दी ( वस्तु ) को	सौंचता है ।
के	हृदयं	सुभत ।	कौन दी ( वस्तु )	हृदयको	सुभाती है ।
ये	मन	हरत ।	जो दी वस्तु	मनको	हरती है ।
३ वृष्टा	फानि	विकिरति ।	वृष्ट	जिन वस्तुओंको	बर्षाते है ।
फानि	हृदय	सुभति ।	कौन ( वस्तु, ये )	उसको	सुभाती है ।
राजा	तानि	पश्यति ।	राजा	उस ( वस्तु, चीं ) को	देखता है ।

नौचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

कि, के, फानि तत्, ते तानि, यत्, ये, यानि ।

1—अपु उच्यते लिखते इयमा ( कर्ता ) नीर शितोया ( कर्म ) विभक्तौके समान रूप होते हैं ।

## चतुर्दश पाठ ।

इदम् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ इद	मन	हरति ।	यद् ( वस्तु )	मन	हरती है ।
राजा	इद	इच्छति ।	राजा	इस ( वस्तु ) को	चाहता है ।
२ इमे	जल	वितरत ।	ये दो ( वस्तु )	जल	दते हैं ।
शिशिर	इमे	तुदति ।	शिशिर ( ठंडी )	इन दो वस्तुओंकी	सताती है ।
३ इमानि	अग्नि	गूहति ।	ये ( वस्तुये )	आगकी	दिखाती है ।
अग्नि	इमानि	दहति ।	आग	इन ( वस्तु ) को	जलाती है ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

इद, इमे, इमानि ।

## पंचदश पाठ ।

अदस् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ अद	विहगमान्	सुभति ।	यद् ( वस्तु )	पक्षियों की	सुभाती है ।
अमरा	अद	पिबति ।	अमर	इस ( मधु ) को	पीते हैं ।
२ अमू	पर्वत	भूपतः ।	ये दो ( वस्तु )	पर्वतकी	सृष्टि करते हैं ।
अग्नि	अमू	दहति ।	आग	इन दोकी	जलाती है ।
३ अमूनि	पृथिवीं	सिञ्चति ।	वे	पृथिवीकी	सींचते हैं ।
बालका	अमूनि	खादति ।	बालक	इनको	खाते हैं ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अद,, अमू, अमूनि ।

इमानि दुर्लभानि । जमुवा नि खादु स्वायुबधन खादति । अय  
एतानि जलजतूनि रचति ।

हिने (१) वनाशो—

इद वपुर्माहात्म्य दौरात्म्य च वदति । अपराधि मानस सर्वदा  
आत्मान शकते । हित मनोहारि च दुर्लभ वच । अचार्या  
'गृहणी गृह' इति वदति । महद् यशो, दुर्लभं वर्तते । अत्य त  
सर्वे निद्य भवति । कुशलिनो जना नव मित्र' न विद्य भते ।  
सर्वे विद्वांसो न भव ति । प्रतिघण यत् वस्तु नयतां ( नवीनपना )  
गच्छति तद् एव रमणोय । एको धर्म एव सुहृत् य सर्वदा इम जीध  
अनुगच्छति । सुतप्त अपि वारि प्रायक शमयति ( बुझाना ) एव ।  
इच्छानुकूल ऐश्वर्य कोऽत्र ( इस लोकमें ) नभते पुमान् । स्वचेष्टि  
तानि एव नर गौरव अपमान वा नयति । अदो जल शुचि ( पवित्र )  
वर्तते । स्वभावजनिता प्रकृति कोऽपि न त्यजति । यत् धातं  
( धात ) वयो बोधति तत् सर्वे एव बोधति । जीवनं नरो भद्रशतानि  
( सैकड़ों कल्याण ) पश्यति । स्त्रीस्वभावो हि मात्सर्यं । स्त्रीमनो  
नित्य चचल भवति । पांडित्य क्षुध न शमयति । मायामय इद  
अखिल ( सपूर्ण ) विश्व ( जगत् ) । ससारोऽय रगभूमि ( नाटक  
घर ) नैरा नार्यं च नर्तका । सकृत् ( एकवार ) नष्टं यश' प्रायो न  
पुनर्लभते नर ।

स कृत वनाशो—

इस लोकमें ( अथ ) जो मनुष्य धनवाला है वहही पंडित गास्त्र  
शास्त्रा, गुणघ्न, वक्ता, दर्शनीय है क्योंकि ( यत ) अथ गुण धनका  
आश्रयण करती है । यह सपूर्ण जगत् दु खमय है । यहाँ कोई

१—दंशतमें—कतां पहिलीही रक्खा जाय चार कम तथा किया कानको ही रक्की जावे  
पसा कोई नियम नहीं है चाहे जहां रक्ख वक्ते है इस स्थिि हिदी व्याकारणके अनुसार  
विदायि योको अये समभ ९ कर मुहु भावा लिखनी चाहिनी ।

भो सुख नहीं पाता । आप ( भवान् ) कहां जाते हैं । यह विष्णो  
 वृक्षपर चढ़ती है ( आ रुह ) । अमर वार २ फूलपर बैठता है ।  
 यह बड़ा परियमी है । यह पुस्तक सुंदर है । यह एक टकड़ा है ।  
 जो परदूषणको नहीं कहता है संतोष धारता है अपनी प्रशंसा  
 नहीं करता नोतिको नहीं छोड़ता अपराधको क्षमा करता है वह  
 सज्जन है । जो मूढ़ इस दुष्प्राप्य नरजम्भको पाकर ( लब्धा )  
 धर्मका आवरण नहीं करता है वह दुर्लभ चित्तार्मणि रत्नका पाकर  
 छोड़ देता है । जो धर्मको छोड़कर इधर उधर इन्द्रिय सुखके  
 लिये ( इन्द्रियसुखाय ) दौड़ते हैं वे कल्पवृक्षको उखाड़ कर  
 ( उन्मूल्य ) धत्तूर तरुको बोते हैं । यदि मनुष्य धर्म नहीं करता है  
 तो यह जीवन निष्फल है । मगधनामका बड़ाभारी देश है ।  
 वह ( तत्र ) पुष्पपुरी नगरीको लाती है । यह कौन लडका है  
 और क्यों दोन है । वह राजपुत्र इस समय तरुणावस्थाका अनुभव  
 करता है । वह हृदा स्त्री रोती है । वे लोग ईश्वरका ध्यान  
 करते हैं । वे माता पिता प्रशंसाके योग्य हैं, जो अपने पुत्रोंको  
 पढाते हैं । वह सुमे धर्मका उपदेश देती है । यह बात राजानि  
 सुनो ( श्रुतवान् ) । मैंने भी यह काम किया है । परीक्षा बडो  
 भयकर घोज है । सब लोग इससे ( भय ) डरते हैं । यह  
 लडका बड़ा उद्द है ।

---



धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रुह	रुहना	(रुह् + धा + मि)	रोहामि,	रोहाय ,	रोहाम' ।
व्रुट	व्रुटना	(व्रुट् + धा + मि)	व्रुटामि,	व्रुटाव ,	व्रुटाम ।
सृजौ	वनाना	(सृज् + धा + मि)	सृजामि,	सृजाव ,	सृजाम ।
सृश	विचारना	(सृश् + धा + मि)	सृशामि,	सृशाव ,	सृशाम ।
शस	चाहना	(शस् + धा + मि)	शसामि,	शसाव ,	शसाम' ।
शिधि	सूधना	(शिध् + धा + मि)	शिधामि,	शिधाव ,	शिधाम ।
तक	हसना	(तक् + धा + मि)	तकामि,	तकाव ,	तकाम ।
गुजि	गूजना	(गुज् + धा + मि)	गुजामि,	गुजाव ,	गुजाम' ।
रट	रटना	(रट् + धा + मि)	रटामि,	रटाव	रटाम ।
नट	नाचना	(नट् + धा + मि)	नटामि,	नटाव	नटाम' ।
लुठि	आलस्यकरना	(लुठ् + धा + मि)	लुठामि,	लुठाव	लुठाम ।
मडि	भूषित करना	(मड् + धा + मि)	मडामि,	मडाव	मडाम ।
मुडि	मूडना	(मुड् + धा + मि)	मुडामि,	मुडाव	मुडाम' ।
लुटि	लूटना	(लुट् + धा + मि)	लुटामि,	लुटाव ,	लुटाम ।
जप	जपना	(जप् + धा + मि)	जपामि,	जपाव ,	जपाम ।
पच	इकहाहोना	(पच् + धा + मि)	पचामि	पचाव ,	पचाम ।
यभौ	खीसगकरना	(यभ् + धा + मि)	यभामि,	यभाव ,	यभाम ।
अण	अस्मष्टयद्दक्षरना	(अण् + धा + मि)	अणामि,	अणाव ,	अणाम' ।
रण	"	(रण् + धा + मि)	रणामि,	रणाव ,	रणाम ।
क्षण	"	(क्षण् + धा + मि)	क्षणामि,	क्षणाव ,	क्षणाम ।
कण	"	(कण् + धा + मि)	कणामि,	कणाय ,	कणाम ।
कील	बांधना	(कील् + धा + मि)	कीलामि,	कीलाव ,	कीलाम' ।
मील	पत्रफमारना	(मील् + धा + मि)	मीलामि,	मीलाव ,	मीलाम ।
फल	फलना	(फल् + धा + मि)	फलामि,	फलाव ,	फलाम ।
खल्ल	विचलितहोना	(खल्ल् + धा + मि)	खल्लामि,	खल्लाव ,	खल्लाम ।

धातु	वर्ध	प्रत्यय	एक०	द्वि०	तृ०
गल्	निगलना	खाना ( गल् + घा + मि )	गलामि,	गलाव ,	गलाम ।
चर्ध	चवामा	( चर्ध् + घा + मि )	चर्धामि,	चर्धाव ,	चर्धाम ।
लगे	लगना	आसन्नहोना ( लग् + घा + मि )	लगामि,	नगाव ,	नगाम ।
यण	देना	( यण् + घा + मि )	यणामि,	यणाव ,	यणाम ।
खन	शब्दकरना	( खन् + घा + मि )	खनामि,	खनाव ,	खनाम ।
वमु	उगलना	वमनकरना ( वम् + घा + मि )	वमामि,	वमाव ,	वमाम ।
पद्ल	दु खपाना	( सीद् + घा + मि )	सोदामि,	सीदाव ,	सीदाम ।
बुधञ्	जागना	( बोध् + घा + मि )	बोधामि,	बोधाव ,	बोधाम ।
चित्ती	विचारना	चीडना ( चित् + घा + मि )	चेतामि	चेताव ,	चेताम ।
थ्युतिर्	छूना,	भरना ( थ्योत् + घा + मि )	थ्योतामि,	थ्योताव ,	थ्योताम ।
इदि	महाऐश्वर्य	कोषाना ( इद् + घा + मि )	इदामि,	इदाव ,	इदाम ।
वला	कूदना	( वल् + घा + मि )	वलामि,	वलाव ,	वलाम ।
अक्षू	ध्यासकरना	( अक्ष् + घा + मि )	अक्षामि,	अक्षाव ,	अक्षाम ।
मूप	घोरो करना	( मूप् + घा + मि )	मूपामि,	मूपाव ,	मूपाम ।
घृयु	सघर्षणकरना	( घर्ष् + घा + मि )	घर्षामि,	घर्षाव ,	घर्षाम ।
कृषौ	लोटना	( कर्ष् + घा + मि )	कर्षामि,	कर्षाव ,	कर्षाम ।
शश	कूदकरचलना	( शश् + घा + मि )	शशामि,	शशाव ,	शशाम ।
गु फ	गूथना	( गु फ् + घा + मि )	गु फामि,	गु फाव ,	गु फाम ।
ब्रुड	डूबना	( ब्रुड् + घा + मि )	ब्रुडामि,	ब्रुडाव ,	ब्रुडाम ।
सृप	रेंगना	( सर्प् + घा + मि )	सर्षामि,	सर्षाव ,	सर्षाम ।
ह्वेञ्	बुलाना	( ह्वय् + घा + मि )	ह्वयामि,	ह्वयाव ,	ह्वयाम ।

धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रुह	चटना	(रोह् + आ + मि)	रोहामि,	रोहाव,	रोहाम् ।
व्रुट	टूटना	(व्रुट् + आ + मि)	व्रुटामि,	व्रुटाव,	व्रुटाम् ।
सृजौ	बनाना	(सृज् + आ + मि)	सृजामि,	सृजाव,	सृजाम् ।
सृश	विचारना	(सृश् + आ + मि)	सृशामि,	सृशाव,	सृशाम् ।
शस	चाहना	(शस् + आ + मि)	शसामि,	शसाव,	शसाम् ।
शिधि	सूचना	(शिध् + आ + मि)	शिधामि,	शिधाव,	शिधाम् ।
तक	हसना	(तक् + आ + मि)	तकामि,	तकाव,	तकाम् ।
गुजि	गूजना	(गुज् + आ + मि)	गुजामि,	गुजाव,	गुजाम् ।
रट	रटना	(रट् + आ + मि)	रटामि,	रटाव	रटाम् ।
नट	नाचना	(नट् + आ + मि)	नटामि,	नटाव	नटाम् ।
लुठि	आलस्यकरना	(लुठ् + आ + मि)	लुठामि,	लुठाव	लुठाम् ।
मडि	भूषित करना	(मड् + आ + मि)	मडामि,	मडाव	मडाम् ।
सुडि	मूढना	(सुड् + आ + मि)	सुडामि,	सुडाव	सुडाम् ।
लुटि	लूटना	(लुट् + आ + मि)	लुटामि,	लुटाव,	लुटाम् ।
जप	जपना	(जप् + आ + मि)	जपामि,	जपाव,	जपाम् ।
पच	इकट्टाहोना	(पच् + आ + मि)	पचामि,	पचाव,	पचाम् ।
यभौ	स्त्रीसगकरना	(यभ् + आ + मि)	यभामि,	यभाव,	यभाम् ।
अण	अस्मष्टशब्दकरना	(अण् + आ + मि)	अणामि,	अणाव,	अणाम् ।
रण	„	(रण् + आ + मि)	रणामि,	रणाव,	रणाम् ।
क्षण	„	(क्षण् + आ + मि)	क्षणामि,	क्षणाव,	क्षणाम् ।
कण	„	(कण् + आ + मि)	कणामि,	कणाव,	कणाम् ।
कील	वाधना	(कील् + आ + मि)	कीलामि,	कीलाव,	कीलाम् ।
मील	पञ्चकमारना	(मील् + आ + मि)	मीलामि,	मीलाव,	मीलाम् ।
फल	फलना	(फल् + आ + मि)	फलामि,	फलाव,	फलाम् ।
खल	विचलितहोना	(खल् + आ + मि)	खलामि,	खलाव,	खलाम् ।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

तुटे, खजावहे, ईचामहे, यसामहे, मानावहे, सेवावहे, खये,  
यतावहे, भापे, ईजावहे, गाहामहे, वपामहे, याचे, भनामहे, लु पा  
वहे, कत्यामहे ।

## धात्वर्थ<sup>१</sup>

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गाहँ	पानेकीइच्छाकरना	(गाहँ + अ + ए१)	गाहँ,	गाहावहे,	गाहामहे ।
बाध्	रोकना, दु खदेना	( बाध + अ + ए )	बाधे,	बाधोवहे,	बाधामहे ।
नाथ्	मागना	( नाथ + अ + ए )	नाथे,	नाथावहे,	नाथामहे ।
दधे	धारणकरना	( दध् + अ + ए )	दधे,	दधावहे,	दधामहे ।
वदिङ्	स्तुति, नमस्कारकरना	(वद् + अ + ए)	वदे,	वदावहे,	वदामहे ।
स्यदिङ्	हिलना	( स्यद् + अ + ए )	स्यदे,	स्यदावहे,	स्यदामहे ।
ददे	देना	( दद् + अ + ए )	ददे,	ददावहे,	ददामहे ।
ह्लादीङ्	सुखीहाना	( ह्लाद् + अ + ए )	ह्लादे	ह्लादावहे,	ह्लादामहे ।
यतीङ्	यत्नकरना	( यत् + अ + ए )	यते,	यतावहे,	यतामहे ।
अथिङ्	गिथिन होना	( अथ् + अ + ए )	अथे,	अथावहे,	अथामहे ।
लघिङ्	लाघना	( लघ + अ + ए )	लघे,	लघावहे,	लघामहे ।
चेष्टे	चेष्टाकरना	( चेष्ट + अ + ए )	चेष्टे,	चेष्टावहे,	चेष्टामहे ।
चडिङ्	क्रीधकरना	( चड् + अ + ए )	चडे,	चडावहे,	चडामहे ।
गुपौङ्	छिपाना	( गोप् + अ + ए )	गोपे,	गोपावहे,	गोपामहे ।
डुषेष्टुङ्	कांपना	( डेष् + अ + ए )	वेपे,	वेपावहे,	वेपामहे ।
कपिङ्	कांपना	( कप् + अ + ए )	कपे,	कपावहे,	कपामहे ।

१—एकवचनमें धातुमें 'अ+ए, द्विवचनमें 'आ+वहे, और बहुवचनमें 'आ+महे, प्रत्यय समझना चाहिये ।

## द्वितीय पाठ ।

अस्यद्शब्द—आत्मनेपदी धातु ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ अह	सरयू	ईचे (१)	मैं	सरयूकी	देखता ह ।
अह	बुद्धिमत्	कत्ये ।	मैं	बुद्धिमानोंकी	प्रशंसा करता ह ।
अह	मृत्यान्	गहँ ।	मैं	मौजरोहो	निग करता ह ।
२ आवां	अस्य	प्रसावहे ।	इम दो जने	अस्यको	खाते हैं ।
आवां	अध्यापक	मानावहे ।	इम दो जने	अध्यापकको	मानते हैं ।
आवां	पुस्तकाति	भयावहे ।	इम दो जने	पुस्तकोंको	बुझते हैं ।
आवां	मृत्यु	शकावहे ।	इम दोनों	मृत्युकी	शका करते हैं ।
३ वय	अस्य	बल्लामहे ।	इम सब	अस्यकी	खाते हैं ।
वयं	वीरान्	ज्ञाघामहे ।	इम	वीरोंकी	प्रशंसा करते हैं ।
वय	सत्यवादिन	विश्रभामहे ।	इम	सत्यवादोका	विश्रस करते हैं ।
वय	तान्	खजामहे ।	इम	सभकी	चर्चिदन करते हैं ।
	अपह ।			अह ।	
अह	सरयू	इच्छामि ।	अह	सरयू	ईचे ।
अह	शिशु	आद्रियते ।	अह	शिशु	आद्रिये ।
अह	श्रीषध	खादावहे ।	अह	श्रीषध	खादे ।
आवा		शिक्षाव ।	आवां		शिक्षावहे ।
आवां		वेपि ।	आवां		वेपावहे ।
वय	खाद्य	बल्लाम ।	वय	खाद्य	बल्लामहे ।
वय		दीक्षाम ।	वय		दीक्षामहे ।

१—आत्मनेपदी क्रिया गये प्रत्यय 'अ+ते अ+एते अ+न्ते के स्थानमें क्रमसे 'अ+ए आ+वहे आ+महे समझना चाहिये । जसे ईच+अ+ते आन्तिके स्थानमें 'ईच्+अ+ए आदि करनेसे ईचे, ईचावहे ईचामहे रूप होते हैं ।

निम्न लिखित शब्दोंकी व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

तुटे, स्वजावहे, ईहामहे, यसामहे, मानावहे, सेवावहे, खाये, यतावहे, भाये, ईजावहे, गाहामहे, वषामहे, याचे, भजामहे, तु पावहे, कथामहे ।

### धात्वर्थ<sup>१</sup>

धातु	अध	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गाहँ	पानेकी	इच्छाकरना	(गाहँ + अ + ए१)	गाहँ, गाहावहे, गाहामहे ।	
वाध्	रोकना, दु	खदेना	( वाध + अ + ए )	वाधे, वाधावहे, वाधामहे ।	
नाथ्	भागना		( नाथ + अ + ए )	नाथे, नाथावहे, नाथामहे ।	
दधे	धारणकरना		( दध् + अ + ए )	दधे, दधावहे, दधामहे ।	
वदिह्	स्मृति, नमस्कारकरना	(वद् + अ + ए)	वदे, वदावहे, वदामहे ।		
स्यदिह्	हिलना		( स्यद् + अ + ए )	स्यदे, स्यदावहे, स्यदामहे ।	
ददे	देना		( दद् + अ + ए )	ददे, ददावहे, ददामहे ।	
ह्यादीह्	सुखीहाना		( ह्याद् + अ + ए )	ह्यादे ह्यादावहे, ह्यादामहे ।	
यतीह्	यत्नकरना		( यत् + अ + ए )	यते यतावहे, यतामहे ।	
अथिह्	गिथिन होना		( अथ् + अ + ए )	अथे, अथावहे, अथामहे ।	
लघिह्	लाघना		( लघ् + अ + ए )	लघे, लघावहे, लघामहे ।	
चेष्टे	चेष्टाकरना		( चेष्ट + अ + ए )	चेष्टे, चेष्टावहे, चेष्टामहे ।	
चडिह्	क्रीडकरना		( चड् + अ + ए )	चडे, चडावहे, चडामहे ।	
गुपीह्	छिपाना		( गुप् + अ + ए )	गुपे, गुपावहे, गुपामहे ।	
धीषिह्	कांपना		( धीप् + अ + ए )	धीपे, धीपावहे, धीपामहे ।	
कपिह्	कांपना		( कप् + अ + ए )	कपे, कपावहे, कपामहे ।	

१—एकवचनमें धातुमें 'अ+ए' द्विवचनमें 'था+वहे' और बहुवचनमें 'था+महे', प्रथम धमकना चाहिye ।

धातु	बन्ध	प्रत्यय	एकवचन	बहुवचन	परवचन।
घृष्ये	मञ्जाकरना	( घृष् + घ + ण )	घृष्ये	घृष्यावहे,	घृष्यामहे ।
जभिद्	जंभाई लेना	( जभ् + घ + ण )	जभि,	जभावहे,	जभामहे ।
घष्ये	घ्यापारकरना	( घष् + घ + ण )	घष्ये,	घष्यावहे,	घष्यामहे ।
घूर्णे	घूरना	( घूर् + घ + ण )	घूर्णे	घूर्णावहे,	घूर्णामहे ।
दये	दयाकरना	( दय् + घ + ण )	दये,	दयावहे,	दयामहे ।
स्फायोह	बढ़ना	( स्फाय् + घ + ण )	स्फाये,	स्फायावहे,	स्फायामहे ।
सेवड	सेवाकरना	( सेव् + घ + ण )	सेवे,	सेयावहे,	सेवामहे ।
भ्यमे	भयकरना	( भ्यम + घ + ण )	भ्यमे,	भ्यसावहे,	भ्यमामहे ।
ऊहै	वितर्ककरना	( ऊह् + घ + ण )	ऊहे	ऊहावहे,	ऊहामहे ।
टैड्	रक्षाकरना	( टाय् + घ + ण )	टाये	टायामहे	टायामहे ।
काश्रुड	दीप्तहोना	( काग् + घ + ण )	काये,	कागावहे	कागामहे ।

२ कृत बनाओ—

मैं गाँवको जाता हूँ । मैं जगत्पूज्य श्रीविनेन्द्र भगवान्को नमस्कार करता हूँ । हम दो जने खाँपते हैं । मैं घमँ धारण करता हूँ । हमलोग घोटगाग सुनियोंकी सुति करते हैं । मैं दुष्टजीवोंकी बाधा देता हूँ । मैं खो हूँ ( बर्ते ) इसलिये लज्जा करती हूँ । हम लोग डरते हैं इसलिये पाप नहीं करते । मैं एक समाचार कहता हूँ । हम दोनों इस बातको जानते हैं । हम दोनों जंभाई लेते हैं । इसको अभी (पधुना एव) खाँघता हूँ । हम लोग घटते हैं इसलिये सुखी होते हैं । हम लोग तर्क वितर्क करते हैं ।

हिंदी बनाओ—

वय द्रमां वेदां कथं ( कैसे ) सङ्गामहे । अह अथ वसामि । प्रात ( सवेरे ) शीतपोडिता यथ कषामहे । आथां जीवान् दधावहे । वय आपद लवामहे । अह गत ( व्यतीत ) न शोचामि, कृत न माने, इसन् न जल्पामि । वय सुनयोऽतो न चङामहे ।

नटौ आवा नटाव । ध्यानिनो वय जिन जपाम । अह पुष्याणि  
शिषामि । वय सीदाम ।

## द्वितीय पाठ ।

उत्तमपुरुष ( अस्मद् ) के साथ पुनिग विशेषणका (१) प्रयोग ।

- १ पडित अह सत्य वदामि—पडित में सत्य बोलता ह ।  
दृष्टार्त्त अहं दृष्टि न लभे—दृष्टासे पडित में दृष्टिको नहीं पाता ह ।  
जैन अह जीवान् न शसामि—जैन में जीवोंको नहीं मारता ह ।  
क्रुष अह शिशून् तर्जामि—क्रुष इषा में बच्चोंको ताडना देता ह ।  
सेवकः अह स्वामिनं सेवे—सेवक में स्वामीकी सेवा करता ह ।  
सभ्या, सभ्य मा ज्ञाघते—सभ्य लोग मुझ सभ्यकी प्रशंसा करते हैं ।  
शिष्य गुरु मां मानते—शिष्य मुझ गुरुका सम्मान करता है ।  
क्रूर धर्मज्ञ मां रिपति—क्रूर लोग मुझ धर्मज्ञ पर क्रोध करते हैं ।
- २ छात्री आवां संस्कृत शिष्यावहे—विद्यार्थी हम दो जने संस्कृत पढ़ते हैं ।  
विनीती आवां न विवदावहे—नव हम दो जने विवाद नहीं करते हैं ।  
भक्तौ आवां गुरुन् मद्दाव —भक्त हम दो जने गुरुओंको पूजते हैं ।  
धर्मज्ञौ आवां धर्म दिशाव —धर्मकी जानने वाली हम दो जने धर्मका उपदेश  
देते हैं ।  
जना विपयिणौ आवा निदति—सांग विपयी हम दोजनोंकी निदा करते हैं ।  
वृद्धा नस्त्री आवां कस्त्यते—वृद्ध लोग नव हम दोकी प्रशंसा करते हैं ।

१—पडिदि बताया जा चुका है कि अस्मद् और युष्मद् शब्दके रूप तीनों निर्गुणों में समान होते हैं इसलिये विशेषणका निग कताके अनुसार रखना चाहिये पश्यान् अस्मद् या युष्मद् जिस वस्तुके लिये प्रयोगमें आवे गये हैं उसका जो निग हो वह ही विशेषणका रखना चाहिये । २—वि\* पूर्वक 'वद धातुका अथ विवाद करना होता है और धातु आत्मने पने हो



पिता उह् ही आवां तर्जति—पिता उह् इम दीकी ताङ्गा देवा है ।

३ शिष्टा वय वृहान् मानामहे—सभ्य इम लोग बड़ीका समान करते हैं ।

पापभोरव वय दानं ददामहे—पापसे करन वालु इम लोग दान देते हैं ।

अपथ्यभोजका वय ख्वराम—अपथ्य खानेवाले इम लोग खरसे पौकित  
होते हैं ।

वैद्या रुग्णान् अस्मान् तर्जति—व्य लोग रोगे इम लोगोंका खटते हैं ।

दुष्टा धार्मिकान् अस्मान् अर्दति—दुष्ट लोग धार्मिक इम लोगोंको दुष्ट  
हैत हैं ।

सुनय श्रायकान् अस्मान् उपदिशति—सुनि लोग श्रायक इम लोगोंको  
उपदीय देते हैं ।

### चतुर्थ पाठ ।

उत्तमपुरुष ( अस्मात् ) के साथ स्त्रीलिंग विशेषणका प्रयोग ।

१ साध्वी अह जिम ज्ञपामि—साध्वी म जिम मगवान्की अपती ह ।

सद्बुद्धि अह भूवाणि रटामि—सद् बुद्धिवाली म मूर्खोंको धोखती हू ।

विदुषी अह श्रास्त्रविद्वह वाक्य न भयामि—विदुषी में श्रास्त्रसे विद्वह नहीं  
कहती हू ।

पापिनी अह सोदामि—पापिनी म दुष्ट पाती हू ।

शूद्रा ब्राह्मणीं मा स्मृयति—शूद्र लो म्भ म्भ ब्राह्मणोंकी कृती है ।

सर्वे पारिव्राजिका मा कथ्यते—सभ लोग म्भ संन्यासिनीकी म्भ सा करते हैं ।

शिष्या पाठिकां मां वदते—शिष्या म्भ पढ़ाने वालाकी व दना करती है ।

२ प्रसवे आवां तकाव—प्रसव इम दानों कहती हैं ।

पडिते आवां प्रधावहे—प डित इम लो प्रदिह होते हैं ।

वुमुचिते आवा स्यादु अन्न प्रसावहे—भूखी इम दी जनो स्वाण्डि अन्नको  
खाती है ।

शानिन्यौ आवा संस्कृत धोधाव—शानिन्यौ इम दीनों संस्कृत जानती हैं ।

दयालव दोने आयां दयते—दयालु लोग हम दो दोनाओं पर दया करते हैं ।

दुर्जना सखी आवा बाधते—दुर्जन लोग हम दो सखियोंकी दुःख दैत हैं ।

सेवका, दयावली आयां श्रयंते—सेवक लोग दयावानो हम दोका आश्रय  
लैते हैं ।

३ निराश्रया वय सीदाम—आश्रय हीन हम सब दुःख पातो है ।

दृष्टा वय यत्नाम—दृष्टि हम सब कूती है ।

भक्ता वय भाला गु फाम—भक्त हम सब भालाओंको पूजतो है ।

नार्ये वय त्रपामहे—स्त्रियां हम सब लज्जा करतो है ।

श्राविका श्रायिका अस्मान् अधति—श्राविकायें हम श्रावियोंको पूजतो है ।

परिचारिका स्वामिनी अस्मान् सेधते—दासियां हम स्वामिनियोंकी सेवा  
करतो है ।

निर्दया अपि वराकी, अस्मान् दयते—दया रहित लोग भी हम दोनाओं  
पर दया करते हैं ।

## पंचमपाठ ।

( मध्यम पुरुष )

युष्मद् शब्द ( परस्मैपदौ धातु )—( १ )

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ त्व	पुण्याणि	श्रिधसि ।	तुम	फुलाको	सू घते हो ।
त्वं	पुस्तकानि	सूषसि ।	तुम	किताबोंको	पुगतो हो ।

१—पहिले बतला आये है कि युष्मद् शब्दके साथ मध्यम पुरुष क्रियाके रूप वाक्यों  
रको जाते है । प्रथम अध्यायके धातुय के प्रत्यय में जो प्रत्यय बतलाये है उन (अ+  
ति, अ+त अ+अनि) के स्थानमें मध्यमपुरुषके रूप बनानेके निये 'अ+सि अ+य  
अ+ध' कर देना चाहिये । जैसे—ब्रज ( जाना ) धातुके प्रथम पुरुषके रूप ब्रज +अ+ति  
ब्रजति आदि होते है तो मध्यम पुरुषमें एत 'अ+ति आनि प्रत्ययोंके स्थानमें अ+सि आदि  
कर देवसे ब्रजसि, ब्रजय, ब्रजध रूप होते है ।

कृत्	कर्म	द्विवा ।	कृत्	कर्म	द्विवा ।
त्व	सर्पान्	कीनसि ।	त्वं	सर्पान्	कीनसे षी ।
जना	त्वां	क्षितसि ।	जने	सुमन्	दाद करति षी ।
क्षात्रा	त्वां	गमसि ।	विद्यार्थी क्षीम	सुमन्	द्वय हा करति षी ।
२ युवां	सर्पकान्	कर्षय ।	सुम दी कने	सर्पान्	सर्प ते षी ।
युवा	राय	व्यस्य ।	सुम दी कने	सर्पान्	सर्पते षी ।
युवा		यस्य ।	सुम दी कने	सर्पान्	करति षी ।
जना	युवां	आर्षते ।	जने	सुम दी कने	सर्प हा करति षी ।
दीना	युवां	व्यय ते ।	नीम क्षीम	सुम दी कने	आयय मिते षी ।
३ यूय	कदली	धामय ।	सुम क्षीम	क्षीमादीन्	छाते षी ।
यूय		इदय ।	सुम क्षीम	सिद्धन्	पाते षी ।
यूय		प्रदय ।	सुम क्षीम		सूयते षी ।
यूय		मीलय ।	सुम क्षीम		सम्पन्न मारति षी ।
सर्षे	सुष्मान्	बोधति ।	सर्ष क्षीम	सुष्मान्	जानते षी ।
के	सुष्मान्	मिदति ।	कान क्षीम	सुष्मान्	मिद करते षी ।
	स्य			सु	
त्व	मातरं	चेतय ।	त्व	मातर	चेतसि ।
युवां	क्षेत्र	कर्षय ।	युवां	क्षेत्र	कर्षय ।
यूय	अश्वं	आरोहसि ।	यूय	अश्व	आरोहय ।
त्व		खलामि ।	त्व		खलामि ।
युवां	अथान्	सूपाय ।	युवा	अथान्	सूपाय ।
यय	घटान्	सृजाम ।	यूय	घटान्	सृजय ।
त्वं	गिरांसि	सुडति ।	त्वं	गिरांसि	सुडसि ।
युवां	ग्रामं	सेधय ।	युवां	ग्राम	सेधय ।
यय		भवति ।	यय		भवति ।

मोक्षे निम्ने प्रमदासि वाक्य वनाधो—

( क ) सोदथ बोधसि, अणथ, वलासि, अयसि, निखथः खादसि  
पृच्छथ, वदसि, त्यजसि, मुचथ, इच्छथ दशसि हा तथ,  
अदथ, चुवसि ।

( ख ) त्व युवां, यूय, त्वां युवा, युष्मान् ।

हिंदी वनाधो—

यदि त्व जल न मु चसि तर्हि ( तो ) वच्च कि क्षिपसि । त्व एव  
गर्वितो भवसि यत् ( जो ) वृद्धोन् अपि क्रामसि । त्व मा किमथ  
पृच्छसि अह किमपि न बोधामि । युवां कि प्रष्टु ( पूछनेके लिये )  
इच्छ १ । एकाकिनीं मां मुक्ता कुत्र त्वं व्रजसि । हा ! नवपद्मव-  
निर्मिता शय्या अपि त्वा ददति । यूय किमर्थं अत्र आगच्छथ । त्व  
कामपि विद्या बोधसि कि ? । अहं त्वां वदामि । कापुरुपा एव  
भ्यसते न धोरा । हा ! निर्दयस्त्व मा कि प्रहरसि । गात्राणि  
अभूनि न वहति सचेतनत्व, श्रोत्र ( कान ) स्फुटाचरपदा ( स्पष्ट  
अचर और पदवालो ) न गिर शृणोति ( सुनता है ) । कथ निमो-  
लितमिद सहसा ( अचानक ) एव चक्षुरिति ( इस तरह ) अमो  
असव ( प्राण ) मा त्यजति । त्व चक्षुरम्नीत्य ( बदकर ) कां  
स्त्रिष्ट चेतसि । त्व रघवोऽपि इम जन कथ ( कसे ) न रक्षसि ।  
तद् ( इसलिये ) अहं गृहं गत्वा ( जाकर ) गृहिणीमाह्वय ( बुला  
कर ) समीतकमनुतिष्ठामि(१) । इदं गृहं प्रविशामि । त्व  
किमकारणं क्रुदसि ? । तत् मलयपर्वतमेव आवा गच्छोव । यूय  
कि अनुतिष्ठथ । युवां पुन पुन तद् एव वदथ । यूय कथ न धन  
अणथ । वय कि अनुतिष्ठाम क ( कहां ) व्रजाम सर्व इद लगत्  
शून्य इव ( तरह ) लगति । यदि यय कमपि उपाय बोधथ तर्हि

१—एव सा ( तिष्ठ ) धातुका अर्थ 'करना' होता है ।

किं न मा उपदिशय । हा मदभाग्योऽहं एव म्रिये । युषा किं पठथ । यूय ह्यया एय दीनान् जतून् कीलय' । भारस्तथा मां न वाधते यथा 'वाधति' वाधते ।

कृत वतापी—

तुम दु खसे जीवन विताने हा । घों धार धार पाछे मीचते हो । सांप तुमकी काटता है । तुम दोनों मत्तोंको जानते हो । तुम लोग धर्मको करते हो । तुम क्या सोखते हो । क्या तुम दूध पीते हो । हमे पानी भी नहीं मिलता है । तुमको कौन रोकता है । तुम दोनों सबका विश्वास करते हो । हम सबका विश्वास नहीं करते हैं । तुम आमस्य करते हो । मैं प्रतिदिन (प्रतिदिन) एक पत्र लिखता हूँ । तुम लोग पचमत्रकी जपते ही यह खान कर (बुद्ध्या) मैं पानदित होता हूँ । तुम क्या काम करते हो । हम जेनेंद्र पठते हैं । तुम लोग दु ख पाते हो । क्या तुम लोग नट हो जो (यत्) नाचते हो । तुम लोग क्यों कूदते हो ।

### षष्ठ पाठ ।

युष्मद् ( शब्द ) चक्षनेपदी(१) धातु ।

कता	कर्म	क्रिया ।	कतो	कर्म	क्रिया ।
१ त्वं		वेपसे ।	तुम		कापते हो ।
त्व		वपसे ।	तुम		लजित होते हो ।
त्वं		भ्यससे ।	तुम		उरते हो ।

१—चाक्षनेपदी धातुचाके मध्यमपुरुषके हन चक्षनेके लिये धात्वर्थमें लिये इधे प्रत्यय 'च+ते च+एते च+से से ख्यातम कर्मसे च+से च+एसे च+धे कर देना चाहिये जसे—वेप+च+ते चाक्षिं म्यातमं 'वेप+च+से चाक्षिं करमेसे वेपसे वेपेवे वेपध बनते है ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
जना	त्वां	ददते ।	लोग	तुम्हारी	बंदना करते हैं ।
राजा	त्वां	दायते ।	राजा	तुम्हारी	रचा करता है ।
सेवक	त्वां	सेवते ।	भीकर	तुम्हारी	सेवा करता है ।
२ युवां		चलेथे ।	तुम दी जने		क्रोध करते हो ।
युवा		कपेथे ।	तुम दी जने		काँपते हो ।
युवां		अधेथे ।	तुम नी जने		शिक्षण होते हो ।
ते	युवां	दयते ।	वे लोग	तुमपर	दया करते हैं ।
शिष्ट	युवां	घूर्णते ।	शिष्ट	तुम्हारी तरफ	घूरता है ।
३ यय		द्वादध्वे ।	तुम लोग		प्रसन्न होते हो ।
ययं	धन	दधध्वे ।	तुम लोग	धनको	रखते हो ।
यूय	विपद	नघध्वे ।	तुम लय	विपत्तियोंको	लाँघते हो ।
यूय		ऊहध्वे ।	तुम लोग		तकवित्तर्ष करते हो ।
क्षात्रा	युष्मान्	ज्ञाघते ।	काव लोग	तुम्हारी	प्रशंसा करते हैं ।
	अपह ।			दह ।	

त्वं	तृथा	चेष्टे ।	त्व	तृथा	चेष्टसे ।
त्व	आत्मान	शक्तते ।	त्व	आत्मान	शक्तसे ।
त्व		वेपसि ।	त्व		वेपसे ।
युवा	दीनान्	दायावहे ।	युवां	दीनान्	दायेंथे ।
युवां	/	प्रथेते ।	युवां		प्रथेथे ।
युवां	दुर्जमान्	गहंथे ।	युवा	दुर्जनान्	गहंथे ।
यूय	अपराधिन	तिजामहे ।	यूय	अराधिन	तिजध्वे ।
यूय		दोघते ।	यूय		दोघध्वे ।
यूय		ईहथे ।	यूय		ईहध्वे ।

नीचे लिखे शब्दोंमें वाक्य बनाओ—

ईक्षध्वे, ईक्षसे, एधेथे, कचसे, चोभसे, गाहध्वे, द्योतेथे, मानध्वे,

रोचसे, वस्त्रध्वे, व्ययसे, शोभाध्वे, भ्रमसे, स्वियध्वे, उद्विग्ने, मज्जध्वे ।

कथ्यते इत्यादि—(त्रिधा चाक्रमेण्यी वा )

तुम लोग कौगधी नदी देखते हो । तुम दोनों मल्लनीकी निदा करते हो । तुम आम जिसवास्ते ( किमर्थ ) धोभित होती हो । तुम दोनों कौगधे गाइको मीसते हो । तुम माधुर्षीको पुत्रा धारते हो । बरो हया पोडित होते हो । यवा गका करते हो । तुम चद्रके समान गोभते हो । तुम किमधे पिवाह धारते हो । यों मुस्कराते हो । तुम लोग यों किमवास नहीं करते । सहकीका तुम दोनों धादर करते हो । क्या धौपधि धाधते हो ?

### सप्तम पाठ ।

युष्मद् शब्दके साय विगेषणका प्रयोग ।

पुं-र

स्त्री-र

- १ पडित त्व मत्स्य वदसि । साधो त्व विन जपसि ।  
 छण्यात त्व त्वसि न लभसे । रुदबुद्धि त्वं सूत्राणि रटसि ।  
 जेन त्व जीवान् न गससि । विदपो त्वं शास्त्रविरुद्ध न भणसि ।  
 क्रुद्ध त्व शिशून् तर्पसि । पापिनी त्व सोदसि ।  
 सेवक त्वं स्वामिन सेवसे । शूद्रा प्राङ्गणीं त्वां स्पृशति ।  
 सभ्या उभ्य त्वा श्लाघते । सर्वे संन्यासिनीं त्वां कल्पते ।  
 शिष्य शुरु त्वां मानते । शिष्या पाठिकां त्वां रदते ।  
 क्रूरा धर्मज्ञ त्वां रिपति । क्रूरा धर्मज्ञां त्वां रिपति ।
- २ छात्री युवा सस्क त शिच्छेधे । प्रसन्ने युवां — तकथ ।  
 विनोती युवां न विवदेधे । पठिते युवां  
 भक्तौ युवां गुरुन् भवथ । वसुधैव कुटुम्बकम् ।  
 धर्मज्ञौ युवा धर्म दिगथ । ॥ ॥

पु निग

स्त्रीनिग

जना विप्रयिणो युवां निदति । दयालव दीने युवां दयते ।  
 वृद्धा मन्त्रो युवा कथ्यते । दुर्जना सत्यो युवा बाधते ।  
 पिता उह डौ युवा तर्जति । सेवका दयावत्यौ युवां सेधते ।  
 ३ शिष्टा यूय वृद्धान् मानध्वे । निराश्रया यूय सीदथ ।  
 पापभीरव यूय दान ददध्वे । हृष्टा यूय वल्गय ।  
 अपथ्यभोजका यूय च्वरथ । भक्ता यूय माला शु फय ।  
 वेद्या रुग्णान् युष्मान् तर्जति । नार्य यूय वपध्वे ।  
 दुष्टा धार्मिकान् युष्मान् अर्दति । श्राविका श्रायिका युष्मान् अर्चति ।  
 सुनय श्रावकान् युष्मान् दिशति । परिचारिका स्वामिनौ युष्मान्  
 सेवते ।

## अष्टम पाठ ।

### साहित्य परिचय

( उच्यमानि पुरुष और क्रियाका स व ध आत्मनयन और दरर्षीपदका अन्वहार निग  
 और वचनके अनुसर विशे अणका प्रोग तथा विसर्ग संधिके निश्चय अण्डी तरह  
 ध्यानमें रहने चाहिय )

मन्त्रमालाका उभर लिखी—

निरपराधिनी अजनाकी सासु और श्वसुर छोडती है । पञ्चनजय  
 इस वातको बानकर बहुत दु स्थित होती है, अजनाकी दू टनेकी  
 ( अन्वो ट्टु १ ) लिये वे उगल २ फिरते हैं । अचनाने एक पुत्र जना  
 है ( सूतवतो ) वह बडा प्रतापो है मामा ( मातुल ) उसे पालता  
 है ।

१-अनु-पुत्रक ईषे ( काना ) धातुका अण् दू टना होता है ।



प्रश्नमाहा—

किमर्थं पवनजयो व्ययते । कादृशी (कैसी) चञ्जना कस्य-  
जति । क कां चन्वीपते । का क सुतवती । कथभूत (कैसा)  
स पुत्र । कस्य त्रायते ?

प्रश्नान्तर समाह्वर निती—

मयनाभिरामो लक्ष्मीसमन्वितसु दरांग कुमार पवनजय ग्रने  
ग्रने (धीरे २) चद्र इव यधते । राजपुत्र सम्यग् (भच्छो तरह)  
गुरुन् सेवते । सर्वा विद्या उपविद्याय पठति । विवाहयोग्य स  
सु दरांगी राजकन्यागुह्यते । त कुमार राजा युवराजपद ददते ।  
पुनर्नृप कदाचित् (किसी समय) पततो तडित दृष्ट्वा चेतति “एव  
एव समस्त जीवितयौवनादि अनित्य तथापि (तो भी) मूढोऽय जगो  
न बोधति । तथा दुःखमदान् दापान न स्मरति” ।

संज्ञत समाहा—

प्रात कालमें (प्रात) राजा सम्पूर्ण नित्यक्रियायोको करके  
(पनुष्ठाय) सिंहासनपर बैठता है छोटेछोटे बहूतसे राजा लोग उसको  
नमस्कार करते है । इसके बाद (अथ) एक द्वारपाल आकर  
(आगत्य) कहता है कि—एक भक्त हाथी नगरके लोगोंको दुःख  
दे रहा है । वह आदमियोंको इस तरह फेकता है (आस्फालयति)  
कि वे विचारे गिरते हुये ही प्राण छोड देते है इस बातको सुनकर  
(आकण्ठ्यं) राजा क्रुद्ध होता है ।

प्रश्नमाहा—

कीदृशी राजा ? के क प्रणमति । क क वदति । कथभूतो  
गज । क क अर्दति । क कान् कि विधं (किस तरह) आस्फा  
लयति । क कि श्रुत्वा चडते ।

हिंदी भाषामें अनुवाद करो ।

मुनि राजान् पर्यभ्रष्टपण्डरं शरन्ति । कान्त जलशिला यथा

धानपूर्वकं शृणोति ( सुनती है ) । तृतीयद्वीपस्थितं सुगधिनामा देशो वर्तते । स (१) देशः शीतोदान्दोतट अधिवसति । यत्र (जहा) कुसुमानि स्वकीय सुगंध विकिरति, नित्यप्रमोदिन्य प्रजा ह्लादते तथा अथ धर्मार्थ, काम सतानवृद्ध्यर्थं सेवते न व्यसनार्थं । पथिका अध्वान ( मार्ग ) गृहप्रागणसनिभ । ( घरके प्रागणके समान) बोधति । स जनाभिनापित वस्तु, शश्वत् ( हमेशा) सपादयन् कल्पपादपमडिता महीं जीतु ( जीतने लिये ) निच्छति । यत्र विद्युत् चचला, न सपद, प्राहृडभ्राणि, ( वर्षाकृतके मेघ ) कृष्णानि न जनचरितानि ।

नीचे निचे शब्दोंकी व्यवहारमें साकर किसी नगर या देशका वर्णन करो—

प्राकार\*, ( शहरका कोट ) बहुभूमिसहिता, प्रासादा, कुसुमानि, काशते, कृजति, चचललोचना, आनन्द, भ्रमरसमूह जीवितेश्वर, वधू, जनाकुल, पृच्छति आरामा ( वगीचे ), श्रुत्या, जिनालया, कामिन, अनुनयति, वतते, विभूति, धनिका, शोभते, मेघा इव, कामति,

इस गद्यकी सिद्धीकी इससे मिलाओ—

इष्टुकारनामा सुरसेव्यमानुदक्षिणदिग्ध्यापी पवती वर्तते । तत्पूर्वभरत विभूषन् अलकाभिधो देशो वर्तते । यो देश कमलानना मधुकरौमयास्तनुबाहुवता हृदयहारिणोस्तरुणी, व्याप्तनि खिलचितितनान् धान्यचयान् च दधते । यत्रत्या विविधसस्यसमुदायपरिपूर्णा भूमिर्जनमनासि लुभति । यत्र सदा जना सुखिन, वृक्षपक्षय सकुसुमा, कुसुमानि फलवति, फलानि मधुराणि । तत्र किंचिदपि तत् वस्तु न, यत् जनतामुद न वितरति । तत्र विभुवन-

\* एतत् शीतं तद् गृहके प्रदमाके एक वचनके विषय अजग वदने रहनेसे नष्ट हो जाये है ।

प्रसिद्धा बहुधनसम्पन्ना प्रसुरपुण्यजनपूर्णा कौशल्यानाम्नी नगरी वर्तते ।

विदी वनापो—

देवताओंसे सेवनीय शिखरोंवाला दक्षिण दिगामें व्याप्त इपुञ्जार नामक पर्वत है । उसके पूर्वभरतको शोभित करता हुआ अलका नामक देश है । जो देश कामसके समान सुखवाली, भ्रमरीके समान आखवालों पतलीशाहूवाली हृदयको हरण करनेवाली युवतियोंको और तमाम पृथ्वीतलको व्याप्त करनेवाले धान्यके ढेरोंको धारण करता है । जिस देशकी (जहाकी) नाना प्रकारके धान्य समूहसे परिपूर्ण भूमि लोगोंके मनोंको मोहित करती है । जहा योग हमेशा सुखी हैं । वृक्षोंको पक्ति फूलवाली, फूल फल यान्त्रिक, और फल मधुर हैं । वहां कोई भी बह चीज नहीं, जो कि लोगोंको हर्ष न करती हो । उस देशमें तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध बहुत धनसे धनवाली, महान् पुण्यवाले जनोसे भरी हुई कौशला नामकी नगरी है ।

पत्र करो—

गुण एव पुरुष गुरुतां नयते । स महतीं उपवासपूर्वं जिज्ञासा अनुतिष्ठति । पौरा जन महोत्सव चरति । अत अहमपि बहुत्व इच्छति । अखिलोऽपि भीरु गुर भवति । लक्ष्मी नक्त तुषारश्चि भजते, दिवा (दिनमें) सरीज गच्छति इति चपला अपि तदीय तनु मुच्यति । स सर्वगुणसपन्न अत खलस्वभावो द्विधतोऽपि ता इष्ट्वा मोदते ।

अष्टम अध्याय ।

तुदादि शौर भूषादि गणकी धातुश्रीका भूतकाल  
वाची शब्दके साथ प्रयोग

( १ ) क्त—योग

प्रथम पाठ ।

योद्धार	स्वजीवितानि रक्षति क्त ।	धीहाशने	पपने श्रीवगकी	रखा की ।
तत्कटक.	प्रतिदिन वर्धते क्त ।	उसको	सेना दिनपर दिन बढ़ने लगी ।	
पवतीया	त सेवते क्त ।	बिहारीय	उसको	सेवते थे ।
व्रद्धचारिण	दीक्षते क्त ।	व्रद्धचारिण		दीक्षा ली ।
दीपौ	शोभते क्त ।	दो दीपक		शोभते थे ।
चद्र	काशते क्त ।	चन्द्रमा		शमकता था ।
रजका	वस्त्राणि रजति (क्ते) क्त ।	रजक श्रीव	कपड़े	रजते थे ।
मेघा	समुद्र आय्यते क्त ।	मेघनि	समुद्रका	आय्यते किया ।
मृत्यौ	सन्धान् सुपत (पेते) क्त ।	दो से बक	इन्को	काते थे ।

संस्कृत वनाश्री—

( क ) भव्यलोग महावीर स्वामोके पास गये । राजा अपने पुत्रकी देखकर हर्षित हुआ । दो किसानों को दो गड्डे खोदे थे । सुनीन्द्र इस तरह (एव) उपदेश देते थे । राजपुत्रको असुरने डाटा । किस रोगीने औषध नहीं खाई थी । उस देवने राजकुमारको कहा । शीतपीडित हम दो जने कापे थे । तुम दोनों क्यों हसते थे । धीरे २ पुत्र बढ़ने लगा ।

१—पड़िले वतकाथि गये जियवके कपड़ेके साथ 'क' लगा देनेसे वतमान कालकी जगह भूतकालका अर्थ होजाता है । जैसे— गच्छति ( जाता है ) वतमल धातुका रूप है उसके साथ 'क' लगा देनेसे गच्छति क्त ( गया ) एसा ही जायगा ।

प्रसिद्धा बहुधनसम्पन्ना प्रचुरपुण्यजनपूर्णा कौगलानाम्नी नगरी  
वर्तते ।

विशेषज्ञापी—

देवताओंसे सेवनीय शिवरोद्याना दक्षिण दिगामें व्याप्त इयुकार  
नामक पर्वत है । उसके पृथ्वरतको शोभित करता हुआ बनका  
नामक देश है । जो देश कामनके समान सुखवाली, भ्रमरीके  
समान प्रांखवाली पतलीबाहुवाली हृदयको हरण करीवाली  
युवतियोंको और तमाम पृथ्वीतनकी व्याप्त करनेवाले धान्यके  
ढेरोंको धारण करता है । जिस देशकी ( जहाँकी ) नाना प्रकारके  
धान्य समूहसे परिपूर्ण भूमि लोगोंके मनको मोहित करती है ।  
जहाँ लोग हमेशा सुखी हैं । वहाँको पत्ति फूलवाली, फूल फल  
वाले, और फल मधुर हैं । वहाँ कोई भी बह घीज नहीं, जो कि  
लोगोंको हर्ष न करती हो । उस देशमें तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध  
बहुत धनसे धनवाली, महान् पुण्यवाले जनोसे भरी हुई कौगला  
नामकी नगरी है ।

पह करो—

गुण एव पुरुष गुरुतां नयते । स महती उपवासपूर्वे जिज्ञाप्ता  
अनुतिष्ठति । पीरा जन महोत्सव चरति । अत अहमपि बहुत्व  
इच्छति । अखिलोऽपि भोरु शूर भवति । लक्ष्मी नक्त तुषाररश्मि  
भजते, दिवा ( दिनमें ) सरीज गच्छति इति चपला अपि तदीय तनु  
मुच्यति । स सर्वगुणसपन्न अत खलस्वभावो द्विपतोऽपि ता दृष्टवा  
मोदते ।

अष्टम अध्याय ।

तुटादि और भूवादि गणकी धातुर्षोका भूतकाल  
याची शब्दके साथ प्रयोग

( १ ) ण—योग

प्रथम पाठ ।

याज्ञार	स्वर्जीवितानि रक्षति स्म ।	धीहाषीने	चपने	जीवनकी	रक्षा की ।
तत्कटक	प्रतिदिन बधते स्म ।	उसकी	सेना	दिनपर दिन बर्ने	लगी ।
पर्वतीया	त मेधते स्म ।	भिक्षुलीग	उसकी	से	धते थे
ब्रह्मचारिण	दीक्षते स्म ।	ब्रह्मचारियोंनि		दीक्षा	ली ।
दीपी	शोभते स्म ।	दा दीपक		शोभते	थे ।
चद्र	काशते स्म ।	चंद्रमा		शमकता	था ।
रजक्ता	वस्त्राणि रजति (न्ते) स्म ।	रजरेज लीय	कपड़े	रजते	थे ।
मेधा	समुद्र प्राय्यते स्म ।	मेधोंने	समुद्रका	प्रायण	क्रिया ।
भृत्यो	हृद्यात्सुपत (पेतं) स्म ।	दो से बक	हथोंकी	काटते	थे ।

संस्कृत वनाची—

( क ) भव्यलोग महावीर स्वामोके पास गये । राजा अपने पुत्रकी देखकर क्षुब्ध हुआ । दो किसानोंो दो गड्डे खोदे थे । सुनींद्र इस तरह (एव) उपदेश देते थे । राजपुत्रको असुरने डाटा । किस रोगीने औषध नहीं खाई थी । उस देवने राजकुमारको कहा । शीतपीडित हम दो जने कापे थे । तुम दोनों क्यों हसते थे । धीरे २ पुत्र बढ़ने लगा ।

१—पश्चिमी बतलाये गये क्रियाके रूपोंके साथ 'स्म' लगा देनेसे वतमान कालकी जगह भूतकालका अर्थ होजाता है । अन्ते—'गच्छति ( जाता है ) गमल धातुका रूप है उसकी साथ 'स्म' लगा देनेसे गच्छति स्म ( गया ) एसा ही आयाग ।

घोर लोगोंने भयको छोड़ दिया। तुमने उमि क्यों नहीं छोड़ा। जयधर्मा इस प्रकारबन्धु कुमारकी वाकर ( सुभ्या ममहोत्सव नगरमें प्रवेश करता हुआ। संपूर्ण फल श्रेत वष हो गये। पिताने पुत्रका आनिगम किया। असहा लोगोंने धनिकींसा महारा निया। राजाने अपने पुत्र पक्षा। उसने कहा हम कहीं ( कुत्रापि ) नहीं गये थे। गुणी लोग घोर पादमियोंको प्रशंसा करते थे। विद्या पठितोंने शास्त्री की आलोचना की। कौन २ दे प्रसिद्ध हुये।

- (ख) राजाने कहा—मैंने पूरे भवोंको जाना तथापि मन संशयव प्राप्त होता है, मुनिने इस बातकी सुनकर ( आश्चर्य ) उम देग दिया। राजाने उनकी पूजाकी और ब्रतोंको धार किया।
- (ग) वनसानी विपुलावलकी सब फलफलोमें सहित देखक हर्षित हुआ और राजगृही नगरीकी आया वहाँ ( तब उसने रत्नचित्रसिंहामनपर बैठे हुये शान्तमूर्ति श्रीशैवि कको देखा, सबक लोग चरणोंकी सेवा करते थे विद्या मंत्रिगण गूढ विषयोंका विचार करते थे अनेक छोटे २ राज उसको प्रणाम करते थे।
- (घ) श्रीवर्माने पित्रदत्त राज्य पाया। साम्राज्याभिपन्न नृत राजाको स्वयं लक्ष्मी सेवा करने लगी। सरस्वती भी उसको वदना करती थी। पूर्वराजाओंमें भुक्त भी पृथक् फल देने लगी।
- (ङ) पिताने शोकसे मुक्त हुआ श्रीवर्मा पृथ्वीको जोननेके लिये ( साधयितु ) चला। मौलवल भागे ( पुर ) घनाटविष पोछे ( पद्यात् ) और सामतवल वीचमें ( मध्ये ) चलना था।

सुरगमोत्य सेमारजने दिशाघोंको वेष्टित किया । ध्वजाघोंने सूर्यको चाच्छादित किया चलनेके समय होनेवाले ( गमन-कालसमुद्भव) मत्तमतग चलने धूलिको साँचा । प्रस्थानसमय भायो पटहशब्दने पर्वततट और शत्रु चिह्नकोष्ययित किया । नगर वासियोंने उसके दर्शन किये । शत्रु लोगोंने लडके और स्त्रियोंको छोड (मुछ्ठा) अपनी रक्षाके लिये ( आधरचाघ ) दिशाघोंका आश्रय लिया ।

दि दो वनाघो—

सिंहचन्द्रनामा मुनिरिकदा ( एकसमय ) राक्षीं वदतिष्म कि-  
 त्व न चेतसि ? यद् दग्ति स्म यदा (जब) एका सर्पो मदीय ( मेरे )  
 पितर, तदा ( तब ) एव म्रियते स्म स । ततो ( उसके बाद )  
 भवतिष्म स सप्तकीधनस्यो गज । स भ्रुवपूर्वी मदीय पिता एव  
 तपयत मां हतु ( मारनेके लिये ) प्रागच्छतिष्म एकदा । तदा  
 अहं त गज उपदिगामिष्म यत् पूर्व ( पहिले ) त्व मदीय' पुण्य  
 पिता वर्ततेष्म अथ च सिंहचन्द्रनामा त्वदीय ( तुम्हारा ) पुत्र ।  
 अथ ( आज ) पुनस्त्व मां हतु ईहसे इति ( यह ) महद् आश्चर्य ।  
 इति श्रुत्वा ( सुनकर ) गजो निजपूर्वभव स्मरति स्म तथा पुन  
 पुनश्च क्र दतिष्म । त तथाभूत दृष्ट्वा गदामि स्म यत् यदि त्व घरे  
 अनुतिष्ठसि तदा कल्याण, न अन्यथा । अत प चपापनि त्यक्त्वा  
 [ छोडकर ] आश्रकप्रतानि आचरितु ( धारण करनेके लिये ) गच्छसि ।  
 इदं श्रुत्वा स तानि दधते स्म ।



## द्वितीय पाठ ।

( १ ) ऋप्रत्यय

शत।	श्रिया ।	शर्त्ता	श्रिया ।
राजा	जीवित ।	राजा	जीवा ।
दरिद्र	फठित ।	दरिद्रे	बदष्टी औरन विताया ।
मूर्ख	कर्वित ।	मूर्खे	बमक श्रिया ।
पक्षिण	भूजिता ।	पक्षिपक्षि	इच्छा श्रिया ।
वासा	क्रीडिता ।	कडके	येने ।
मिथा,	गजिता ।	मिथ	मत्र ।
गिश	क्यरित ।	कडकेडी	कवर चाया ।
अग्नि	छ्वनित ।	चाग	काली ।
विधि	फलित ।	भाम्य	कला ।
छात्र	शतमित ।	विद्यार्थीने	भोगली ।
पुरुष	द्वेष्टित ।	चाग्नीने	सेटाको ।
ब्रह्मचारिण	दीक्षिता ।	ब्रह्मचारियोने	दोपानो ।
विद्वान्	प्रथित ।	विद्वान्	प्रसिद्ध कथा ।
ग्राम	प्रथित ।	गोथ	बडा ।
राजपुत्र	प्रथित ।	राजपुत्र	बडा ।
घर्ह	व्यथित ।	भे	उत्थिप कथा ।
लोका	पथिता ।	छोय	इकडे कथि ।
त्व	स्रज्ज्वनित	तुम	विचनित कथि ।

१ चकमक और 'ग्राम ( जाना ) चक वाली धातुकीसे मृत ( जीता कथा ) काठमें 'त ( ऋ ) प्रत्यय होता है । और उससे पहिले धातुके अंतमें इ ( इट ) लग जाता है औं से जीव ( जीना ) धातुसे त ( ऋ ) प्रत्यय दियातो जीवत कथा चक 'त से पहिले धातुके अंतमें 'इ' लगतातो जीव्+इ+त=जीवित कथा । ऋ प्रत्ययान् शब्द सोनों निग होते हैं । ज्वीद्विदमें आकारांत ही जाते हैं ।

के	वलिताः ।	कीन लोप	कृदे ।
जन	मुडित ।	आदमी	इत्थ गया ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

मुदित , व्यथितौ, वेपिता , शिचित , चलिता , स्यंदित , ईपितौ,  
अलितौ, नदिता , प्रकाशिता । अदित , आह्लादित , अथितौ,  
लघित , चडिता , कपितौ, वपिता , जृभितौ, घूर्णित , अ्यसिता ।

### तृतीय पाठ ।

#### ( १ ) अनिद् क्त प्रत्यय

कर्ता	क्रिया ।	कर्ता	क्रिया ।	
बाल	क्षित* ।	लड़का	मुक्कराया ।	
रामः	राजा	भूतः ।	राम	राजा हुआ ।
सर्पा,		सृताः ।	सर्प	सरके ।
भिक्षुक		मृत* ।	मिछारी	मरगया ।
अह	ग्राम	(२) गत ।	भे	गांवको गया ।
बालक		घोन ।	लड़का	बदा ।
त्व	प्रतिज्ञा	(३) क्रात ।	तुमने	प्रतिज्ञाको उल्लंघनक्रिया ।
वीरा	अश्वान्	(४) आहूटा* ।	वीरभोग	घोड़ोंपर चढे ।
विवाद		स्नीतः ।	विवाद	बदा ।
भवान्	कन्या	आश्लिष्ट* ।	आपन	कन्याका आलिंगन किया ।

१ जिन धातुओंमें 'ल, ली, ई और छ इत् ई ( विशेष लगे ई ) छनसे तथा शौक ( शोका ) की शीङ्कार शेष सारांत धातुओंसे ऋ ( त ) प्रत्यय होनेसे इ ( इट ) नहीं लीषमें आता । २ इनी मनीश् रमुष्, अनी, गम्ल इन धातुओंके अतके अकार और मकारका 'क' प्रत्यय परेरहते लोपको आता है । ३ अकारांत और मकारांत धातुसे ऋ प्रत्यय जानेपर अकार और मकारसे पहिले खरको दीप होता है जैसे क्रम्—त क्रांत । ४—द्रिष, प्र—स्या, वास, इदृषी वातु यद्यपि प्रत्यय होता है ।

देवदत्तं धामं प्रस्थित । शिवम् ' माँवकी कपा ।  
गिष्यं गुरुं उपासित । विष्णवे ' दुबकी उपासनाको ।

नीचे निचे शब्दोंके बाका बनायी—

भूता, गृही, चादृष्टो उपासित, माँतो, चादृष्टा, गृत,  
छिन्नी, यता ।

दुब बारी—

यानरा वरुं गमिता । के इनि भरिता । त्व गुरुन् क्रामित ।  
द्वेष फलत । सुये कपोता तत्र प्रस्थिता । सीता प्रतिनिवृत्तिता ।  
कृपोवला वृषं आरोहित । कुमार कन्यां चाद्विपितो । महान्  
जनरवो ( कोलाहल ) भवित\* ।

## चतुर्थ पाठ ।

झीनिग ( १ )—क्त प्रत्यय

कर्ता	क्रिया ।	वृत्ता	क्रिया ।
यालिका	आगता ।	लङको	आई ।
सा	भूता ।	बह	उत्पन्न हुई ।
चंद्रिका	प्रकाशिता ।	चदिनी	मनट हुई ।
सेना	धाविता ।	दिना	मारी ।
निशा	पत्नीता ।	शानि	मई ।
बधु	शयिता ।	बन्	सीमई ।
धमू वृद्धे	उत्थिते ।	ये दो बडाये	उठी
धह	चलिता ।	भ	चल ।

\* क्त प्रत्ययान्त शब्द सबदा विशेषण होते हैं इसलिये ये तीनों किंग होते हैं । इनको कीलिये समासके लिये च तके इस प्रकारकी दीध आकार कर देना चाहिये ।

कृता	क्रिया ।	कर्ता	क्रिया ।
मातर'	नदिता ।	मातायें	आनदित हुईं ।
मद्य'	एधिता ।	नदियां	बढ़ी ।
वाले	मुदिते ।	दी ल'क्रिया	प्रसन्न हुईं ।
राजधानी	प्रसिता ।	राजधानी	विकसित हुईं ।
पडिता	मृता ।	धडिता स्त्री	मर गईं ।
सा	घुडिता ।	बह	हूँ गईं ।
अमू मीका	आरुटा ।	ये क्रिया	नाम पर चली ।

नीचे निचे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

घुडिता, हसिता, बडिता, ईधिता, मुदिता, प्रसिता प्रथिता ।

## पंचम पाठ ।

### नपु सकलिंग—क प्रत्यय

कृता	क्रिया ।	कृता	क्रिया ।
फल	(१) पतित ।	फल	गिरा ।
शरीर	कपित ।	शरीर	कपा ।
मन	व्यथित ।	मन	दुखा ।
भ्रूयण	लुटित ।	गदना	टट गया ।
अन्न	(२) पका ।	अन्न	पक गया ।
आयु	समाप्त ।	अयु	खतम हो गयी ।

१ पत्न ( गिरना ) शत्रुमें लु' इत् ई इच्छविये इ ( इट ) शीघ्रमें न आना चाहिये या ऐकित्त विगेष नियमसे इ ( इट ) आता है । २ पञ्चाशुके बाद क प्रत्ययके स्थानमें 'व' शरीर शत्रुके अकारणसे ककार ही जाता है ।

शता	शिया ।	शर्ता	शिया ।
नगर	शोभितं ।	नगर	शोभायुक्तं कृष्ण ।
जल	स्यदित ।	जल	सङ्घा ।
गृह्याणि	प्रथितानि ।	घर	प्रसिद्धं कृष्ण ।
सर्वं	नवीनं	जात ।	सर्वं नया
			हीनदा ।

स जल वनापो—

वह प्रसिद्ध हुआ । नदी जल बटा । शरीर कंपगया लेकिन मन चलित नहीं हुआ । शोभगामी नौकर दोडे । भोजन पकगया लेकिन खानेवाले नहीं आये । ये नदी पर गई लेकिन थकी नहीं । रस्सी टूट गई लेकिन काम सिद्ध न हुआ । ये आकुलित हुई । नगर शोभित हुआ लेकिन प्रशसित न हुआ ।

हिंदी वनापो—

पद्य ( भाज ) जिनेंद्रदर्शनं जात, चक्षु सफलोभृत, हृदय भक्तिपूर्णं जात । राजा विरक्त । सभारस्वरूप विचित्र वर्तते । अजना धर्म धन भ्राता । सा हनुद्वीप गता । तत्र पतिवार्ता श्रुत्वा प्रसन्ना जाता । पवाजयोऽपि व्यथित । स स्वप्रियामन्वेष्टु वन गत । राजा हनुद्वीप चलित । स धर्मं श्रुत्वा हृष्ट । स्वराज धार्मी प्रति आगत ।

गुह करो—

पद्य मृत । सिद्धा गजिती । पत्र लिखित । मित्र मिलित । लोकपालनामा कथितु विरक्त । विरमभ्यस्तो मति गुणान् दोष च श्रयति । मेवो वृष्टा । युयु आनध्यानतपोरक्त प्रथिता । सुमय धन उपित । छात्रा भ्यसित ।

षष्ठ पाठ ।

ऋवतु ( १ ) प्रत्यय

पु लिंग

अह	पुस्तक	पठितवान् ।	मैंने	पुस्तक पढ़ी ।
आचार्य	कथा	कथितवान् ।	आचार्यन	कथा कही ।
भिक्षुको	भिक्षा	याचितवतौ ।	दो भिख कोने	भोज्य मांगी ।
शिगय'	कथ	कथ दितवत ।	लड़के	क्यों रोये ।
गायका		गीतवत ।	गायकोने	गाया ।
भ्रमरा	पुष्पाणि	आस्वादितवन्त ।	बमरोने	फूलोंको खाया ।
पुत्रविरह	त ( २ )	तुन्नवान् ।	पुत्रके	वियोगने उसको पीडा दी ।
ऋगा	पर्वत	च्युतवत ।	घरोने	पर्वतका आश्रय लिया ।
तरव	पुष्पाणि	विक्षीर्णव त ।	बच्चोने	फूल बिखेर ।
अह	जलं	पीतवान् ।	मैंने	पानी पिया ।
सेवकौ	स्वामिन	सेवितव तौ ।	दो सेवकोंने	स्वामिको सेवाकी ।
मिघ	क्षेत्राणि	उत्थितवान् ।	मिघने	खेतोंको खोला ।

१—६पुष्प धातुकोसे मृतकाल अथ में ऋवतु ( तवत् ) प्रत्यय होता है । शेष—इट धातुके नियम त प्रत्ययको भांति समझना । २—धातुके अ तके दकार अथवा रकारसे पर त और ऋवतुके सकारको और धातुके दकारको नकार आदेश ही जाता है लेकिन रकारको छह नहीं होता । जैसे—तुनेत्र ( पीडा देना ) से त अथवा ऋवतु प्रत्यय किया श्रीकार इत् होनेसे मध्यमें इट नहीं जाता । इसलिये तुद+त अथवा तुद+तवत् हुआ अब 'त के स्थानमें और धातुके 'द के स्थानमें 'न' होनेसे तुन्न तुन्नवत् हुआ । इसी तरह ( कृ+विखेरना ) से त अथवा ऋवतु किया मरान होनेसे मध्यमें इट नहीं हुआ ( दीर्घ अकारान्त धातुके अकारको ऋतया ऋवत् पर होनेसे ( ईव ) ही जाता है ) तो और+त हुआ अब तके स्थानमें न हुआ तो कौय, कौयवत् । नकारको अकार करने लिये इत् प्रथको टिप्पणी देखो ।

पद्मि	इधन	दग्धवान् ।	पदिन	इ धनको इधनो ।
गोप	धेनु	सुत्तवान् ।	प्राधेने	इधनको इधनो ।
कारारक्षक	धौरं	त्यक्तवान् ।	कैन्धानश्च	रक्षकने धौरको इधनो ।
मेघा	पर्यंतं	कु वितवत् ।	मेघानं	पराधको इधनो ।

नोचं निघंते इधनीको ध्वरक्षरसं भाष्ये वाच्यं इधनी—

घ्राणवान्, जितधतो, तर्जितधतो, चटितवान्, दट्टवान्, दृष्टयत्,,  
भूषितवान्, मद्धितवान् गदितवान्, भक्षितवान्, चर्षितयत्, चर्षित  
यत्, श्रुतवान् आनीषितयत्, गृष्टवान् कांचितवान्, इधितवान्,  
गत्तवान् पठितवान्, विचारितवान्, दग्धवान् सुदितवान्, छिन्नवान्  
त्यक्तवान् ।

### सप्तम पाठ ।

तवत् ( त्रावत् ) स्त्री लिंग ( १ )

भिक्षुको		मृतयती ।	भिक्षुकी		म्रियते छ ।
नारो	याम	गतयती ।	नारी	याम	गच्छति छ ।
वालिका		एधितयती ।	वालिका		एधते छ ।
सा	प्रतिज्ञां	क्वांतयती ।	सा	प्रतिज्ञां	क्वामति छ ।
देवदत्ता	याम	प्रस्थितयती ।	देवदत्ता	याम	प्रतिष्ठते छ ।
शिष्या	काष्ठ	द्वतयती ।	शिष्या	काष्ठ	द्वरति छ ।
सेविका	भारं	छटयती ।	सेविका	भारं	वहति (ते) छ ।
सिद्धा		गर्जितवत्य ।	सिद्धा		गर्जेति ।
दौने	घनाब्ज	त्रितयती ।	दौने	घनाब्ज	त्रयते छ ।
इय	मेघमाला	शीषयती ।	इय	मेघमाला	शीषयति छ ।

पुष्पमाला	स्नानवती ।	पुष्पमाला	स्नायति स्म ।
नारी	नदीं तोषयती ।	नारी	नदीं तरति स्म ।
सीता	पुष्पघ्रातवती ।	सीता	पुष्पजिघ्रसि स्म ।
सेना	शत्रुजितवती ।	सेना	शत्रुजयति स्म ।
नानादरौ	वधुर्तर्जितवत्यौ ।	नानादरौ	वधुर्तर्जत स्म ।
वध्व	ईदितवत्य ।	वध्व	ईदति स्म ।
मातर	दुहितगदितवत्य ।	मातर	दुहितृ' गदति स्म ।
कन्या	पतिश्रितवती ।	कन्या	पतिश्रयति स्म ।
शिष्या	उपितवती ।	शिष्या	वसति स्म ।
वत्सा	गूनवती ।	वत्सा	गुणति स्म ।
राज्ञी	भृत्यतिष्ठावती ।	राज्ञी	भृत्यतिजते स्म ।
विद्या	प्रीभवती ।	विद्या	प्रीयते स्म ।
सभा	वर्द्धितवती ।	सभा	वर्द्धते स्म ।
बाला	आत्मानशक्तितवती ।	बाला	आत्मानशक्ते स्म ।
का	कां न (वि) श्रब्धवती ।	का	कां न ( वि ) श्रभते स्म ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

दष्टवती, आलोकितवती, दग्धवती, ईदितवती ईदितवती, काचितवती, गतवती, पठितवती, सेवितवत्य, हर्षितवती, तर्जितवत्यौ, हसितवत्य, मिषितवत्य कल्पितवत्य नयतिस्म, पिबतिस्म, पीतवती, तिष्ठति स्म, आधते स्म, लिखितवतो, ईक्षते स्म, शक्तितवती, त्यक्तवती, मुचति स्म, तुम्भवती, चर्दति स्म, भजते स्म, कांचते स्म, सेवते स्म ।

नीचे लिखे वाक्य पूरे करो—

—गुरु दष्टवती । बाला—गतवती । पत्नी पति—।माता  
—शिक्षितवती । कन्या—पठितवती ।—क्षण स्थितवती ।



—पुत्र काचितपत्नी । पुत्राकांक्षा—आधितपत्नी । अपना—  
मृतपत्नी । शाना—दीतपत्नी ।—मदीं तोकेपत्नी ।

(१) अथे निघो शागर्भो वा तदन्व ( १२५ ) इत्येव शागर्भ इति-५ इत्येव शागर्भो  
इति वा—

फतो, कर्, कम् पर, घृषि, (२) त्, इङ्, प्रयेष्, माङ्, गक्रिङ्  
इङ्, भर्षोञ्, भृ, टुयाङ्, मिषोञ्, नृप ह्रञ् ।

### षष्ठम पाठ ।

नप सक्त निग—त्तवत्

भग्न	पग्नि	गटवत् ।	भग्न	पग्नि	गूहति ( ति ) छ् ।
रदं		रत्तवत् ।	रदं		रजते ( ति ) छ् ।
मिद्य	योञ्	उमवत् ।	मिद्य	योञ्	वपते ( ति ) छ् ।
पुष्पालि	जनान्	नृव्यथति ।	पुष्पालि	जनान्	नुमंति छ् ।
मिद्य	पुष्य	घात ( ष ) घत्नी ।	मिद्य	पुष्य	जिघत्त छ् ।
घर्म	भट्	घात ( ष ) घत् ।	घर्म	भट्	घायते छ् ।
मन		मग्नवत् ।	मन		लगति छ् ।
चक्षुषो	षानद	नृव्यथती ।	चक्षुषी	षानद	समेति छ् ।
कटुषवाभि	हृदयं	तुषवति ।	कटुषवाभि	हृदयं	तुदति छ् ।
कुसुमानि	मधु	वितोरिषति ।	कुसुमानि	मधु	वितरति छ् ।
पगुरुषी	फलानि	विकीर्णवती ।	पगुरुषी	फलानि	विकिरत छ् ।
घर्माषि	शरीराणि	कु वितयति ।	घर्माषि	शरीराणि	कु वति छ् ।
रुद्धं	चंद्रिका	सहृत्तवत् ।	रुद्धं	चंद्रिका	सहृते छ् ।
तप	सुनि	भूयितवत् ।	तप	सुनि	भूयति छ् ।

१ धातुषसि ऋतन्वय्य शरते समय ऋ प्रत्ययको जिप्पथीको शर्तोका मय ध्यान रदना  
वादिषे । २ जिप्पथीका इत्त 'इ इत्' उ च्चसके मत्त अपपरत्ते पदिषे अनुष्वात् मा वत्तका  
मोवका अपपर भाशता इ । बुदि, बुक्, मकिङ्, संक् वादि ।

नवम पाठ ।

साहित्य परिचय

दिदीर्घं अनुवाकं करो—

जीवधर समिधो नदी गतवान् । तत्र द्विजा एक कुक्कुर रिषति स्म । तं कुमारस्त्रातु ( बचानिके लिये ) प्रयतते स्म परं न समर्थो जात । अतो धर्म उपदिष्टवान् । ततश्चा यच्चै द्रो जात । पूर्वं भव स्मृत्वा स जीवधरसमीपमागच्छति स्म तथा कुमार इष्टं सन् अर्चितवान् पुन स्वर्गं गच्छति स्म । अथ तत्र गुणमालासुरमजरो-नाम्नरी द्वे कन्ये परम्पर चूर्णार्थं विवदेते स्म एव या पराजिता सा स्नाता न स्यात् ( हो ) इति सविटौ च चरत स्म इति चूर्ण-परीक्षार्थं स्त्रे चैव्यौ सज्जनसमीपं प्रेषितवत्यौ । ते च जीवधर-समीपं आगच्छत स्म । जीवधरो गुणमालाचूर्णं गुणवत् इति कथ्यते स्म ( कथितवान् ) सुरमजरोचेटी तु तत् श्रुत्वा "अन्यो क्तमिव भवान् अपि सक्तवान् किं यूय सर्वे सहपाठ ( एकसाथ ) पठित वत" इति क्रुद्धा सतो गदितवती । स्वामी जीवधरस्तु चूर्णगुण-दोष स्पष्टं साधितवान् । ततस्त्रे चैव्यौ कुमारं नत्वा स्तुत्वा च प्रत्यावर्ते ते स्म ।

दृष्टतर्म अनुवाकं करो—

काष्ठांगार मरगया । जीवधर परपरागत राजसिंहासन पर विराजे । सम्पूर्णं प्रजा प्रसन्नं पुष्टं । चारो तरफसे सामंत नोगोनि आकर सहारा लिया । महाप्रतापी जीवधरने शत्रु काष्ठांगारके कुट-स्वको भी समानित किया । नदाब्ज नामक छोटे भाईको युवराजपद दिया । पृथिवीको बारह वर्ष तक कररहित बनाया । अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंको अपने पाम ले आये । इस तरह यह राजा सब गुणसहित गोभित होने लगा उस समय जीवधर महाराजने अपने सुख दुःखको प्रजाधीन समझा । राति दिन समय विभाग-व्यतिरिक्त राज

कार्योकोकिया । महाराजने खूब धन बाटा । कैदियोंको छोडे दिन बाधकर ( बध्वा ) छोड दिया । इसलिये सब लोगोंने उसकी प्रशंसाकी । बादको विजया विरक्त हुए और "पापपुण्यका फल मैंने देख लिया" यह बात पुत्रको कहकरपनको चली गई । सुनदा नामक दूसरो माताने भी उसका अनुगमनकिया । दोनों एक साथ दीक्षित हुए ।

नीचे लिखे प्रश्नोका उत्तर लिखो ।

को मृत । जीवधर' कि भूपति स्म । के त आययते स्म । क क स मानितवान् । को कररहिता कृतवान् । का स्वसमीपमान यति स्म । क कथ राजते स्म । क खदु खसुरे प्रजाधीने विचारितवान् । कथ राज्यकार्यं वहते स्म । महाराज कि वितीर्णवान् । कान् अल्पसमयानतर मोचितवान् । किमर्थं सर्वे त कल्पितवत । का पिरक्षा जाता । का कामजुगता ।

प्रश्नोत्तर बनाकर सख्खु धर्म लिखो—

कचिद् वृको ( भेडिया ) मिथ ( मेंढा) मेक खादितवान् । तदीय मेकमस्थि गले ( गलेमें ) रुढम् । तत आर्त्तं स उच्च रटन् इतस्ततो भ्रमति स्म । य य सत्व ( प्राणी ) दृष्टवान् त त प्रति दीनतापूर्वकं प्राथितवान् 'महायय । यदि मदोय ! गलगतमिदमस्थि वहि ( बाहिर ) करोपि ( करदो ) तर्हि ( तो ) अहं बहु पारितोषिक ( इनाम ) ददे' । तत एको यज्ञ पारितोषिकलोभवयीभूत पुरो ( सामने ) गत्वा तदमुखे ( उसके मुहमें ) स्वा लम्बा शीवा निदेश्य ( घुसाकर ) तदास्थि वहि कृतवान् । ततो यदा यक स्वकीय पारितोषिक याचितवान् तदा वृको लोहितचक्षु सन् वदति स्म "रे । अहं कुत्रचिदपि स्वस्वदृश्यं भूस्व न दृष्टवान् । त्वदीया शीवा मन्मुखे ( मेरे मुहमें ) वर्तते स्म ता न चर्षित्वा त्व जीवन् सुहृत् । एतवता ( इतनेसे ) अपि असत्पुष्ट पारितोषिका याचसे"

नीचे लिखे शब्दोंसे वनका वणन करो—

तरुनिषङ्ग\* ( वृक्षोंका समूह ), मृगराजविदारिता , सुक्ताफलानि,  
पतिता\* रक्तलोहिता , शवरा मृगा , कूजितं, अजगरा , उष्णित-  
वाता , वानरा पर्वता , पतर्ति, क्रीडति, सूर्यकिरणरहित, अधकार  
समावृत, श्याला\*, वृका , घुका , गुहा\* ।

शुद्ध करो—

स प्रतिदिन पुस्तक पठित । के अपि गुह्य राजमंत्र न ज्ञाते ।  
सूर्यपादा अत्र न पतित । विरक्ता सा इदं व्रत अध्वसित । शोकपो-  
डिता पक्षिण विलपत जिघ्रसां समारब्धवान् । इतस्तुत अन्वे-  
पयत पतत्रिण शवकान् प्राप्त । जीवधर नदगोपपातिता जल-  
धारां गृहीत । स तत् श्रुत्वा घोषणा निवारित । स्वामी किरातान्  
जित । स यथाशक्ति प्रतीकार कृत\* । गुरु कथमपि वन गत-  
वान् । काक तथाविध मृगं दृष्ट । पापकर्मा त्व कि कृत ।

एक २ शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

परिजन (नीकर) त पश्यन्—त्यक्तवान् । अग्रत राम—तदनतर  
—चलिता । तौ—गतौ । जीवधर कोष्ठागार— । भिक्षु  
अत्र— । कुमार—जात अह अद्य—सम्भवान् । दत्तौ  
कबल ( घास )— । कोपाग्नि शरीर— । सेना कुमारगृह— ।  
स्वामो तदा—गत । अद्य मद्दानुत्सयो— । मिथ्याभाषिण न  
— । यादृग् राजा तादृशी—भवति । प्रयोजन विना—न प्रवर्तते ।  
परहितकरा—विरक्ता ।—मनुष्य भक्षितवान् । जीवधर—  
गृह्योतवान् । आचार्य—उपदिष्टवान् । पक्षिण—उड्डौनधत ।  
—सेविते स्म ।—विरक्ता ।—अनित्य वर्तते ।—संस्कृत पठित-  
वान् ।—अजगर दृष्टयत्\* । नारी—लक्षितवती । वीर—  
जितवान् ।—पतिता ।

## नवम अध्याय ।

भादि शोर तुदादिगण्य धातुषामि मृद्वकारका प्रयोग  
प्रथम पुण्य परस्मैपदो धातु

## प्रथम पाठ ।

१ पुरुष	( १ ) गमिष्यति ।	पुरुषो	गच्छति ।
भव्य	जिन अधिष्यति ।	देवपादमी	जिनो पूजिता ।
निर्धन	कठिष्यति ।	मरीच	दुःखं जीवन् विलम्बता ।
मेमानो नदी	कमिष्यति ।	मेवापति	मनोको भाष्येण ।
२ कावो पुम्नाकानि पठिष्यत ।	दा विद् दी		पुत्रं पद्वे ।
फले	पतिष्यत ।	दो वल	तिरेदे ।
तो	जीविष्यत ।	दो जो	जीवे मे ।
गुणिनी राजानो भविष्यत ।	गो नो न्ने		राजा जीवे ।
दतिनी	अधिष्यत ।	दो दानी	अधिमे ।
३ पाथा	अभिष्यति ।	पालानी	अधिमे ।
अमो	गमिष्यति ।	दो अम	अधिमे ।
कर्माणि	फलिष्यति ।	कर्म	फलधिमे ।
पुष्याणि	सुपुटिष्यति ।	कर्म	सुपुटिधिमे ।
सर्वे जीवा ( २ ) मरिष्यति ।	मर		जीव मरधिमे ।

भीष निष्ठी प्रणिको व्यन्हायमे लाकर भावा वनाथो—

खादिष्यति, हमिष्यति, गमिष्यत, अधिष्यति अदिष्यति, गदिष्यति, वदिष्यत नदिष्यति मेविष्यति विकरिष्यति अदिष्यत ।

१—परस्य पदो धातुषामि मरिष्यन् ( खान् माल ) कालके अधिमे प्रथमपुण्यके एक वचनमे कति दिवचनमे सत शोर बहुवचनमे सति प्रथम लयते द्वे शोर अचके तथा धातुके वीचमे इ ( इत् ) राजाता द्वे । अमे गम्यन् ( म्—इत् द्वे ) द्वे कति क्रिया तो मय + कति तथा वीचमे 'इ' आया ता गम्यन् + इ + म्यति = गमिष्यति दृष्टा प्रकारके नियमे कश्चिद् वृत्तको टिप्पणको द्वेत्तो — धातुषामि अचके स को चर् हा जाता द्वे कति कति प्रथम पर जीमेसे ।

संस्कृत बनायी—

एक मत्त छापी आवेगा । जीवधर मोच जायेंगे । यह  
संस्कृत पढेगा । मर्यो एक पत्र लिखेगा । पापी दुख पावेगा । घटा  
बजेगा । यह तुमै निगल जावेगा । क्या यह मुझे याद करेगा ।  
नहीं वह तुम्हे कभी भी ( कदापि ) नहीं भूलैगा ( विष्णु ) ।  
सडका यदि इसी तरह खेलेगा तो कुछ नहीं पढेगा । जो चोरी  
करेगा उसको राजा दंड देगा । सड़किया माला गूँधेंगी ।

### द्वितीय पाठ ।

१	शिशु दुग्धं ( १ ) पास्यति ।	बच्चा	दूध पीवेगा ।
	शरीरं स्नास्यति ।	शरीर	नष्ट होगा ।
	स पुरुषं स्नास्यति ।	वह पुरुष	स्नान करेगा ।
	राजा पुत्राणि घ्रास्यति ।	राजा	फल सूँघेगा ।
२	राजानौ ( २ ) जीयत ।	दो राजा	जीते गे ।
	तौ जेयन्ते ।	वे जो जगे	नष्ट होंगे ।
१	क्षपकौ भूमिं ( ३ ) वाह्यत ।	दो किसान	भूमिको जीते गे ।
	अहो सर्पस्यत ।	दो सर्प	रे जेने ।
	पितरौ पुत्रान् सञ्चर्यत ।	माता पिता	पुत्रोंका स्वग करेगे ।
३	योषित राजानं द्रुष्यति ।	जियां	राजाओंको देखे गी ।
	दुष्कामाणि पुण्यानि धक्ष्यति ।	दक्षम	पुष्पकर्मोंको जलावेगे ।

१—शिन धातुओंके अंतमें ( क्षीय जकार क्लृप्त तथा णेव अकार और यि की छोड़ कर ) कोई स्वर है तथा त्रिनका लृ कार ( पत्त्यकी छोड़कर ) और भीकार इत् है उनसे भविष्यत् कालके अर्थ में स्यति आदि प्रत्यय लगानेसे बोधमें इ ( इट ) नहीं आता । २ स्यति आदि प्रत्यय लगनेपर धातुके अंतके इकार ईकारके स्थानमें एकार अकारके स्थानमें ओकार, ए, ऐ, औ, औ, के स्थानमें आ कार ही आता है । जैसे—जि + स्यति—जिष्यति ( टिप्पणी ७५ पृ० देखी ) भी ( भीज ) + स्यति + नेष्यति, स्तु + स्यति क्षीष्यति, वे ( वभ्र ) + स्यति वास्यति औ + स्यति आस्यति दो ( दुकड़े करना ) + स्यति दास्यति । ३—स्यति आदि प्रत्यय

सर्पा अपराधिन दर्शयति । शीघ्र	चपरातोको काटिरे
शिशुव हस्तौ मर्षयति । लडक	दो हाथोंकी हूँसे।
अध्यापका छात्रान् प्रश्रयति । अध्यापक लोग	बिद्याधि योंकी मूर्खने।
ता गृह (४) प्रवेक्ष्यति । धे जिया	घरों प्रवेश करेगी।
कुमाला घटान् स्रक्षति । कुम्हार लोग	घनोंकी बनाये।
राजान रक्षाभार यक्षति । राजा लोग रक्षाके भारको धारण करेगे।	

शोधे निरो मन्की व्यवहारमें लाकर भासा बनायो—

वर्षयति, पाष्यति, घ्रास्यत, ग्वास्यति, जीष्यत, घोष्यति, सस्यति, घक्ष्यत, दक्ष्यत, स्त्रक्ष्यत कर्षयति, पक्ष्यति, द्रक्ष्यत, धक्ष्यति, प्रक्षयति, ग्वास्यति, प्रवेक्ष्यत, मर्षयति, स्रक्षयति ।

ब्रह्म करी—

शिशु सुग्धं पिबिष्यति । दत्तितन सृष्टिकां जिघ्रिष्यति । अन्न विना शरीर नून (निययसे) स्नायिष्यति । कर्माणि किं न फलिष्यति, कानिपतिष्यत । राजा शत्रुं नून जयिष्यति । केन क्षयिष्यति । लपोवल क्षेत्र कर्षिष्यति, घर्मातो सर्पा सर्पिष्यति । कौ त्वां स्रशिष्यत । ता राजान दशिष्यति । मृत्य कथ चरणे मशिष्यत । गुरु प्रश्न प्रक्षिष्यति, सीता अग्नि प्रवेशिष्यति । कुम्भकार कथ घटान् स्रजिष्यति । क इमां मृथ्वीं वक्षिष्यति । सप शिशु दशिष्यति । ते सजिष्यति ।

संज्ञत बनायी—

लडका इसकी इच्छा करेगा । आग गाँवकी जना देगी ।

हीनेपर घातुके अ तके ए ग, ह ख फ ल और सति आदि प्रत्ययके स्र दोनों मिलकर चर ही जाते हैं यदि चौथमें इद् न हो। ज से—लव + सति कक्षयति, ( इसी दृष्टकी उ नंबरकी टिप्पणी देखो ) मृशु + सति स्रषयति वड + सति वषयति, प्रश्च + सति प्रक्षयति घत्र + सति = घक्षयति । जिन घातुओंके अ तके अचरसे पहिले इत्—इ, छ, चयवा च हैं तो उनके स्थानमें क्रमसे ए, धी, चर, आदिमें ही जायेगे सति आदि प्रत्यय परे हीनेसे। जैसे विशु + सति = विषयति, मृशु + सति मीषयति अथ + सति मथयति ।

भिच्छुक अभक्ष्यको भी खालेगा । मालिक नौकरको पूछेगा । मुनि लोग धर्मका उपदेश देगे । हिरण्यगर्भ नामक मूसा स्त्रायुवधनको काटेगा । वह जिन भगवान् पापोंको छरेगा । जयवर्मा शत्रु-घोंको दड देगा । चातकको भेष ही सतुष्ट करेगा । वे लोग प्रदर्शिनी ( नुमाइस ) देखेंगे । कुम्हार घडाको बनावेंगे । लडकी एक बढिया ( सुन्दर ) गीत गावेगी । वीतरागी वीतरागका ध्यान करेगा । चाडाल क्या ब्राह्मणको छूवेगा ? शत्रु भी इसको प्रणाम करेगा । क्रोधी मुनि इस विचारीको शाप देगा । कौन बम्बईसे ( मोहमयीत ) पुस्तक लावेगा । जो ऊँचा ( उच्च ) चढेगा वह अवश्य ही ( अवश्यमेव ) गिरेगा । दुर्जन कबतक ( कदापयत ) उच्च रहेगा । यह नाव इस नदीको पार कर जायगी । सैनिक घोडोपर चढेंगे ।

## तृतीय पाठ ।

### श्रात्मनेपदी धातु ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ जन		(१) ईक्षिष्यते ।	मनुष्य		चेष्टा करेगा ।
कथ	स मां	ईक्षिष्यते ।	कौंसे बच्		मेरी निंदा करेगा ।
नारी	नदीं	ईक्षिष्यते ।	छो	मन्योको	दृष्टेगी ।
२ छात्री		यतिष्यते ।	दो विद्यार्थी		यव करेंगे ।
मुनी	शास्त्र	गाक्षिष्यते ।	दो मुनि	शास्त्रका	परदाहन करेंगे ।
इमौ		दौक्षिष्यते ।	वे दोनो		दोचित होंगे ।

१—श्रात्मनेपदी धातुओंसे मरिष्यत्काल चय के छटलकारमें होते ध्येति, करते प्रत्यय लयते हैं । शेष काय शेषमें इट जाना आदि परर्कपदी धातुओंके समान होते हैं ।



१ एते जना	प्रसिध्यते ।	दी चन्द्रमी	प्रसिद्ध हो जायेंगे ।
सुराज्यानि	प्रसिध्यते ।	बच्चे राज्य	बढ़ेंगे ।
सुता	पितर मानिष्यते ।	लडके	पिताचार्यमान करेगे ।

नौसे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

कल्पिष्यते, एधिष्यते, गर्हिष्यते, गाह्यते, भिष्यते, मादिष्यते, मयिष्यते, गक्रिष्यते, आदरिष्यते, शिष्यते, प्रसिष्यते, प्रयिष्यते, मानिष्यते, वतिष्यते ।

### चतुर्थ पाठ ।

कृता	कर्म	क्रिया ।	कृता	कर्म	क्रिया ।
१ नारी	(१) स्नेष्यते ।	स्त्री			सुखरायेगी ।
स	कार्यं	आरम्भयते ।	वह काम		प्रारंभ करेगा ।
२ पितरौ	पुत्र	स्नह्यते ।	माता पिता	पुत्रका	आलिंगन करेगे ।
३ मिश्रव'	फलानि	सपस्यते ।	लडके		फल पावेंगे ।
राजान	नारी	सहस्यते ।	राजालोक		स्त्रियोंको विवाहेंगे ।

नौसे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्नेष्यते, स्नह्यते, सपस्यते, सहस्यते, रपस्यते ।

संस्कृत बनाओ—

वह वहां रहेगा । विद्या प्रतिदिन बढ़ेगी । दुर्जनसंयोग पीडा देगा । तनवारें (भक्ति) दीसहोंगे । लडका मुस्करायेगा । यह सुभौ रोकेगा । भिखारी क्या मांगेगा । जैनसंघट्ट जिन भगवानकी वदना करेगे । पुत्रको देखकर ( विलोक्य ) पिता प्रसन्न होगा । शरणागतकी वह रक्षा करेगा ।

पंचम पाठ ।

उभयपदी घातु\* । (१)

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ लघोवल्	गर्तं	खनिष्यते (ति)	विमान	गऊडा खीदीया ।	
भिक्षुक	धनिम	अयिष्यते (ति)	भिखारी धनी बादमीके पास जायगा ।		
पतिथि	घन	याचिष्यति (से)	पतिथी	घन मायिगा ।	
२ इमौ	वस्त्राणि	वयिष्येते (यत्)	येशने	कपडे बुनेगे ।	
तौ	समुद्र	अयिष्येते (यत्)	वे दो जने	समुद्रको जाये गे ।	
३ के	दरिद्रान्	भरिष्यति (ति)	कौन	दरिद्रोंको पोषिगा ।	
के	इमां	सङ्घरिष्यति (ते)	कौन	इसका सङ्घार करेगा ।	

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

धरिष्यति, याचिष्यत, अयिष्यति, वयिष्यंति, खनिष्यत ।

षष्ठ पाठ ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ यावक	जिन	यच्छरते (ति)	यावक	जिनको	पूजिगा ।
चद्र		त्वेक्ष्यति (से)	चद्र मा		दीन थीगा ।
तस्कर	द्रव्य	घोक्ष्यति (से)	चौर		द्रव्य चिपायेगा ।
स्वामी	सेवकानि	आदेश्यति (ते)	प्रभु	सेवकोंको	ज्ञो करेगा ।
२ पाषकी	भोदनान्	भ्रक्षरते* (क्षरते)	दोरखीया	पाषकीको	पक्षावेगे ।
रजकी	वस्त्राणि	रङ्क्षरते* (क्षरते)	दो धोने		कपडा धोवे गे ।

३ भृत्या	गृह्णतल	लेपस्यति (ते)	नौकर	घरकी लीपमें ।
छापका	सुधान्	लोप्स्यति (ते)	जिसका	पेड़ोंकी काटेने ।
हाथीवला	क्षेत्राणि	वप्स्यति (ते)	जिसका लोग	खेत बोये गे ।
दुःखानि	हृदय	तोस्यति (ते)	दुःख	हृदयकी स्थिति करेवे ।

नौचे लिखे शब्दसि बाख बनायो—

छपिष्यते, धविष्यते, देक्ष्यते, कक्ष्यति, मोक्ष्यते, लेप्स्यते,  
वप्स्यते, लोप्स्यते घोक्ष्यति ।

## सप्तम पाठ ।

उत्तम पुरुष

(१) परस्मैपदी धातु

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ अहं	तत्र	अटिष्यामि ।	म अहं		धूम गा ।
अहं	आदनान्	विकिरिष्यामि ।	मैं आवन		बखेह गा ।
अहं	दुष्टान्	अर्दिष्यामि ।	मैं दुष्टोंकी		द क दू गा ।
अहं	फलानि	खादिष्यामि ।	मैं फल		खरक गा ।
२ आवां		पतिष्याव ।	हम दो जने		गिरेगे ।
आवां		कठिष्याव ।	हम दो जने	दुखसे जीवन	बितावे गे ।
आवां	सुधान्	मेपिष्याव ।	हम दो जने		हड्डोंकी सोंधे गे ।
३ वयं	जिन	अर्चिष्याम ।	हम लीग		जिनकी पूजा करे गे ।
वयं		हसिष्याम ।	हम		हँसेगे ।
वयं	जैनग्रथान्	पठिष्याम ।	हम		जैनग्रथोंकी पठे गे ।
वयं	ग्राम	गमिष्याम ।	हम		गाँवकी आवेंगे ।
वयं	कथां	गदिष्याम ।	हम		कथा कहेंगे ।

१—परस्मैपदी धातुर्षोक लृट् लकारमें उत्तम पुरुषके अति स्वाव ग्राम प्रत्यय लागते हैं । येव आठ प्रथम पुरुषके समान समझना ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अटिप्यावः, अ विप्यामि, पतिप्यावः, अटिप्यामि, क्रमिप्यामि,  
छादिप्यामि, एपिप्यावः, धिक्किरिप्यामि, जीविप्याम ।

### यष्टम पाठ ।

१ अह	दुग्ध	पास्यामि ।	मैं दूध	पीऊँगा ।
अह	पुष्य	प्रास्यामि ।	मैं फूल	सूँगा ।
अह		जेप्यामि ।	मैं	औतूँगा ।
अह		जेप्यामि ।	मैं	मद पीऊँगा ।
२ आवां	त्वा	स्यस्य्याव ।	हम दोनों	तुम्हारा खप करे गे ।
आवां	चम्बू	द्रक्ष्याव ।	हम दोनों	सेनाको देखेंगे ।
३ यय		मह्य्याम ।	हम	खान करे गे ।
यय	अघान्	अस्याम ।	हम	ए घोडा अन्धास करे गे ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

जेप्याम, घ्रास्याव, द्रक्ष्यामि, मक्ष्यामि, दक्ष्याम, अघ्याम,  
स्यस्याम, वक्ष्याव, धक्ष्याव, अक्ष्यामि, प्रक्ष्याम, वैक्ष्यामि,  
पास्याव ।

### नवम पाठ ।

उत्तम पुरुष

आत्मनेपदी धातु

१ अह वाराणसी (१)	इक्षिये ।	मैं	बनारस देखूँगा ।
अहं दुर्जन	ईक्षिये ।	मैं	दुर्जनको नि दा काटूँगा ।

१—आत्मनेपदी धातुओंसे उत्तम पुरुषमें खी, व्यावृत्ते ख्यामहे प्रत्यय लगते हैं अथवाहं मध्यमें इट कोना आदि प्रथमपुरुषके समान समझना ।

अह	ईहिपेय ।	मै	प्रथम अह मा ।
२ आवां	यत्तिपयावहे ।	इम दीजने	दम करेने ।
आवां शास्त्र	गाहिपयावहे ।	इम दीनों	शास्त्रका चरवाहन करेने ।
आवां	दोक्षिपयावहे ।	इम दी जने	दोषित करेने ।
३ वय गुणिन	कत्थिपयावहे ।	इम	गुणवान्को प्रथम सा करेने ।
वयं कुशील	गर्हिपयामहे ।	इम	सब सोम कुट्टीजजनको नि दाकरेने ।
वय	शिचिपयामहे ।	इम	सिधा ईने ।
वय शिशून्	आदरिपयामहे ।	इम	बर्षीका आदर करेने ।
वय	शक्तिपयामहे ।	इम	शक्ति करेने ।

नीचे निचे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भिचिपयामहे, गर्हिपेय, मथिपयावहे, शक्तिपयामहे, मानिपेय,  
गाहिपयावहे मोदिपयामहे, गाहिपयामहे, शिचिपेय, ईहिपयामहे,

### दशम पाठ ।

वतां	इम	क्रिया ।	कर्ता	कम	क्रिया ।
१ अह	(१)ओपेय ।	मै			सुखराज मा ।
अह त्वां	खड्छा ।	मै			तुम्हारा आदिजन अह मा ।
२ आवां	उहच्छावहे ।	इम दीनों			विवाह करेने ।
आवां धन	सप्स्यावहे ।	इम दीजने			दम पावेने ।
३ वय कार्य	आरप्स्यामहे ।	इम			साथ आरंभ करेने ।

नीचे निचे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

ओपयावहे, उहच्छामहे, सप्स्यामहे, रप्स्यावहे, खड्छामहे ।

एकादश पाठ ।

उभयपदी धातु (१)

- १ अह जिन अयिष्यामि ( पेर ) मैं जिन भगवानकी सेवा करूँगा ।  
 अह महायोरं यक्ष्यामि ( चरे ) मैं महावीर श्यामीकी पूजा करूँगा ।  
 अह कूप खनिष्यामि ( पेर ) मैं कुँबा खोदूँगा ।  
 अह वरान् याचिष्यामि ( पेर ) मैं वर मागूँगा ।  
 अह गुणिन अयिष्यामि ( पेर ) मैं गुणोका आश्रय लूँगा ।

- २ आवा दरिद्रान् भरिष्याव ( यहे ) हम दोनों दरिद्रोंकी पाली गे ।  
 आवा साधून् अयिष्याव ( यहे ) हम दोनों साधुओंकी सेवे गे ।

- ३ वय कूप खनिष्यामहे ( प्याम' ) हम कुँबा खोदे गे ।  
 वयं धन घोक्ष्याम ( महे ) हम धन क्षिपावेगे ।  
 वय न त्वेक्ष्याम' ( महे ) हम दोनों हीवेगे ।  
 वय त्वा आदेक्ष्याम ( महे ) हम तुमको आशा दे गे ।  
 वय वस्त्राणि रक्ष्याम' ( महे ) हम कपड़े रगगे ।  
 वय भूमि कक्ष्याम ( महे ) हम भूमि जोते गे ।  
 वयं गृह लोप्स्याम ( महे ) हम घरकी लोपे गे ।  
 वयं हृद्धान् लोप्स्याम ( महे ) हम पैठ काटे गे ।  
 वय ताम् लोप्स्याम ( महे ) हम उधकीकी ब्यधित करे गे ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ

घोक्षरे, त्वेक्ष्याव, आदेक्ष्याव, रक्ष्यामि, कक्ष्यावहे, लोप्स्यामि,  
 लोप्स्ये, भरिष्याम, वक्षरे, मोक्ष्यामहे, मक्ष्यावहे, भ्रक्षरे वप्स्या  
 मि, यक्ष्यामहे, अयिष्यावहे, देक्षरे ।

१—परस्मैपदमें जब रूप चलाने हों तब परस्मैपदी धातुओंके प्रत्यय आदि लगाना ।  
 और जब आत्मनेपदमें चलाने हों तब आत्मनेपदी धातुओंके समान प्रत्यय आदि लगाना ।

## छादय पाठ ।

( १ )—मध्यम पुस्तक

परमपदो भासु

१	रा	घाम	चक्षिष्यमि ।	रुम	रुमको भाष्ये ।
	स्य	तदा	पठिष्यमि ।	रुम	रुमको भाष्ये ।
	स्य	किं	गदिष्यसि ।	रुम	रुमको भाष्ये ।
	स्य	निग	चक्षिष्यमि ।	रुम	रुमको पुस्तक भाष्ये ।
	स्य	योदमं	चादिष्यमि ।	रुम	चादिष्य भाष्ये ।
	स्य	मुनि	पृथिष्यमि ।	रुम	पृथिष्यो पुस्तके ।
२	युवा	घमान्	पठिष्यथ ।	रुम ही मने	पठिष्यो भाष्ये ।
	युवा		कठिष्यथ ।	रुम	कठिष्य भाष्ये ।
	युवा	हृत्मान्	भविष्यथ ।	रुम ही मने	हृत्मानो भाष्ये ।
	युवा	कि	पविष्यथ ।	रुम ही मने	पविष्य भाष्ये ।
३	यूय		कठिष्यथ ।	रुम सभ	कठिष्य भाष्ये ।
	यय	घाम	क्रमिष्यथ ।	रुम सभ	क्रमिष्यो भाष्ये ।
	यूय	सर्वे	सरिष्यथ ।	रुम सभ	सरिष्य भाष्ये ।
	यूय		जोविष्यथ ।	रुम	जोविष्य भाष्ये ।
	यूय		पतिष्यथ ।	रुम सभ	पतिष्य भाष्ये ।
	यूय	जिमान्	चक्षिष्यथ ।	रुम ही मने	चक्षिष्यो पुस्तके ।
	यूय	कथा	यदिष्यथ ।	रुम ही मने	यदिष्य भाष्ये ।
	यूय		घानदिष्यथ ।	रुम	घानदिष्य भाष्ये ।
	यूय	पावानि	सह्रिष्यथ ।	रुम ही मने	पावानि नाम भाष्ये ।
	यूय		क्रीडिष्यथ ।	रुम ही मने	क्रीडिष्य भाष्ये ।
	भूय	घत्त	निष्ठिष्यथ ।	रुम	निष्ठिष्य भाष्ये ।

१—मध्यम पुस्तकमें परमपदो भासु—रुमि रुम रुम प्रत्यय लगते हैं कि मध्यम  
२—घामा आदि मध्यम पुस्तकके सप्तम अनुवाक ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पठिष्यथ , एपिष्यसि, अचिंथ्यथ , कठिष्यथ, चरिष्यसि, अर्चिष्यथ  
गमिष्यसि, गदिष्यथ , नदिष्यसि, व्रजिष्यथ, पचिष्यसि, भवि-  
ष्यसि ।

### त्रयोदश पाठ ।

१	त्व	कुत्र	स्यास्यसि ।	तुम	कहाँ ठहरोगे ।
	त्व	पुष्य	घ्रास्यसि ।	तुम	फल सूखोगे ।
	त्व	कि शास्त्र	न्नास्यसि ।	तुम	किस शास्त्रको पढ़ोगे ।
२	युवां		जेष्यथ ।	तुम	दोनों जीतोगे ।
	युवा		क्षेप्यथ ।	तुम	दानों गट छोड़ोगे ।
३	य य	शिशु	स्यर्चय ।	तुम लोग	लड़कोंको पूजोगे ।
	यू य	मां	द्रक्ष्यथ ।	तुम लोग	सुक्ति देखोगे ।
	यू य		मद्घ्नथ ।	तुम लोग	दूध खाओगे ।
	यू य	कुत्र	वत्स्यथ ।	तुम लोग	कहाँ बसोगे ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्यर्चयसि, क्षेपयसि, मक्षयसि, पास्यथ, घ्रास्यथ स्यास्यथ,  
द्रक्षयसि, भक्षयसि, प्रक्षयथ, वेक्षयसि, सक्षयथ , दंक्षयसि, मक्षयसि,  
वत्स्यसि, न्नास्यथ ।

### चतुर्दश पाठ ।

( १ )—भाष्मनेपदो धातु ।

१	त्व	कि	शक्तिप्राप्ते ।	तुम का	शक्ति का करोगे ।
	त्व	तत्र	उपवन ईक्षिप्राप्ते ।	तुम	वहाँ बगीचा देखोगे ।

१—भाष्मनेपदो धातुओंसे सम्बन्धपुरुषार्थे सति स्वैथे, सप्ते प्रथम्य लगते ई ईव प्रथम पुरुषके समान सम्बन्धता ।



१	त्वं	मत्त	मादिषामि ।	२०	एव	कर्मको रूप इति ।
	त्वं	तम्	षादिषामि ।	२०		कर्मका कर्म कर्मि ।
२	युष्मिन्	तान्	ईशितोमि ।	२०	इति	कर्मको रूप इति ।
	युष्मिन्		ईहितोमि ।	२०		इति कर्म कर्मि ।
	युष्मिन्		वेदितोमि ।	२०		इति कर्म कर्मि ।
३	यूयम्	साम्नादि	मादिषामि ।	२०	कर्म	कर्मको रूप इति ।
	यूयम्	साम्नादि	(विनि)मादिषामि ।	२०	कर्म	कर्मको रूप इति ।
	यूयम्	संज्ञितान्	प्रादिषामि ।	२०	कर्म	कर्मको रूप इति ।

१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-

मिथिषामि, साधिषामि, ईहितोमि, कर्मिषोमि, पारदिषामि, मदिषामि, मादिषामि, मादिषामि, ईहितोमि, वेदितोमि, मंजिषामि ।

### पंचदश पाठ ।

१	एव		उपेयामि ।	२०		उपेयामि ।
	एव	ता	सामि ।	२०		कर्मका कर्म कर्मि ।
२	युष्मिन्	किं	सहसरोमि ।	२०	इति	कर्मको रूप इति ।
	युष्मिन्	यथा	अप्युमि ।	२०	इति	कर्मको रूप इति ।
३	यूयम्	कार्यादि	पारप्युमि ।	२०	कर्म	कर्मको रूप इति ।

१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-

उपेयामि सहसरोमि, सप्युमि, अप्युमि, पारप्युमि,

### षोडश पाठ ।

#### समयपदी धातु ( १ )

- १ त्वं जिनं त्रियिषामि ( मे ) तुमं जिनको विना कर्मि ।  
 त्वं महावीरं यज्ञासि ( मे ) तुमं महावीरको तुम कर्मि ।

१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-

त्व कूप खनिपरसि ( से ) तुम कृपा खोदीगे ।

त्व धरान् याचिपरसि ( से ) तुम वर मांगेगे ।

त्व गुणिन अयिपरसि ( से ) तुम गुणीका सहाय लगेगे ।

२ युवा दरिद्रान् भरिपरथ ( परेथे ) तुम दोनों गरीबोंका पालन करोगे ।

युवा साधून् अयिपरथ ( परेथे ) तुम दोनों साधुओंकी सेवा करोगे ।

युवा धन घोक्षाय ( क्षेथे ) तुम दोनों धन दिलाओगे ।

युवा सेवक देक्षाय ( क्षेथे ) तुम दोनों सेवककी आज्ञा दोगे ।

३ यूयं वस्त्राणि रक्षाय ( ध्वे ) तुम लोग कपड़ा रगोगे ।

यूय भूमि कर्षाय ( ध्वे ) तुम लोग भूमिकी जोतोगे ।

यूय विशून् आदरिपरथ ( ध्वे ) तुम लोग लड़कोंका आदर करोगे ।

यूय गृह स्नेपस्यथ ( ध्वे ) तुम लोग घर लीपोगे ।

यूय वृक्षान् लोप्स्यथ ( ध्वे ) तुम लोग पेड़ काटोगे ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

घोक्षार्ध्वे, त्वेक्षरसे, अदेक्षार्ध्वे रक्षरसे, कर्षार्सि, स्नेप्स्यसि,  
लोप्स्यसे, भरिपरसि, वक्षार्ध्वे मोक्षार्ध्वे स्रक्षरसि, भ्रक्षार्ध्वे, वप्स्यथ,  
तोप्स्यसि, यक्षिथ, अयिपरध्वे, धविपरसि, देक्षरसि ।

## सप्तदश पाठ ।

### साहित्य परिचय

हिंदीमें अनुवाद करो ।

अथ नयभूषणो विक्रमवान् प्रभु पद्मनाभः शत्रून् जितुं निर्गमि-  
परति । स मार्गं गच्छन् सर्वसेनासहितस्तारामडलपरिहृतसङ्घ  
इव त्वेक्षरति । सोऽहितीयां विभूषां ( शाभा ) वहत मणिकूट नाम  
पर्वतं द्रक्षरति । त दृष्ट्वा सेनापति "अत्र गत कोऽपि जन पीडा न  
अनुभवति" इति गदिपरति । इदं श्रुत्वा नृपस्तम् आश्रयिपरति । पुन

कतिचिद् ( कुल ) द्विषामनर जयायं प्रत्याप्यति । समीप प्राग  
 चङ्गल पद्मनाभ आकट्यं क्वचित् (कोरे) गतश्च इतस्ततो दिगोऽधिपा-  
 ति, क्वचित् पर्यंतगच्छराधि शेषिष्यते क्वचित् पद्मनाभचरणमाय  
 यिष्यति, क्वचित् युद्ध्या ( भङ्कर ) शोष्यति, क्वचित् सप्ततदा  
 रान् घोष्यति । मोऽपि नृप पद्मनाभ उद्वतान् स्वविरोधिनीषिष्य  
 कान् विद्दुष्यति न तात्प्यति, तान् हितवर्षाति एव उपदेष्ट्यति,  
 अतः, मद्गुमनांसि अपि अगुर्याति । स मत्तान् आशोक्ष घनतत्प  
 रान् एव ह्यपिष्यति दरिद्रान् भरिष्यति, दानादिकधर्मकार्ये आव  
 रिष्यति । अनंतर सर्वा प्रजा मोदिष्यते, तथा दृष्टा मत्पुत्र  
 गुरुमिव ईक्षिष्यते, पितरमिव आदरिष्यते देवमिव अर्चिष्यति ।  
 इत्य ( इस प्रकार ) स राज्यं कृत्वा दीक्षिष्यते माघं च सप्स्यते ।

विदो वनायो—

मैं कहीं ( कुशाधि ) नहीं जाऊंगा । तुम क्या पढ़ोगे । नौकर  
 तुम्हारे सेवा करेगा । विद्यार्थी गुरुका सहारा लेंगे । मैं जैनद्रव्या  
 करण पढ़ूंगा । नङ्के उषका सम्भार करेगे । प्राग हाथको  
 जला देगी । सुनिराज श्रावकाको उपदेश देगी । कुम्हार घडे  
 बनावेगा । यह चूण खावेगा । तुम दोनों किस वस्तुका विनिमय  
 करोगे । अतिधि धन मांगेगा । हम ईश्वरको पूजेगे और गुरुको  
 नमस्कार करेगे । पिण्डाक्षुल पशु पानी पीयेगे । वे यहाँ नहीं  
 रहेंगे । राजा कुछ दिन बाद प्रस्थान करेगा । हम दोनों इसको  
 नहीं चाहेंगे । मैं गुरुसे पूछूंगा । यह नदोको तर जायगी ।  
 मच्छर मुझको काटेगा । पद्मनाभ भवश्य लोतेगा । किसान खेत  
 जोतेगे और बीज बोधेंगे । उनको कौन छूवेगा ? । लोग इसको  
 प्रशंसा करेगे । यह बात प्रसिद्ध हो जायगी । यदि तुम यत्न  
 करोगे तो विद्वान् होजाओगे । हम पटना शहर करेगे । दासी  
 घर लोपेंगी । रसीइया चावल पकावेगा । सूर्य चमकेगा ।

पढ़ करी—

नदी एधिपरति । नौका मधते । अह राजान ईचिपरामि ।  
 कुलाल पात्राणि स्रक्षते । नार्यं नगरीं प्रवेक्षते । की मोदिपरति ।  
 अहं दुग्ध पास्ये । जीवक गुणमालां उदक्षरसे । कर्माणि फलि  
 परते । क इमां स्व क्षरति । साधव जिनं अर्चिपरते । त्व  
 कदा कि कार्यं चारत्स्यति । यूय जीविपरध्वे । राजानी कीर्ति  
 लप्स्यत । त्व धन एधिपरे । पद्मनाभ दोचिपरसे । अह धन  
 याचिपरसे । यूय पुन पुन चेष्टिपरामहे । वय जैने ऋ पठिपरामहे ।  
 भ्रमर पुष्प घ्रास्यामि । बालक गृह गमिपराव । कृपका चेत  
 कच्छंथ । ते वीजान् वप्स्यथ । विद्यार्थिनं शास्त्राणि म्नास्यति ।  
 कम फलिपरसि । अग्नय काष्ठानि धक्ष्यसि । यूय सप्स्याम ।  
 जग देवान् मानिपरसे । गुणघ्राहिण पठितान् कल्पिपरध्वे ।  
 सुकर्म प्रथिपरसे । युवां कदा उदक्ष्यते । के यथांसि लप्स्यते ।  
 निर्धना सधनं अथिपरावहे । राजा कारागारवासिनं मीक्ष्यसे ।  
 यूय पापकर्माणि त्यक्ष्यते । वय राजान् खादिपरसे । पाचक  
 मोदकान् भ्रक्ष्यध्वे । रजक वस्त्राणि रक्ष्यते । के वीजान् वप्स्यसे ।  
 प्रियविद्योग हृदयं तुदिपरसि । कपका वीजान् वधिपरति ।  
 मुनय श्रावकान् आदेशिपरति । नौका मज्जिपरति । कृषोवस  
 चेत कर्पिपरति । राजा प्रजा अनुरजधिपरति । जीवक गुण-  
 मालां उदक्षिपरति । अहं अत्र वसिपरामि । पंडिता धनानि  
 लभिपरति । श्वश्रू वधू स्वजिपरते । सर्पं भेक दशिपरति ।  
 पद्मनाभ जधिपरति । यूय शिशुन् आदृष्यथ । पापकर्मां त्व  
 पाप न त्यजिपरसे ।

छन्दसं अनुवाद कते—

यहां (भरतचौखे) चौदह मनु होंगे। अतिममनु महापद्म नामके  
 होंगे। उनका मुख (तन्मुख) चंद्रमाके समान चमकीला। हाथ

शेपनागको लोतेगे । धे विषय पाछनार्षीको जसावेगे । कुवेर  
 पयोध्याको बनावेगा । यह बहुत प्रसिद्ध होगी । धे सुदरी नामक  
 राजपुत्रीको विवाहेंगे । एक समय ( एकदा ) रानी सोलह ( षोडश )  
 व्रत देखेगी । फल पतिसे पूछेगी । पति शुभफल कहेगा । पुत्र  
 जन्म होगा । देव पाये गे । धे पुत्रको पांडुकमिस्ता पर ले जाये गे  
 ( नेपा ति ) उसका अभिषेक करेगे, और पुनः करे गे । सौट  
 कर ( प्रत्यागत्य ) नगरोत्थ करे गे । बहुतगे भगवान्की सेवा  
 करे गे । बाकीके ( शेप ) स्वर्गको चले जाये ग ।

ऊपर विहित मन्त्रपर अल्ल तमे मन्त्रोत्तर करो ।

दिनेमें अनुवाद करो—

श्रीमंत जीवधर प्राप्तो लोको द्रष्टुं पुष्टं सर्वविपद्रहितं  
 सुखभोगो च भविष्यति । केऽपि दुःखं न द्रष्ट्यति । नार्योऽपि  
 धना मोलवत्यस्य भविष्यति । दुर्भिक्षादिजग्यं दुःखं न स्यास्य  
 ति । शौरा कुत्रचित् अपि न यत्स्यति । सर्वं धर्ममाचरिष्यति,  
 गुरुन् समानिष्यते, ईश्वरं अर्चिष्यति, सत्कथां वदिष्यति, पुत्रमुखं  
 ईक्षिष्यते । सुनय इतस्ततः सुधर्मं उपदेक्ष्यति । जना दीक्षि-  
 ष्यते । केचित् स्वर्गं गमिष्यति केचित् च पुनरपि मनुष्या-  
 भविष्यति ।

प्रश्नाणां—

क क प्राप्त कीदृशो भविष्यति । के किं न द्रक्ष्यति । नार्यं  
 कीदृशा भविष्यति । किं न स्यास्यति । के न यत्स्यति ।  
 के क आचरिष्यति । सुनय किं करिष्यति । जना कीदृशा भवि-  
 ष्यति । कं अर्चिष्यति ।

दशम अध्याय ।

तुदादि धीर भ्वादिगणोय धातुओंके आधा,  
आशोर्वाद् अथक लोट् सकारके साथ प्रथमा  
धीर द्वितीया विभक्तिका प्रयोग

प्रथम पाठ ।

प्रथम पुरुष (१)

परस्मैपदी धातु

१ स	ग्राम	गच्छतु ।	घट	गायकी गाय ।	
	आवक	साधु' अर्चतु ।	आवक	शापुको पूजे ।	
	इय	पुस्तक	पठतु ।	यह स्त्री	
	शिशु	पुण्याणि	विकिरतु ।	लड़का	
	सर्व	जन	नदतु ।	सब लोग	
	जैनेन्द्र	धर्मचक्र'	सतत	प्रभयतु ।	त्रिनेन्द्र भगवानका धर्मचक्र घुमाया समथ रही ।
२ अमू		मिपतां ।	दो लगे	अर्था करे ।	
	वासकी	हसता ।	दो	बालक हँसे ।	
	ते	जीवतां ।	दो दो स्त्रियाँ	जीवें ।	
	साधु	उपदिशता ।	दो साधु	उपदीशदी ।	
	शिशु	दुग्ध	पिमतां ।	दो लड़के	
३ पयिका		चलतु ।	रास्तागोर	चले ।	
	नाविका'	नदी	तर तु ।	नाविक ( मज्जाह )	
				नदीकी पार करे ।	

१—पश्चिमी अक्षांशोंमें जो बतमान कालके प्रथमपुरुषमें 'पठति, पठत, पठति' आदि रूप बतलाये हैं उनके अंतके 'ति, त, अति' की क्रमसे 'तु ता, अतु' कर देनेसे इध ( लोट् ) के रूप बनते हैं ।

पुष्याणि	स्फुटतु ।	फूल	खिले ।
रात्रान्	दृष्टान्	अदंतु ।	राजा लोग
ते	गृह	गच्छतु ।	दे घरकी
शिशव	कुसुमानि	जिघृतु ।	लडके
			फल भू धे ।

नोधे लिखे शब्दोसे वाक्य बनाओ—

गायतु, पिबतु जिघ्रतां, व्रजतु, नदताम् अचतां, अटतु भवतां,  
श्लायता, सजतु, विकिरतां, सर्पतां, दशतु, बहतां, दहतु, मनतां  
दिशतु, तुदता, अचतु ।

संज्ञित बनाओ—

दो लडकियां अग्नि न छुधें । वे नदी पार करे । कुम्हार  
घडा बनावे । जीवधर जीवे । पाप नष्ट हो । पुत्र जीवे । लडके  
दूध पीवे ।

शुभ करो—

अयं शास्त्राणि पठतु । मत्तगजी उच्चै नदंतु । सूर्वा  
मिपतां । बालिका झीच्छतु । सा तत्र वसतु । कर्माणि फलतु ।  
भवान् ( आप ) चिर जीवतु ।

हिंदी बनाओ—

निदतु नोतिनिपुणा यदि वा सुवतु ( स्तुति करे ) लक्ष्मी  
समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ट ( इच्छाके अनुसार ) । जन शूर  
सुरूप सुभगो वक्ता वा भवतु पर अर्थ विना न प्रतिष्ठा गच्छति ।  
धनार्थी जीवलोकोऽय श्मशानमपि सेवते । त्यक्त्वा जनयितार  
( पितर ) स्व ( अपने ) नि स्व ( निर्धन ) गच्छति दूरत । भवान्  
कुलक्रमागत राज्यभारमुद्धृतु । स्वकीय पितर मातर गुरुजन  
भवतोऽचतु । छात्रा सर्वदा सदाचारान् चरतु ।

द्वितीय पाठ ।

( १ ) आत्मनेपदो धातु

१ मति	एधतां ।	बुद्धि	बढ़े ।
जीवक*	सुरमजरीं उद्वहतां ।	जीवधर	सुरमंजरीको ब्याहरे ।
पिता	पुत्र	स्वजतां ।	पिता पुत्रको आर्त्थिगण करे ।
२ विद्यार्थिनी	शिक्षेतां ।	दो विद्यार्थी	पढावे ।
ब्रह्मचारिणी	दीक्षेतां ।	दो ब्रह्मचारी	दीक्षाले ।
एते	नगरे	प्रयेतां ।	ये दो नगर प्रसिद्ध हों ।
एतौ		चेष्टेतां ।	ये दोनों धिष्टा करे ।
शिशू		यतेतां ।	दो लड़के प्रयव करे ।
३ शिशव*	स्त्रयताम् ।	लड़के	सुखरापे ।
ते	साधून्	कत्यता ।	वे साधुओंको प्रमसाकरे ।
अमू	कार्याणि	आरभताम् ।	ये लोग काम शरु करे ।
गुणिन	यथासि	लभतां ।	यश प्राप्त करे ।

शोचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वर्द्धतां, एधेतां, वेष्टेतां, यततां, स्त्रयतां, आरभतां, कत्यतां, शंकतां, मोदताम्, भिक्षतां, इष्टतां, इजताम्, लभेताम्, सहतां, ईक्षतां ।

पढ़ करो—

अमू मोदतां, बालका यतेतां, पडिता प्रथता, शत्रव वीर्यं सहतां, नद्य वर्द्धतां, युवकौ उद्वहतां, विद्वांस शास्त्राणि गाहतां ।

य छान्त बनाओ—

लड़के लोग नदियोंको देखे । बालक पुस्तकोंको विनय करे ।

१—आत्मनेपदो धातुओंके वतमानकालके एधते एधेते, एधति आदि रूपोंके अंतके 'त' को 'तां' कर देनेसे रूप बनते हैं ।



सडके यश पावे । जीवधर प्रसिद्ध हो । चन्द्रमा दीप्त हो । राजा दुर्जनोंको पीडादे ।

दुःख करी—

गुणवान् कीर्ति लभतु । शिशव कुसुमानि जिघृतां । रात्रधानी प्रसतु । बुद्धि बद्धेतु । पुत्रौ जीवेतां । राजान दुष्टान् भ्रष्टतां । पिता पुत्र स्वजतां । वृद्धा लाजान् विकिरेतां । हृदय मोदतु ।

## तृतीय पाठ ।

### ( १ ) उभयपदो धातु

- १ पाचक यवान् भृञ्जतु ( तां ) रसोरथा लोकी मू ली ।  
शिशु लता सिंचतु ( तां ) लइका लताभाको सींचे ।  
राजा दरिद्रान् भरतु ( तां ) राजा दरिद्रोंका पीपण करे ।  
निर्धन धन याचतु ( तां ) निष न धन मांगे ।
- २ आवकौ जिनं यजतां ( जेतां ) दो श्रावक जिनको पूजा करे ।  
क्षपीवली क्षेत्र कर्षतां ( र्षतां ) दो किसान खेतको जोते ।  
शृत्वौ गर्तं खनतां ( नेतां ) दो सेवक गड्डा खोदे ।  
तनुवायौ मस्त्राणि वयतां ( येतां ) दो कुलाछे कपड़े बुने ।
- ३ ते त्वां तुष्टंतु ( तां ) ते तुम्हे कुल दे ।  
दरिद्रा धनवर्तं आश्रयतु ( तां ) गरीब लोग धनवान्का सहारासे ।  
रजका वस्त्राणि रजतु ( ता ) धोषो कपड़े रमे ।  
वृद्धा धवतु ( तां ) वृध रूप ।  
सेवका वृक्षान् क्षुपतु ( तां ) सेवक वृध काटे ।

१—आत्मनेपदमें जव रूप चलाना हो तव आत्मनेपदो धातुकी समान और परस्मैपदमें चलाना हो तव परस्मैपदो धातुकी समान चलाना ।

नीचे लिखे शब्दोंके वाक्य बनाओ—

लिम्पतु, छपतां, सिचतु, त्विपतां, श्रयतां, भरतु, गूहतां, सिंचतु,  
भञ्जिता, पक्षतां, नयता ।

एह करो—

सूर्यं त्विपेतां, गृहस्य दरिद्रान् भरतु, निर्धनं धनिन भञ्जितां  
राजा कारागारवासिन मुचंतु, प्रभु भृत्यान् आदिशतां, नार्यं  
चदन निपेतां, ब्रह्मचारिण दीक्षेता, भृत्यां स्वामिन सेवताम् ।

संज्ञत बनाओ—

श्रावक लोग पापोंका सहार करे । किसान लोग खेत बोधे ।  
गृहस्थ द्रव्य वितरण करे । सेवक भार ढोवे । पुत्रविरह हृदयको  
व्यथित करे । निर्धन धनियोंका सहारा ले । लडकियां शरीर निलस  
करे । दो स्वामी सेवकोंको आज्ञा दे । मुनि धर्मका उपदेश  
दे । कुम्हार घडा बनावे । पापी पाप छोडे । भिक्षुक गांवको  
जाय । गाय खेतको खावे । विद्यार्थी संस्कृत पढे । कोइ किसीकी  
निदान करे । धनिक लोग गुणियोंका पोषण करे । राजा धर्मात्मा  
हों । सब लोग सुखी हों । कोई दुख न पावे ।

## चतुर्थ पाठ ।

(१) उत्तम पुरुष

परस्मैपदी धातु

१ अह	जेनेंद्र	पठानि ।	भे	जेनेंद्र पठू ।
अह	विद्यालय	गच्छानि ।	भे	पाठशाला जाऊ ।
अह	जिन	अर्चानि ।	भे	जिनकी पूजाकरू ।
अह	विद्या	इच्छानि ।	भे	विद्याको चाहू ।

१—वर्तमान कालके उत्तमपुरुषके वदानि वदाव, वदान आदि रूपोंके नि, व, म  
को लक्षणे 'नि व, म' कर दिनेसे इसकी रूप हो जाती है ।

अहं		मिषाणि ।	मैं		यहाँ रह ।
अह	फल	खादानि ।	मैं		एक बात ।
२ आवां		मज्जाव ।	हम दो जने		पूरे ।
आवां	घटान्	सृजाव ।	हम दो जने		बड़ा प्रवेश ।
आवां		जयाव ।	हम दोने		जीते ।
आवां	षामं	ब्रजाव ।	हम दो जने		सब जाये ।
आवां	पापानि	निंदाव ।	हम दोने		पापोंकी निन्दा करे ।
आवां		नदाव ।	हम दोने		चर्चनित हों ।
३ वय	घन	अंचाम ।	हम	बनकी	जाये ।
वर्यं		अनाम ।	हम सब		इभीयां बसे ।
वय	रुद्र	विशाम ।	हम		घरमें प्रवेश करे ।
वय	ससा	तराम ।	हम		ससारको पार करें ।
वर्यं	न	क्र दाम ।	हम न		सिपे ।
वर्यं	पुष्याणि	विकिराम ।	हम		फूल बिछेरे ।

नीचे निखे शब्दोंके वाक्य बनाओ—

हराम, भवानि, गदाव, नदाम, अचाव, जिघ्रानि, पिषानि, दहाव, दशाम, लीवाम, इच्छाम, सृजाव, जयाम, विशानि, ।

सहाय बनाने—

हम दूध पीते । मैं पत्र लिखू । हम दोनों चिरकाल जीवे । हम शत्रु जीते । हम घरमें प्रवेश करे । मैं दुर्जनको निन्दा करू । हम दो जने पाठ पूछें । मैं तुमको अशुभ करू । हम बना रस ( वाराणसी ) चले । हम फूल छुर्छें । हम यहाँ रहे । मैं शीघ्र प्रस्थान करू । मैं कर्म जलाऊ । हम दो जने फल खाये । हम नदी तरे । हम सत्य वाक्य बोलें । मैं पंडित हूँ । हम शास्त्र मनन करे । हम दोनों धन बाँटे ।

पंचम पाठ ।

(१) आत्मनेपदी धातु

१	पह	स्वीरत्न	नभै ।	भे	नेह लोको प्राय कइ
	पह	तां	उहहे ।	भे	उहरो म्याह
	पह	सखन	फत्ये ।	भे	सखनको प्रमया कइ
	पह	गुणिन	माने ।	भे	गुणियोका स मानकइ
	पह		शके ।	भे	शका कइ
	पह		ईहे ।	भे	प्रस कइ
२	भावा	सेवकान्	तिजावहे ।	इम दोना	सेवकोका जमा करे
	भावा	शिगून्	आदरावहे ।	इम दोनो	उहकोका आरर करे
	भावां	पठन	आरभावहे ।	इम दोनी	पठना प्रारभ करे
	भावां	दुर्जनान्	ईजावहे ।	इम दोनी	दुज नोको मिंग करे
	भावां	धन	उदावहे ।	इम दोनी	धनदे
३	वय		दोचामहे ।	इम लोग	दोचिन हो
	वय	तान्	स्वजामहे ।	इम लोग	उमका आनिगन करे
	वय	दुष्टान्	गर्हामहे ।	इम लोग	दुष्टोको मंदा करे
	वय	तां	उहहामहे ।	इम लोग	उमसे विवाह करे
	वय		अयामहे ।	इम	सुखरावे

निबलिखित शब्दोंके वाक्य बनाओ—

ईसे, अये, ईजामहे, यते, ईहे, आदरे, माहावहे, मनावहे, गर्हावहे, भिसे, तिजे, शकामहे, लभावहे, रभे स्वजामहे ।

उप करी—

अह यथ लभानि । भावां कार्य आरभाव । वय त्वां स्वजाम ।

१—वर्तमान कालके आत्मनेपदी धातुओंके लभे लभावरे लभामहे आदिके 'o' को 'e' कर देनेसे उहके रूपही जाते हैं ।

अह दुर्जनान् गर्हाय । आर्वा सज्जनान् आदरे । वय गद्गन् जयामि ।  
वय शास्त्राणि मनावहे । वयं अय भिद्याम । अह वन व्रजे ।

संस्कृत वचनो—

हम लोग यज्ञ करे । मैं अच्छे कार्य प्रारम्भ करूँ । हम दोनों  
सज्जनोको प्रशंसा करे । हम लोग अपराधियोंको क्षमा करे ।  
हम गुणियोंको आदर करे । मैं नीचानूँ । हम दो जने बटे ।  
हम द्रव्याका विनिमय करे । मैं गोभित होऊँ । हम दोनों जीते ।

## पष्ठ पाठ ।

### सभयपदी धातु

- १ अह ओदन पचामि ( चै ) मैं खारम पकाऊँ ।  
अह पापानि मुञ्चामि ( चै ) मैं पाप छोड़ूँ ।  
अहं त न तुदामि ( दै ) मैं उसको अपित न कहूँ ।  
अहं क्षेय सिद्धानि ( चै ) मैं खेत खोदूँ ।  
अह क्षेय वपामि ( पै ) मैं खेत बीजूँ ।  
अहं दुर्जनान् भराणि ( रै ) मैं सब लोका पालन कहूँ ।
- २ आर्वा धन गूहाव ( वहे ) हम दोनों धन छिपावें ।  
आर्वा गुणिन आश्रयाव ( वहे ) हम दो जने गुणियोंका आश्रय ।  
आर्वा जिन भजाव ( वहे ) हम दो जने जिनमगवान्को भज ।  
आर्वा अर्थ याचाव ( वहे ) हम दो जने धन माँगें ।  
आर्वा धर्म उपदिश्याव ( वहे ) हम दो जने धर्मका उपदेश ।
- ३ वय हृदय लिपाम ( महे ) हम लोग पत्थर फेंके ।  
वय हृदयान् लुम्पाम ( महे ) हम हृदयोंको काटे ।  
वय वस्त्राणि वयाम ( महे ) हम कपड़े डुल ।  
वय दुष्कूल रजाम ( महे ) हम दुश्कूल ( भोती दुष्कूल ) रने ।  
वयं गृहं लिपाम ( महे ) हम घर लीपें ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

छपाम, भजे, वृद्धानि, तुदामहै, सिचाम, भराणि, याधे, याजानि,  
भजावहै, अयाम, रजानि, वृद्धावहै, नयानि ।

पढ़ करो—

अह जिन अयामहै । अह पाप सुचाम । आवां चित्र वपामहै ।  
वय ता तुदै । अह लता सिचाम । आवां जिन यजामहै । वय  
वृद्धाणि रजाव । वय शत्रून् छपावहै ।

रुद्धत बनाओ—

हम किसीको पीडा न दे । हम दो जने पेड सीधे । मै  
रक्षी लाउ । हम लोग वैरियोंको मारे । हम भगवान्का सहारा  
ने । हम बोझ ढोवें । हम लोग नौकरोंको आज्ञा दे । हम  
घोते ( शाटी ) रगे । मै जो ( यव ) भूछू । हम टेन्ने ( लोठ )  
फेके ।

## सप्तम पाठ ।

( १ ) मध्यम पुरुष ।

परस्मैपदी धातु

१ ल्व	सता	उच्च । १	सता चौब ।
ल्व	कथां	गद । १	कथा कच ।
ल्व	विद्यां	मन । १	विद्या पठ ।
ल्व	धन	वितर । १	धन बाँट ।
ल्व	तां	तर्ज । १	उच्च शब्दोंको तज ना कर ।

१—परस्मैपदी धातुओंके मध्यमपुरुषके आज्ञा ( लोट ) चर्चमें रूप बनाने होती बतमान  
कालके मध्यम पुरुषके उच्चसि उच्च, उच्च आदि चर्चमें क्रमधे, विकल्पीय 'य' को 'त'  
और 'य' को 'त' कर देना चाहिये ।

अहं दुर्जनान् गर्हाय । आयां सज्जनान् पादरे । वयं शत्रून् जयामि ।  
वयं शास्त्राणि ममावरे । वयं अन्नं भिक्षाम् । अहं वनं प्रजे ।

संज्ञत वनादी—

हम लोग यज्ञ करे । मैं अच्छे कार्य प्रारंभ करूँ । हम दीनों  
सज्जनोंकी प्रशंसा करे । हम लोग अपराधियोंको समा करे ।  
हम गुणियोंका आदर करे । मैं दीखालू । हम दो जने बदे ।  
हम द्रव्योंका विनिमय करे । मैं शोभित होऊँ । हम दोनों जीतें ।

## पष्ठ पाठ ।

### सभयपदी धारु

- १ अहं शीघ्रं वचानि ( चै ) मैं वाक्पत्र पत्राउ ।  
अहं पापानि मुचानि ( चै ) मैं पाप छोडू ।  
अहं त न तुदामि ( द्वै ) मैं उसको व्यथित न करू ।  
अहं क्षेत्रं सिचानि ( चै ) मैं खेत छोडू ।  
अहं क्षेत्रं वपानि ( चै ) मैं खेत बोऊ ।  
अहं दुर्जनान् भराणि ( रै ) मैं दबकोंका पावन करू ।
- २ आवां धनं गूहाय ( वहै ) हम दोनों धन छिपावें ।  
आवां गुणिन आश्रयाय ( वहै ) हम दो जने गुणियोंका आश्रय ।  
आवां जिनं भजाय ( वहै ) हम दो जने जिनभगवान्की भज ।  
आवां अर्थे याचाय ( वहै ) हम दो जने धन मांगें ।  
आवां धर्मं उपदिशाय ( वहै ) हम दो जने धर्मका उपदेश ।
- ३ वयं हृष्यन् विषाम ( महै ) हम लोग पत्थर फेंके ।  
वयं वृक्षान् लुम्पाम ( महै ) हम वृक्षोंको काटे ।  
वयं वस्त्राणि वयाम ( महै ) हम कपड़े बुन ।  
वयं दुःखं लजाम ( महै ) हम दुःख ( भीती दुपहा ) रने ।  
वयं शत्रून् विषाम ( महै ) हम शत्रुओंको ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

छपाम, भजे, वहानि, तुदामहे, सिचाम, भराणि, याचे, याजानि,  
भजावहे, अयाम, रजानि, वहायहे, नयानि ।

एह करो—

अह जि। अयामहे । अह पाप मु चाम । आवा क्षेत्र वपामहे ।  
वय ता' तुदै । अह लता. सिचाम । आवा जिन यजामहे । वय  
वस्त्राणि रजाव । वय शत्रून् छपावहे ।

संस्कृत बनाओ—

हम किसीको पीडा न दे । हम दो जने पेड सीचें । मै  
रखी लाठ । हम लोग वैरियोंको मारे । हम भगवान्का सहारा  
ले । हम बोझ ढोवें । हम लोग नौकरोंको आज्ञा दें । हम  
धीतो (शाटी) रगे । मै लौ (यव) भूँडू । हम ढेली (लोछ)  
फेके ।

## सप्तम पाठ ।

( १ ) मध्यम पुरुष ।

परस्मैपदी धातु

१ त्व	लतां	उच्च । ५	लता सींच ।
त्व	कथां	गद । ५	कथा कह ।
त्व	विद्या	मन । ५	विद्या पठ ।
त्व	धन	वितर । ५	धन बांट ।
स्व	तां	तर्ज । ५	उस लड़कीको तर्ज ना कर ।

१—परस्मैपदी धातुओंके मध्यमपुरुषके आत्मा ( लोट ) अरुमें रूप बनाने होती वसमान  
कालके मध्यम पुरुषके लक्षसि लक्ष्य लक्ष्य आनि रूपमें प्रमसे, सिक्काधीप 'य' को 'तं'  
और 'य' को 'त' कर देना चाहिये ।



त्व	पहित	भय ।	तु	दहित ही ।
२ युवां		जीवत ।	तुम हीनो	जोहित हीपी ।
युवां	पुण्याणि	विकिरत ।	तुम ही जने	क म बछेरी ।
युवां	इमां	पश्यत ।	तुम हीनो	इस भीषी क्षीपी ।
युवां	मतां	श्रीकत ।	तुम ही जने	जलकी यो यो ।
युवां	नदीं	क्रामत ।	तुम ही जने	नगीकी ज्ञपी ।
३ यूय	कुमारीं	तर्कत ।	तुम भोग	कुमारीका मारी ।
यूय	चाम	गच्छत ।	तुम भोग	१ दावकी ज्ञपी ।
यूय	गृह	विद्यत ।	तुम भोग	बर्षी प्रवेग करी ।
यूय	अपराधान्	मपेत ।	तुम लोच	अपराधको चमा करी ।
यूय	जिन	मद्यत ।	तुम लोच	जिन भगवानकी पूजा करी ।
यूय	दुग्धं	पिबत ।	तुम लोच	दूध पीपी ।

मौने लिखे शब्दोंसे भाषा बनापी—

भूप क्रामत निद गदत, अर्धत, चाम, चागृश, जर्जत, इच्छत, भयत, मनत छ तत, घृच्छत, घदत, जपतं, प्रणम, जय जीवत, ज्ञीच्छत, रिपत ।

स लूत बनायो—

तुम बनकी जाओ । तुम भोग पाठ पढी । जिन भगवानकी पूजा । तुम दो जने धन कमाओ । किसीकी निदान करो । तुम दो जने सर्वदा ध्यानदित हीओ । कपडे धुनो । पापोंकी छोडो । तुम लोग कीर्त बात पूछो । फूल बिछेरो ।

षष्ठम पाठ ।

षामनेपदो धातु

१ त्वं		भापस्व ।	तुम	बको ।
त्वं	यथं	वेष्टस्व ।	तुम	प बको वेष्टित करी ।
त्व	विद्यां	ईहस्व ।	तुम	विद्याको पायी ।
त्वं	सुजनान्	कृत्यस्व ।	तुम	कृत्यको प्रथमा करी ।
त्वं	नदीं	ईक्षस्व ।	तुम	नदीको दीयी ।
२ युवां	तान्	ज्ञावेयां ।	तुम दो जने	तुमको प्रथमा करी ।
युवां	शास्त्र	जोचेयां ।	तुम दो जने	शास्त्रोको दीयी ।
युवां	घन	मांशेयां ।	तुम दो जने	घनको इच्छा करी ।
युवां	प्रघान्	गाहेयां ।	तुम दो जने	प दोका बवगाहन करी ।
३ यूयं	अध्वं	भिक्ष्व ।	तुम बीज	अध्व मानी ।
यय		एधध्व ।	तुम बीज	बदे ।
युयं		शोभध्व ।	तुम बीज	शोभित जोषो ।
यूय	नामावस्तुनि	मयध्व ।	तुम बीज	नामा वस्तुकोका मिनदिन करी ।
यूय		शकध्व ।	तुम बीज	शक करी ।
यूय		दीक्षध्व ।	तुम बीज	दीक्षा ली ।
यूय		यतध्व ।	तुम बीज	यत्न करी ।

नौषे लिखे शब्दोंके साथ बनायो—

अयस्व, तिजध्व, उहृहस्व, ईजस्व, यतध्व, चादरस्व, भिक्षेयां, भिक्षध्व, ईक्षेयां ।

१—षामनेपदो धातुकोके भाषा ( कीट ) में मध्यमपुरुषके यदि रूप बनाने हौंती बर-  
नन कायके मध्यमपुरुषके भावसे भावसे, भावसे आत्मिके 'सि धि ध्वे' को क्रमसे ख,  
यां धीर ध्व (कर देना चाहिये) ।

ईश्वर बनाओ—

तुम लोग ईश्वरके दर्शन करो। तुम लोग हमको चमा करो।  
तुम दो जने शाश्वतोंका व्यवसाय करो। तुम गुणियोंकी प्रशंसा  
करो। तुम लोग शका करो। तुम दुर्गुणोंकी निंदा करो। तुम  
लोग शत्रुओंको चमा करो।

एह करो—

यूय पठितान् आद्यस्य। त्वं जिन कथ्यध्व। युवां पथ  
खादिया। त्वं गंगां ईश्व। यूय द्रष्टव्यजातानि मयस्य। युवां मां  
तिष्ठतं। यूय पुण्याणि किरस्य।

## नवम पाठ।

### उभयपदी धातु

- १ त्वं भार वह ( स्व ) तुम भार ढींचो।  
त्व मृत्यु चादिश ( स्व ) तुम मौखरको खाया दो।  
त्व ईश्वरं भज ( स्व ) तुम भगवान्को सीवो।  
त्व धनानि गूह्य ( स्व ) तुम धन बिगाओ।  
त्वं आम्न चप ( स्व ) तुम आमको चूसा।  
त्व त्विय ( स्व ) तुम दोन छावो।
- २ युवां दरिद्रान् भरतं ( रीयां ) तुम दो जने दरिद्रोंका पालन करो।  
युवां शत्रून् वृषतं ( पेश्यां ) तुम दो जने शत्रुओंकी मारी।  
युवां जिनान् यजत ( जीयां ) तुम लोगों जिनकी पूजा करो।  
युवां राजत ( जीयां ) तुम दो जने शोभित होओ।  
युवां क्षेत्र वपत ( पेश्यां ) तुम दो जने खेत बोओ।
- ३ यूय ईश्वर व्ययत ( ध्व ) तुम लोग भगवानका चकारा ली।

यूर्यं अन्नं मृज्जत ( ध्व ) तुम लोग अन्न पकाओ ।

यूय गात्रं लिपत ( ध्व ) तुम लोग शरीर लिप्त करो ।

यूय तरुन् सुपत ( ध्व ) तुम लोग देह काटो ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

यज, आदिशेषा, भजस्व, गूहध्व, सु चत, आश्रयेथा, याचत,  
सिंचत, भरध्व, तुद, कर्षस्व, छषध्व खनेयां ।

पढ़ करो—

त्व मृत्यु आदिशध्व । युवां तान् तुद । यूय त यजत ।  
त्व लता सु पत । यूय इ धन आहर । युवा चोत्र सिंचध्व ।

संस्कृत बनाओ—

तुम कपड़े रगो । तुम सब लोग सब्जे धर्मका सहारा लो ।  
तुम दो जने विद्या मागो । तुम किसानको दुख न दो । तुम लोग  
जो भू जो । तुम शत्रुओंकी मारो । तुम लोग दुर्जनोको कष्टदो ।  
तुम दो जने इस निरपराधीको छोड दो । तुम लोग कूआं खोदो ।  
तुम वीज बोओ । तुम दोनों छेत जोतो ।

## परिशिष्ट ।

### (१) संबोधन प्रणाली

स्वरांत पुलिग ( २ ) अकारांत

१ भो वृषल ! इदं स्वास्थ्यं नाम न भवति । हे कृषीपल ( किसान ) यह  
स्वास्थ्य नहीं है ।

१—दूसरे काममें लगे हुए आदिभौके। अपना रूप संपुष्ट करनेके लिये जो वाक्य  
बोला जाता है उसे संबोधन कहते हैं । शब्दोंके कर्ता ( प्रथमा ) के रूप जो पहिले बात  
लाये गये हैं वही संबोधनके भी समझना । परंतु एक वचनमें भेद होता है । १ अकारांत  
शब्दोंके संबोधनके एक वचनमें विसर्ग नहीं होते ।

- १ वास ! त्वं किमर्थं इमं हतवान्—१ वृषे । मूने विवर्ति—ये इसको मर्या ।  
 हे पुत्र ! त्वं कुत्र गत —१ पुत्र । मू कहां गया ।  
 भो विद्याधर ! त्वं किमिच्छसि—१ विद्याधर । मू क्या चाहता है ।  
 २ भो पयिकी ! युवां कुत्र गच्छस्य —१ पयिकी । तुम दोनों कहां  
 जाते हो ।  
 भो महाभागो ! युवां कुत्रत्यो—१ महाभागी । तुम दोनों कहां के रहने  
 वाले हो ।  
 भो विप्रो ! कि युवां मदिरां पिबथ भो ब्राह्मणी । एता तुम दोनों मदिरा पीते हो ।  
 ३ भो सध्वजा ! यूयं कि विपद्या—१ सध्वनी । तुम क्यों विद्विष हो ।  
 भो धडिता ! यूयं कि पठथ—१ धडितो । तुम किन क्या पढ़ते हो ।  
 भो क्षात्रा ! युष्मान् अहं पृच्छामि—१ क्षात्रो । तुम क्षीनोंके मैं  
 पूछता हूँ ।

## ( १ ) इकरांत

- १ भो कवे ! त्वं कि रचसि—१ कवि । तुम क्या रचते हो ।  
 भो मुने ! त्वं अपराधिनि तिजस्व—१ मुनि । तुम क्षीनोंके क्या करते ।  
 भो अहं ! त्वं वास कि दशसि—१ अहं । मू वासकके कर्णों काटता है ।  
 भो ( २ ) सखे ! मां रच—मित्र । क्षीरो रचा करो ।  
 २ भो अग्नी ! युवां कि वन दृश्य—१ अग्नि । तुम क्षीनों कर्णों ननकी  
 काटती हो ।  
 भो कपी ! युवां किं दृष्ट गच्छस्य —१ कपी । तुम क्षीनों कर्णों परकी  
 जाते हो ।  
 भो अतियो ! युवां कि धनमिच्छस्य —१ अतियो । तुम क्षीनों कर्णों  
 धन चाहते हो ।

१ इकरांत शब्दके एक अक्षरमें 'इ' के स्थानमें 'ए' और विद्यमका लोप हो जाता है ।

२—अहं शब्दके विपक्ष नक्षत्रपक्षके अर्थ कर्णों ( प्रथमा )के उदात्त होते ।

१ भो' परय । यूय' अस्मान् तिजध्व'—अपि यवु'भो । तुम लोग इनको  
समा करो ।

भो नृपतय । यूय प्रजा रक्षत—हे राजाभो । तुम लोग प्रजाको रक्षा  
करो ।

भो, रवय । युष्मान् वय अर्चाम —ए शर्मा । तुम्हें हम लोग पूजते हैं ।

( १ ) उकारांत

१ भो, साधो ! त्वामहं प्रणमामि—हे साध । मैं तुमको प्रणाम करता हूँ ।

भो इदो ! त्व किरण विकिर—हे शंभ । तू किरणोंको फैला ।

भो, ( २ ) क्रीष्टो ! त्व कि झंझसि—हे लड्डू ! तू काँटा रोता है ।

भो' प्रभो ! त्व सेवकं तिजस्व—हे सामी ! तुम सेवकको समा करो ।

२ भो गिशू ! युवां कि प्रलपथ —हे लड्डूके । तुम दोनों काँटी प्रलाप करते हो ।

भो गुरु ! युवा छात्रान् पूच्छथ —हे गुरुभो ! तुम दोनों छात्रोंको पूछो ।

भो, विभावसू ! युवां दुर्जनान् दहथ —हे अपिभो ! तुम दोनों दुज  
नोंको जलाओ ।

१ भो वधव ! यूय ईश्वर अर्चत—हे भाइयो ! तुम लोग ईश्वरकी पूजा ।

भो तरय ! यूय छाया वितरत—हे शो ! तुम छायाको दीओ ।

भो शत्रव यूय दोषिण' तिजध्व —हे दुश्मनो ! तुम लोग दोषियोंको समा  
करो ।

( ३ ) ष्टकारांत

१ भो गृहोत । दातारि अर्चं ( ४ )—हे गृहण करनेवाले ! तू दाताको पूज ।

भो दात ! त्व धन वितर—हे दाता ! तू धन दे ।

१—स बोधनके एक मचनमें उकारांत शब्दके अन्तके उकारकी ओकार और विसर्गों का लोप हो जाता है । २ क्रीष्टुके विवचन बहुवचन प्रथमाके समाप्त होने ३ ष्टकारांतके अन्तके अकारको लगभ ' व ' हो जाता है । ४—दुग्धद अण्द शब्दका प्रयोग न करनेपर भी धनका अर्थ रहने मात्रसे ही मध्यमपुंसव और उत्तमपुंसवकी विद्या व्यवहारमें छाई जाती है ।

- भो श्रोतः । त्वं किं वृच्छसि—हे श्रोता । तू क्वा पूशता है ।
- २ भो जेतारी ! युवां शत्रून् अर्दंत—हे जीतनेवाली । तुम दीनों शत्रुओंका  
पीसा है ।
- भो दोग्धारौ ! युवां कुच गच्छथ - हे दुहनेवाली । तुम दीनों कहां  
जाते हो ।
- भो वक्षारौ । यवां कि वदथ —हे कहनेवाली । तुम दीनों क्वा कहती हो ।
- ३ भो घ्रातार । यूयं कि उपदिशथ —हे जानने वाली । तुम लोग क्वा  
उपदेश देते हो ।
- भो हतार । यूयं कि तान् हतवंत —हे दि शकी । तुम लोगोंके काँ  
सजके मारा ।
- भो फतार । यूयं किमौडध्वे—हे कर्तार । तुम गीग क्वा प्रयत्न करते हो ।  
दि दी बनाओ—

कुमार ! तातो ( पिता ) मां पाह्यति । सुनद । किमर्थमिह  
( यहा ) आगमनं । हा पुत्र शखचूड । कथमद्य ( आज ) त्वां  
न्त्रियमाणमह द्रक्ष्यामि । सुभग । पितरौ ते ( तुम्हारे ) प्राप्नौ । भो  
फणिपते ( मां ) किमेवमुद्दिग्नोऽसि ( हो ) । भो पधिराज । ( गहड )  
तूष्णीं ( चुप ) तिष्ठ क्षणमेक, यावन् ( जबतक ) एतौ स्वपितरौ  
प्रणमामि । वत्स ! आगच्छ आगच्छ, परिव्वजस्व माम् । हा  
शखचूडहतक ! ( दुष्टशखचूड ) कथं त्वं गर्भस्य एव न मृत  
यस्त्वमेव प्रतिक्षणं मृत्युमदृशं दुःखमनुभवसि । हा आर्यपुत्र ।  
( पतिकीलिये संबोधन ) अतिदुष्कृतकारिणी खलु ( निश्चयसे )  
अहं । या ईदृश ( ऐसे ) आर्यपुत्र ( पति ) पश्यंती अपि जीवित  
न परित्यजामि । साधो ! साधु ( अच्छा ) खलु इदं, अनुमोदामहे  
वयं । सर्वथा ( सबतरहसे ) सायधानो भव । शखचूड ! त्वमपि  
इदानीं ( इससमय ) स्वष्टं गच्छ । हा सुत ! हा वत्स ! हा  
गुरुजनवत्सल ! ददस्व प्रतिवचन ( उत्तर ) । हा प्रणयि ( प्रेमी )

जनवक्ष्य (प्रिय) हा सर्वगुणनिधे ! त्वं कुत्र गत । तनय !  
 (पुत्र) त्वमद्य परलोक गतोऽतो धैर्यं निराधार जात, अशरणो  
 (शरणरहित) विनय, क शरण गच्छतु, अमां वोढु (धारण  
 करनेके लिये) कोऽग्य अम\* (समर्थ) इत सत्य सत्य, व्रजतु अ  
 क्षया क (कहां) अद्य क्षपणा (दोन विचारो) जगत् शूय जात ।  
 महाराज ! जीमूतकेतो ! मा एव आचर ।

संस्कृत वनाशो—

पिता ! मुझे आज्ञा दो । भाई ! ऐसा काम न करो । उप  
 देष्टाओ ! अधर्मका उपदेश न दो । भर्तारो ! अपनी अपनी प्रजाका  
 पालन करो । साधुलोगो ! वीतराग होओ । भिक्षुको ! भिक्षा  
 हर्षित अच्छो नहीं है । विद्यार्थियो ! परश्रम करो । लडको !  
 पढो । भाई ! क्यों रोते हो । ज्ञाताओ ! मूर्खों को उपदेश दो ।

नोट—पृष्ठ १८के परिशिष्टमें दिये गये दोष रंकारांत ऐकारांत ओकारांत औकारांत  
 अर्थके रूप उचोचनमें कर्ता (प्रथमा) के समान ही होते हैं ।

### ( १ ) व्यजनात पुलिग

चकारांत—हे जनमुक् ! जल किं न मुचसि—रे कान्त । तू पानी  
 क्यों नहीं बोझता है ।

जकारांत—भो सम्राट् ! प्रजा रक्ष—अये चक्रवर्ती ! प्रजाको रक्षा कर ।

ञकारांत—भो भिक्षक् ! प्रणमामि त्वा—हे देव । मैं तुमको प्रणाम करता हू ।

तकारांत—भो भूभृत् ! नीतिज्ञो भव—हे । राजा ! तू नीतिका ज्ञाता हो ।

मत्भागांत—भो धोमन् ! (२) धर्ममनुतिष्ठ—हे ! मुहिमान ! तू धर्म कर ।

म (व) त् भागांत—भो धनवन् ! दरिद्रान् भर—हे धनाश ! गरीबोंकी  
 रक्षा कर ।

१—व्यजनात शब्दोंके स बोधनके दिवचन बहुवचनके रूप कर्ता (प्रथमा) के समान  
 होते हैं । २—मत् (वत्) भागांतके स बोधनके एक वचनमें अतके अक्षरसे पश्चि  
 अक्षरको बोध नहीं होता ।



- षत् (षट्)—भो गायन् । त्वं किं गदसि—१ मन्त्रे इति दृशा वदन् ।  
 दकारांत—भो सुहृत् (दृ) त्व मां रघु—१ मन्त्रे । तू मी रघु वर ।  
 षन्भागांत—भो (१) राजन् । त्वं किमिदमुद्दिमो भवसि—१ रघु ।  
 तू रीमा को वरिष्ठ होत है ।  
 षन्भागांत—भो शर्मन् । त्वं किं न पठसि—१ रघु वर । तू को नही  
 पढ़ता ।  
 षन्भागांत—भो सपस्विन् । त्वं मत् तप भाघर—भो । तन्मी । तू  
 ने तप कर  
 षन्भागांत—भो (२) चंद्रम । त्वं प्रकाशस्व—१ वद । तू प्रकाश हो ।  
 वसभागांत—भो विद्मन् । त्वां गुह्यं किमादिष्टवान्—१ निगम । इत्यरे  
 तुम्हें का प्रकाश हो ।  
 ईयस भागांत—भो गरीयन् । त्वं किं ताम् जि दसि—१ वरं चाम्भो ।  
 तू उनको को जि दा करण है ।

एव चरी—

भो बुद्धिमान् वानक । भो कपटी सुने । भो धनयत्नी तुल्यक ।  
 भो मायाचारिण माधी । भो गर्वित दात । भो मानमीय  
 भूभूतो । भो विद्मन् राजा । भो प्रकाशक चंद्रमा । १ दुष्ट  
 वनौका (लगनी) भो दयासु स्वामी । भो निर्दयी यज्वन् ।  
 भो शिथिल ममासदो ।

( १ ) क्षोभित शब्द

षाकारांत—१ धात्विके । त्वं किं न पठसि—नको । तू को नही  
 पढ़ती ।

१—सकारांत शब्दोंके स बोधनके एक वचनमें कुछ अन्तर नहीं होता । एव शब्द ही रहते हैं । २—सकारांत शब्दोंके अन्तके अक्षरसे पहिले अक्षरको दोष नहीं होता । और यैव रूप प्रथमाके एक वचनका वा ही होता है । ३—स बोधनके एक वचनमें ही ( प्रथमा ) अन्तके अक्षरोंमें भेद होता है । विवचन बहुवचनमें नहीं । अन्तके एकवचनके ही अक्षरके अन्तमें भेद है ।

इकारांत—हे युद्धे । कथं त्वं समागं न गच्छसि—रो बुद्धि । तू कां अच्छे  
मागमें नहीं जाती ।

ईकारांत—हे (१) कुमारि । किं त्वं तदीं व्रजसि—हे कुमारी । क्यों तू  
भगौका जाती है ।

उकारांत—हे धेनो । त्वं वस्य किं सु घसि—हे गायो । तू बद्धके को क्यों  
छोड़ती है ।

ऊकारांत—हे (२) अशु । त्वं यधू किं तर्जसि—हे साधु । तू बद्धको क्यों  
काटती है ।

ऋकारांत—हे मात । मां रक्ष—हे माता । मेरी रक्षा कर ।

चकारांत—हे जिनवाक् । भूर्खान् किं न उपदिशसि—हे जिनवाणी ।  
तू भूर्खों को क्यों नहीं उपदेश देती ।

दकारांत—हे सपत् (दृ) । त्वं किं सपत्ना—हे सपत् । तू क्यों सपत्न है ।

धकारांत—हे क्षुत् । त्वं मानवान् किं तुदसि—हे भूख । तू मनुष्योंको  
क्या पीड़ा देती है ।

तकारांत—हे योषित् । त्वमिदं किं कृतवती—रो भीरत । तूने यह क्या  
किया ।

धर्भागांत—हे गो । त्वं जान् अयं—हे गायो । तू लोगोंको सतुष्ट कर ।

चर्भागांत—हे पू । त्वमधिकं शोभसे—हे नगरी । तू अच्छी तरह  
शोभती है ।

भकारांत—हे ककुब् (प्) त्वमद्य किं निर्मला—हे दिशा । तू आज  
क्यों निर्मल है ।

शुद्ध करो—

भो गुणवती कन्ये । भो बुद्धिमति सुशीला । हे अश्वे (३) ।

१ २ ३ अश्व (माता) के अश्व को कहनेवाले ही खरवाले अश्व आदिक दीर्घ आचारांत,  
तथा स्त्रीलक्ष्य दीर्घ ईकारांत और ऊकारांत शब्दोंके अतथा खर सौधनके एक  
वचनमें उद्धृष्ट ही है ।

भो तपस्विन्वी योपित् ! भो गर्विता वधू ! हे ह्यण्ये धेनु !  
हे दयावती दुहता ! हे विपद ! हे साध्वि जननी !

तीर्थे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पिपीलिके, अम्ब, चोपधे, तरो, नदी, पटोयस्यो, रिवी, रज्जव.,  
चमु, श्रग्ध्री, ननादः, मातर, कविवाक्, परिपत्, युत्, सरित्  
श्री, (१) पाप, स्वघ, अम्बिके।

द्विती बनाओ—

हे सखि ! आशङ्क मा ( मत ) भजस्य । हे दासि ! कामो  
मानस तुदति । हे ऋगोनयने । त्व किमिदमाचरसि । प्रिये !  
इमां शोभा पश्य । हे सुमुखि ! पुन पुनस्तुवामह यदामि । हे  
योपित् ! त्वमतिकठोरा वर्तसे ।

### नपु सकलिंग

अकारांत—रे पुष्प । त्व कथ सुगध न वितरसि—रे फूल ! तू क्यों  
सुगंध नहीं देता ।  
इकारांत—रे वारि ( र ) त्वं भूमि उच्च—रे जल ! इषिनीको सी च ।  
उकारांत—रे मधु ( धो ) त्व मद्यत् पाप वितरसि—रे शह ! तू क्यों पाप  
देता है ।  
ऋकारांत—हे कर्त् ( त ) त्व साधु काय अनुतिष्ठ—हे कर्ता ! तू क्यों  
काम कर ।

( नोट—शेष स्वर्गगत शब्दोंके रूप कता ( प्रथमा ) के समान ही सब बचनोंमें होते  
हैं । इसलिये यहाँ नहीं लिखे गये हैं । )

तीर्थे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असि, पद्म, कुले, अगुरो, इमु, कर्त्, गुणवत्, वैश्व, ( २ )  
कर्मन्, पथ मन ह्यि, चक्षु, धनु ।

१—भो इी आदि एक स्वर वाले दोष ईकारांत—उकारांत शब्दोंको इत्त्व नहीं होता ।  
२—अकारांत शब्दोंके नपु सकलिंगमें स बोधन एक बचनके रूप ही प्रकारके होते हैं  
एक ही उर्ध्वके अन्तके अकारका लोप होनेसे । लसि—वेश्म आदि । इमरे पु लिंगके  
समान अकारका लोप न होनेसे जैसे वेश्मन्, कामन् आदि ।

ब्रह्म बरो—

भो गधवत् पुष्य । रे नीच चैत । विशान अगुरुः । भो  
सुमधुर मधु । रे अथं चक्षु । रे अकार्यकारि कर्ता । हे सुपय,  
सरसी ।

### साहित्य परिचय

संस्कृत बनाओ—

किसी समय राजगृह नगरमें ( राजगृहे ) एक विद्यालक्ष बौद्ध-  
साधुसभ आया । यह बात महाराज अशिकने भी जानी ।  
श्रेणिका रानीचेलनाके पास गये और साधुओंकी प्रशंसाकी कि—  
“हे प्यारी ! बौद्ध गुरु अतिज्ञानो हैं । उत्कृष्टतपका आचरण  
करते हैं समस्त ससारको देखते हैं । यदि कोइ ( कश्चित् ) उनसे  
कुछ पूछता है तो वे सब ज्ञातव्य बातें कहते हैं । आत्माकी ध्याते  
हैं उसे मोक्षको ले जाते हैं ( नयति ) एव यथार्थपदार्थोंका उप-  
देश देते हैं । उनका शरीर देदीप्यमान है ।” रानी चेलनाने कहा—  
छापानाथ ! यदि वे साधु ऐसे पवित्र और ध्यानी हैं तो मैं भी उनके  
दर्शन करूंगी । महाराज ! आप यह बात सत्य मानिये कि  
यदि वे साधु ऐसे हों सच्चे होंगे तो मैं बौद्ध धर्मको स्वीकार करूंगी  
( स्वीकरिष्यामि ) मे आग्रह नहीं करती कि जैन धर्मको ही धारण  
करू परंतु बिना परीक्षाके मैं इसे नहीं छोड़ूंगी । क्योंकि वे  
मनुष्य मूर्ख हैं जो देयोपादयको नहीं जानते । तत्पश्चात् राजाने  
नौकरोंको आज्ञा दी कि ( यत् ) एक मठप बनाओ । सेवकोंने  
मठप बनाया । बौद्ध साधुओंने वहा ध्यान प्रारंभ किया । रानी  
भी वहा शीघ्र ही आई और बौद्ध गुरुओंसे पूछने लगी । समीप-  
स्थित एक ब्रह्मचारीने कहा कि—हे माता ! समस्त साधु ध्यान  
कर रहे हैं । मोक्ष स्थित हैं देह सजित भी सिद्ध हैं इसलिये ये  
उत्तर नहीं देते हैं । रानी चेलना कुछ न बोली बाहर आकर

भो तपस्विन्वी योषित् । भो गर्विता वधू । हे कृणो धेनु ।  
हे दयावता दुष्टता । हे विपद । हे साध्य जननी ।

नीच निच म्हासि वाचा बनाची—

पिपीत्तिके, चम्ब, घोपधे, तरी, नदी, पटोयस्यो, रिणो, रज्जव  
चसु, श्रद्धो, नाद, मातर, कथिवाक्, परिपत्, युत्, सरित्,  
यो, (१) पाप, स्रघ, चम्बिके ।

विशै बनाची—

हे सखि! आग्रह मा (मत) भजस्य । हे दासि । कामो  
मानस सुदति । हे नृगीयने । त्व किमिदमाचरसि । भ्रियै ।  
इमां गोभा पश्य । हे सुमुणि । पुन पुनस्तु धामह वदामि । हे  
योषित्! त्वमतिकठोरा यर्तसे ।

नपुसकलिंग

अकारांत—रे पुष्य । त्व कथ सुगध न वितरसि—० फल । नृ गो

सुखि नही देता ।

इकारांत—रे वारि (रि) त्वं भूमि उच्च—२ जल । पवित्रीको सोच ।

उकारांत—रे मधु (धो) त्व महत् पाप वितरसि—२ महद । नृ वहा पाप  
देता है ।

ऋकारांत—हे कर्त्त (त) त्वं साधु कार्य अनुतिष्ठ—३ कर्ता । नृ चर्त्त  
काम कर ।

(नोट—श्रेष्ठ अर्जनांत शब्दोंके रूप कर्ता (प्रदमा) के समान ही सब बचनोंमें होते  
हैं । इमलिये यहाँ नही लिखे गये हैं ।)

श्रीशै लिखे शब्दोंसे वाचा बनाची—

असि, पद्म, कुले, अगुरो, हनु, फल्ट, गुणवत्, वैश्व, (२)  
वार्मन, पथ मन इवि, चक्षु, धनु ।

१—श्री ओ आदि एक स्वर वाले दोष ईकारांत—उकारांत शब्दोंकी प्रत्य भदा होता ।

२—उकारांत शब्दोंके नपुसक लिंगमें स वीधन एक बचनके रूप ही प्रकारकी होते हैं  
एक ही उरके अन्तमें उकारका लोप होमेसे । न ही—वैश्व आदि । दूसरे पु लिंगके  
समान उकारका लोप न होनेसे ओ से वैश्वम्, कमन् आदि ।



( बहिरागत्य ) भटपकी आग द्वारा जला दिया तथा दूर छोड़ी हो गई । पश्चात् राजमन्दिरमें चली गई ।

दिदी बलासी—

राज्ञा चेलगा वदतिस्त्र श्रेणिक प्रति । भो नरनाथ । तिष्ठस्व मा, अहमेकां विचित्रामास्यायिका ( कहानो ) गदामि । ता श्रुत्वा मदीयमपराध निर्णय । नाथ ! अत्र भरतदेशस्या कौशाबी नाग्री (२) राजते स्म नगरी काचित् । वसुपानो नृपो रक्षति स्म ताम् । तत्र श्रेष्ठिनो सागरदत्तसुभद्रदत्तनामानौ वैश्यौ परस्परं महतीं मित्रतामुपगतौ । एकदा एकस्थानस्थितौ तौ अन्योन्य—स्त्रे ह्यवर्षिका ( परस्परके प्रेमकी बढ़ानेवाली ) अनेकां वार्तां वदत स्म । स्त्रे ह्यपराकाशा ( प्रेमका हृद् दर्जा ) दर्शयितुकाम ( दिखाने की इच्छा वाला ) सुभद्रदत्त सागरदत्त गदति स्म । 'प्रिय सागर दत्त ! यदि भाग्यवयतो ऽहं पुत्रं लप्स्ये त्वं च पुत्रीं लप्स्यसे तदा स पुत्र ता पुत्रीमेव उद्वेक्षते न अन्यथा, यदि त्वं पुत्रमहं च पुत्रीं तदापि तथा एव भविष्यति, इति । इदं श्रुत्वा सागरदत्तो भणति स्म "भवत्कथनमहमवश्यमेव चरिष्यामि" इति । अथ श्रेष्ठिसागरदत्तभार्या वसुमती दैववशत सर्पाकृतिधारणं भयावहं ( डरावने वाला ) पुत्रमेकं सूतवती ( पैदा करती हुई ) । तस्याम ( उसका नाम ) वसुमित्रो भवतिस्त्र एव सुभद्रदत्तधर्मपत्नी सागर दत्ता चद्रवदना ( १ ) मनोहरागी सुवर्णवर्णा नानागुण—घ्राफरा ( खान ) नागदत्ताभिधा ( २ ) सुतामुत्पादयामास ( उत्पन्न करती हुई ) क्रमशः कुमारी कुमारश्च युवावस्थामधिगतौ । वसुमित्रो नागदत्तासुहृदते स्म । ततस्त्वौ सासारिकसुखमिन्द्रियजन्यमनुभवत स्म । कदाचित् सागरदत्ता सर्वोत्तमभूषणभूषितां चद-

४५८	५६	४५९	५७
तट्टाग ( पु० )	तामाष ।		घ
तंदुन ( पुं० )	चावल ।	पयस्विनी ( स्त्री० )	दूध या पानी
ठप्पा ( स्त्री० )	चाद, ध्याघ ।		वाश्री ।
	द	पर ( त्रि० )	दूगरा, तत्पर ।
दायानस ( पु० )	यनकी चाग ।	परशु ( पु० )	हनुषा ।
दुस्त ( त्रि० )	अतमें दुःख देने	परायण ( त्रि० )	तत्पर ।
	वाला ।	पनायमान ( त्रि० )	भागता
देषेज् ( पुं० )	पुरोहित ।		हुषा ।
दोष् ( पु० )	दुष्टीवाना ।	पानमरा ( त्रि० )	पीनेमें लगा
	घ		हुया ।
धुमर ( त्रि० )	मटोना फौके	प्रचेतम् ( पु० )	वरुण, उदार
	रगका ।		चित्त ।
धृत ( त्रि० )	धारणकिया हुआ ।	प्रशीण ( त्रि० )	चतुर, बुगियार ।
	पकडा गया ।	प्रसवित्री ( स्त्री० )	उत्पन्नकरने
धोत ( त्रि० )	धोया गया, पवित्र ।		वाली ।
	म	प्रसूति ( स्त्री० )	घतान ।
नद ( पुं० )	तामाष ।	प्रशु ( पु० )	तीक्ष्णी ।
नरपुगय ( पुं० )	श्रेष्ठ मनुष्य ।		व
नव ( त्रि० )	मया, नयीम ।	बोडू ( पु० )	ज्ञाननेवाला ।
नवोटा ( स्त्री० )	नई विवाहित ।		भ
निरूपयती ( स्त्री )	देखती हुई ।	भयित्री ( स्त्री० )	होनेवाली ।
निर्वोध ( त्रि० )	भ्रूण ।	भव्य ( पु० )	धर्मात्मा, श्रेष्ठ ।
नीड ( पु० )	घोसला ।	भेक ( पु० )	मिडक ।
नृशंस ( त्रि० )	क्रूर, मनुष्य		म
	घातक ।	मरीचिमातिन् ( पु० )	सूर्य ।



## शब्दकोष ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अफुलीन (त्रि०)	मीचकुलका ।	फ	
अगगारिन् (पु०)	धररहित ।	कर्मकृत् (त्रि०)	काम करमेयासा ।
अनन्यवृत्ति (त्रि०)	जिसका विषय एक स्थानमें लगाही ।	कंसपरिमृञ् (पु०)	कृष्य, कांसिकी साफकरनेयासा, कसेरा ।
अनुज (त्रि०)	छोटा भाइ, पिकारसे पैटा होनेवाला ।	कारु (पु०)	बट्टे ।
अभिभूत (त्रि०)	तिरस्कृत ।	कुटीर (पु०)	भोपडी ।
अपेय (त्रि०)	वीनेके अयोग्य ।	कोट्टगल (पु०)	कीतवाल ।
अयत्नरमणीय (त्रि०)	स्वभावसे मनोहर ।	कथ (पु०)	बैचना, बिक्री ।
अर्चना (स्त्री०)	पूजा, सत्कार ।	खनित (न०)	फावडा, पृथ्वी खोदनेका शस्त्र ।
आगतुक (त्रि०)	आनेयासा अतिथि ।	ग	
	६	गगन (न०)	आकाश ।
इष्टु (पु०)	चद्रमा ।	गरिमन् (पु०)	बडप्पन ।
	७	गीत्रभिद् (पु०)	इद्र ।
		घ	
उड्दिद् (पु०)	पेड, वनस्पति ।	घटिका (स्त्री०)	एक नरइका पत्नी ।
उभ्रनस (त्रि०)	पागल ।	घारु (त्रि०)	सुन्दर, अच्छा ।
उपदेष्टु	उपदेशक ।	ज	
	क	ज	
कृत्रु (त्रि०)	सरल, सीधा ।	ज्योत्स्ना (स्त्री)	चांदनी ।
कलावत् (त्रि०)	इतना ।	त	
कपोत (पु०)	कबूतर, परैया ।	तघ (भवा० घा०)	छोसना ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तडाग ( पु० )	तालाब ।	प	
तडुन ( पु० )	चावल ।	पयस्विनी ( स्त्री० )	दूध या पानी
टण्या ( स्त्री० )	चाह, प्यास ।		वासो ।
	द	पर ( त्रि० )	दूसरा, तत्पर ।
दावानल ( पु० )	वनकी आग ।	परशु ( पु० )	हनुषा ।
दुरत ( त्रि० )	अतमें दुःख देने	परायण ( त्रि० )	तत्पर ।
	वाला ।	पलायमान ( त्रि० )	भागता
देवेज् ( पु० )	पुरोहित ।		हुआ ।
दोघ् ( पु० )	दुहनेवाला ।	पानमत्त ( त्रि० )	पीनेमें लगा
	घ		हुवा ।
धूसर ( त्रि० )	मटीला फीके	प्रचेतस् ( पु० )	वरुण, उदार
	रगया ।		चित्त ।
धृत ( त्रि० )	धारणकिया हुआ ।	प्रवीण ( त्रि० )	चतुर, हुशियार ।
	पकडा गया ।	प्रसवित्री ( स्त्री० )	उत्पन्नकरने-
धीत ( त्रि० )	धीया गया, पवित्र ।		वाली ।
	न	प्रसृति ( स्त्री० )	सतान ।
नद ( पु० )	तालाब ।	प्रांशु ( पु० )	तेजस्वी ।
नरपुगव ( पु० )	श्रेष्ठ मनुष्य ।		व
नय ( त्रि० )	नया, नवीन ।	बोहू ( पु० )	जाननेवाला ।
नघोटा ( स्त्री० )	नई विवाहित ।		भ
निरूपयती ( स्त्री )	देखती हुई ।	मधिवी ( स्त्री० )	होनेवाली ।
निर्वोध ( त्रि० )	भूख ।	भव्य ( पु० )	धर्मात्मा, श्रेष्ठ ।
नीड ( पु० )	घोसला ।	भेक ( पु० )	मैंडक ।
नृथस ( त्रि० )	झूर, मनुष्य		म
	घातक ।	मरीचिमालिन् ( पु० )	सूर्य ।

मलीमस ( त्रि० )	मैला ।	श
मागध ( त्रि० )	मगधदेशका ।	शयारु ( त्रि० ) सोनेवाला ।
मानस ( पु० )	एक तालाघ ।	शशिन् ( पु० ) चाद, चद्रमा ।
मृगराज ( पु० )	रुद्र ।	शाखलि ( पु० ) सेमरका पेड ।
मृदु ( त्रि० )	कोमल ।	शुभ्र ( त्रि० ) सफेद, श्वेत ।
मेध्य ( त्रि० )	पवित्र ।	श्यामल ( त्रि० ) हरो, नीली ।
मैथिल ( त्रि० )	मिथलादेशका ।	श्यामायमान ( त्रि० ) नीला होता हुआ ।
	य	
यशस्कर ( त्रि० )	कीर्तिकी करने वाला ।	स
युगल ( न० )	जोडा दो ।	सम्पति ( पु० ) महावीरस्वामी, सम्पति ( त्रि० ) श्रेष्ठबुद्धिवाला ।
	र	सलिल ( न० ) जल ।
रजत ( न० )	चादो ।	सनिभ ( त्रि० ) सुख्य, बराबर ।
रज्जु ( पु० )	रस्सी ।	सभव ( त्रि० ) उत्पन्न हुआ, उत्पत्ति ।
रवि ( पु० )	सुरज ।	सतीक्ष्ण ( त्रि० ) बहुत तीखा, तेज ।
राजमार्ग ( पु० )	सडक ।	सुपकार ( पु० ) रसोदया ।
रुद्र ( त्रि० )	रुका हुआ ।	स्यविष्ठ ( त्रि० ) अतिस्थूल, मोटा ।
	य	
वपुष्पत ( त्रि० )	प्राणी, मोटे शरीर वाला ।	स्यासु ( त्रि० ) अचल, एक
वसन ( न० )	कपडा ।	
वाप्य ( न० )	पास ।	
विधि ( पु० )	भाग्य, ब्रह्मा ।	स्मृति
विपस ( त्रि० )	दु खो ।	सैर ।
विपुन ( त्रि० )	बहुत	हर्ष
विभावह ( पु० )	अग्नि	





